राम काव्य पीयूष

श्री राम चरित भवन

Shri Ram Charit Bhavan

राम काव्य पीयूष

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।

सम्पादक मण्डल

अलका प्रमोद (भारत)
आरती गोयल (यू.ए.ई.)
विनीता मिश्रा (भारत)
शार्दुला नोगजा (सिंगापुर)
शैल अग्रवाल (यू.के.)
शैलजा सक्सेना (कनाडा)
हरिहर झा (ऑस्ट्रेलिया)

प्रबंध सम्पादक

शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत)

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता (यू.एस.ए.)

प्रकाशक

श्री राम चरित भवन

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher
Shri Ram Charit Bhavan
12436 FM 1960 W., Pmb #140
Houston, USA 77065
info@ramacharit.org

प्रथम संस्करण 2020

First Edition 2020

ISBN: 978-1-7362088-0-9

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल की विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

प्रकाशन सहयोगी

रजत सहयोगी

आरती ‘लोकेश’ गोयल

प्रियंका पारो मोहन

राम-सरस्वती मल्लिक

कांस्य सहयोगी

अनुपमा गुप्ता

आदित्य शुक्ल

नीलू गुप्ता

वीणा अग्रवाल

सुप्रभा गुप्ता

॥ जय सिया राम ॥

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।। (मानस 1.140. C5)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकांड के आरंभ में ही हमें बताया कि परमात्मा अनंत हैं, उनकी कथाएँ भी अनंत हैं; संत जन उन कथाओं को विविध प्रकार से कहते हैं, सुनते हैं। लगभग 500 वर्ष पूर्व कही गई यह बात आज भी उतनी ही सार्थक, उचित और प्रासंगिक है, जितनी वह तब थी। भगवान राम की कथा विविध प्रकार से हजारों वर्षों से कही जा रही है। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो रामायण के नाम से हजारों सालों बाद भी बड़े आदर से पढ़ी जाती है। चूँकि रामायण विश्व की प्रथम काव्य रचना थी, इसके रचयिता वाल्मीकि ऋषि विश्व के आदिकवि बने और रामायण आदिकाव्य।

रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में भगवान राम की कथा का वर्णन किया है। जनभाषा अवधी में लिखी गोस्वामी तुलसीदास कृत ‘श्री रामचरितमानस’ पहले भारत में, फिर समस्त विश्व में अत्यधिक प्रचलित हुई। आज भी विश्व के कोने-कोने में श्री रामचरितमानस का अध्ययन व पाठ होता है।

महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास व अन्य सैंकड़ों संतो से प्रेरित होकर भगवान राम की कथा को जानने, समझने और उसका प्रचार-प्रसार के लिए कुछ वर्षो पहले ह्यूस्टन, अमेरिका में ‘श्री राम चरित भवन’ संस्था ने जन्म लिया। संस्था की विविध गतिविधियों में एक थी ‘श्री राम चरित मंथन’, जिसने शनैः शनैः वार्षिक गोष्ठी का रूप लिया। 2020 में कोरोना के कारण इस गोष्ठी ने ऑनलाइन स्वरूप धारण किया। इस ऑनलाइन गोष्ठी के अंतर्गत पिछले 6 महीनों में दो बार राम-काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ जिनमें कई देशों से 40 से अधिक कवियों ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया। इन्हीं गोष्ठियों की सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि भगवान राम और रामायण से संबधित स्वरचित उत्कृष्ट कविताओं की एक पुस्तक का गठन हो। फलस्वरूप, राम काव्य पीयूष की रचना हुई, जो आप के करकमलों में है।

राम काव्य पीयूष में 151 कविताएँ हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल के सदस्य व कई अन्य विद्वान साथियों ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। ये कविताएँ 13 देशों (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, केन्या, भारत, मारीशस, नीदरलैंड, साऊदी अरेबिया, सिंगापुर, ट्रीनिदाद, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., यूक्रेन और यू.एस.ए.) में बसे 123 कवियों द्वारा लिखी गई हैं। इन कविताओं में से 54 भारत से बाहर विदेशों में बसे रामायण प्रेमियों द्वारा लिखी गईं हैं, जो संकलन का 35% है। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि राम और रामायण मात्र भारत के नहीं

अपितु विश्वव्यापी हैं। इस काव्य संग्रह में 2 कविताएँ अँग्रेजी में और 1 बाँगला भाषा में भी है। यह विशेष हर्ष की बात है जहाँ आज विश्व में धर्म को लेकर अनर्थक वाद-विवाद हो रहा है, वहाँ अन्य धर्म के कवियों ने भी इस संग्रह में अपनी-अपनी कविताएँ भेजीं। हम उनके विशेष आभारी हैं। निस्संदेह, रामायण किसी धर्म विशेष का नहीं अपितु सर्वधर्म ग्रंथ है।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'राम काव्य पीयूष' का गठन संभव नहीं था, इस प्रक्रिया में उन सबका मैं बड़ा ऋणी हुआ। उन सब कवियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनकी रचनाएँ हम शामिल करने में असमर्थ रहे। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ जिन के कारण यह संकलन संभव हुआ। आदरणीय अलका प्रमोद जी (भारत), आरती गोयल जी (यू.ए.ई.), विनीता मिश्रा जी (भारत), शार्दुला नोगजा जी (सिंगापुर), शिवप्रकाश अग्रवाल जी (भारत), शैल अग्रवाल जी (यू.के.), शैलजा सक्सेना जी (कनाडा) और हरिहर झा जी (ऑस्ट्रेलिया), आप सब के घोर व अथक परिश्रम के परिणाम से ही यह राम काव्य पीयूष संभव हुआ है। आप के योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। भगवान श्री रामचंद्र जी आप सब पर सदैव अनुकंपा बनाएँ रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें, तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। 'राम काव्य पीयूष' के विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। जय सिया राम।

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
प्रधान सम्पादक
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
विजयदशमी 2020

अनुक्रमणिका

कवियों के राम

कवियों के प्रिय राम!	आरती ‘लोकेश’	2
लौट कहाँ पाये हैं राम!	शैलजा सक्सेना	4
मेरे आराध्य: श्री राम	शील रानी निगम	6
रामचंद्र काव्य	दीपा रस्तोगी ‘दीप’	8
उसमें तेरा राम नहीं है	राकेश खंडेलवाल	10
राम और रामायण	सुधा चौहान 'राज'	11
राम – कौन और कहाँ	सुरेश राय	12

राम स्तुति

हे रघुनंदन!	विनीता मिश्रा	13
करुणावतार श्री राम	अमित अवस्थी	14
हर बार अवर्णित	राकेश खंडेलवाल	15
मेरे मन श्री राम बसे हैं	संतोष कुमार सिंह	16
राम तेरी महिमा	सी. कामेश्वरी	17
राम स्तुति	नरेश शांडिल्य	18
तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है	श्याम सुन्दर पंचोली	19
शाश्वत हैं श्री राम!	कौशल किशोर श्रीवास्तव	20
जय हो राम लला की	ताराचन्द 'नादान'	21
श्री राम की वंदना	मीरा सिंह	22
राम रस	वीणा अग्रवाल	23
सतत करूँ मैं प्रणाम	सरस्वती मल्लिक	24
मेरे मन बसे राम	शिवप्रभाकर ओझा	25
रोम रोम में रमते राम!	रुचि श्रीवास्तव	26
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ	ब्रजेश कुमार सिंह ‘विशाल’	27
नित स्मृति रहे श्री राम की	गिरीश्वर मिश्र	30
विनती श्री राम जी से	सुप्रभा गुप्ता	32

राम आह्वान

कोई वचन निभाना!	हरिहर झा	33
श्री राम पधारो	प्रतिभा सक्सेना	34
आओ मेरे राम यहाँ	इंदल सिंह भदौरिया	35
काश!	अलका प्रमोद	36
नियति	मृदुला सिन्हा	37
राम तुम्हें फिर आना होगा	नूपुर अशोक	38
रघुबर कहिया अईबै	कंचन पाठक	40
राम, श्री राम!	सरोजिनी अग्रवाल	42
मैं प्रीत सजाऊँगी आना	नीलम तोलानी	43
छोड़ सिंहासन वन आओ	शीला पांडे	44

राम नाम

लेकर राम नाम की नाव	नरेंद्र शर्मा ‘कुसुम’	45
राम की महिमा	रेखा राजवंशी	46
राम नाम है सबसे प्यारा	सुशील कुमार ‘लखनवी’	47
राम नाम मिल गया	करुणा पांडे	48
पथिक के राम	अलका धनपत	50
राम नाम के दोहे	हर्षवर्धन आर्य	52
राम नाम लेकर हम भी	सुभाष शर्मा	53

राम सीख

जन्मे थे क्यों श्री राम?	ओमप्रकाश गुप्ता	54
सोने का मृग	अनिल शर्मा 'जोशी'	56
उपसंहार	दिव्या माथुर	58
रावण मन में हँसता है	सोमनाथ डनायक	59
राम-व्याकरण	यूरी बोत्वींकिन	60
राम और हम	मीरा रामनिवास वर्मा	61
श्री राम को राम रहने दो	राकेश कुमार चौबे	62
विजय गाथा	शिखा सक्सेना	63
रामायण से सीख, हल्की फुल्की	हरीबाबू बिंदल	64

करुण राम बाण	सौरभ	65
सीख श्री राम की	विश्वास दुबे	66

राम चरित

मर्यादा के पाठ	अंजू अग्रवाल 'लखनवी'	67
कहाँ ढूंढें-कहाँ ढूंढें	मधु चतुर्वेदी	68
दशरथ पुत्र के प्रति	रेखा मैत्र	70
वो राम राम कहलाते हैं	आराधना झा श्रीवास्तव	71
लौट आये पुरुषोत्तम राम	रेणु चन्द्रा माथुर	72
अकेला राम	प्रतिभा पुरोहित	73
राम तुम्हें हम नर मानेंगे	मधु चतुर्वेदी	74
राम कथा	सुशील शर्मा	76
रामकथा	आशा अमित नशीने	78
राम का अवतार न होता	विजयानन्द (बिजेन्द्र प्रताप तिवारी)	80
राम की पीड़ा	वेद व्यथित	82
अवध में जन्मे रामलला	नीलू गुप्ता	83
अमर कहानी	चोवा राम वर्मा 'बादल'	84
श्री राम जीवन के सुर संधान	सुजाता प्रसाद	85
रामचंद्र जानते हैं	अभिनव शुक्ल	86
राम चरित्र	सन्तोष भाऊवाला	87
दयालु राम	कमल किशोर सेठ	88
सिया राम मय	शैल अग्रवाल	89
जीवन का मर्म	सरोजिनी नौटियाल	92
लोगों के कष्ट मिटाने को	आलोक मिश्रा	94
परिधि	सरोजिनी नौटियाल	96
राम	वंदना मुकेश	97
मर्यादा पुरुषोत्तम	मनजीत कौर 'मीत'	98
तो तुम राम बन जाओगे	संगीता अग्रवाल	100
राम तुम जलधार	शार्दुला नोगजा	102
इतना ही सरल था क्या ?	मीनाक्षी मैनन	103
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर	शुचि 'भवि'	104

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम	रवीन्द्र कुमार दीक्षित	105
ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!	अशोक अंजुम	106
राम एक चरित अनेक	मंगलेश मुजमेर 'मंगल'	107
राम कथा - श्री कर्म कथा	रविन्द्र कुमार धींग	108
रावन रथी विरथ रघुवीरा	बशीर अहमद मयूख	110
संसृति सकल श्री राम की!	अमृत खरे	112
फर्क क्या है?	हरिहर झा	113
माँ सीता		
माँ सीता की आशंका	मधु शर्मा	114
सोने का हिरन	प्रतिभा सक्सेना	116
अशोक का उद्धार	सन्ध्या नायर	117
रामराज्य का आधार - सीता	सुषमा नैय्यर	118
सिया राम दर्शन	सरोज सिंह 'सूरज'	119
मातु जानकी	शैल अग्रवाल	120
सीता की अपार शक्ति	निधि जैन	122
अंतिम पाती	अलका प्रमोद	124
एक तिनके का सम्बल	सौरभ	126
हनुमान बली		
शोक में डूबा अशोक	हरिहर झा	127
लाल देह लाल रंग, रंग लियो बजरंग	आराधना झा श्रीवास्तव	128
भरते हुए उड़ान	गजेन्द्र प्रसाद पण्ड्या	130
वीर हनुमान	सरस्वती मल्लिक	131
पवनसुत मेरे तुम आधार	चित्रा गुप्ता	132
मातृ-तनय सम्बन्ध	रुचि श्रीवास्तव	133
सब भक्तन की नैया पार	प्रियंका पारो मोहन	134
राम परिवार		
मांडवी की व्यथा	रेखा राजवंशी	135
राम अनुज- भरत	अलका प्रमोद	136
कौन हो तुम माण्डवी	आरती 'लोकेश'	137

राम-भरत सा भाई	आरती 'लोकेश'	138
ন্যায় -অবতার শ্রীরাম	কাজরী গুহ	139
वीरवर लक्ष्मण	अमिता दुबे	141

कैकेयी

कैकई	सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'	142
कैकेयी माँ	आशा मोर	144
मंथरा की पुकार	मनीषा कंठालिया	146
माता-सुत का स्नेह	शशि जैन	147
कैकेयी चरित	शिखा सक्सेना	148

उर्मिला

अभिलाषा	रश्मिशील	149
तेरी याद आती उर्मिले!	अनिता सिंह	150
विरह उर्मियाँ	शशि पाधा	151
उर्मिला उच्छवास	सुषमा 'सौम्या'	153
उर्मिला की व्यथा	आशा बर्मन	154

राम भक्त

मैं उपासिका	विनीता मिश्रा	155
अहिल्या	स्वरांगी साने	156
राम - शबरी	अभिनव शुक्ल	157
भेदिया और विभीषण	मोती प्रसाद साहू	158
शबरी के राम	राजेन्द्र सूरज	159
Last Heartbeat	Anviksha Srivastava	160
शबरी के राम	सुरेश शर्मा "कांत"	162
शबरी	सरोज अग्रवाल	164
सुमिरन तेरा मेरा दाम	विनीता मिश्रा	165

राम मंदिर

रामलला विराजमान	अमित अवस्थी	166
श्री राम! शुभागमन!!	प्रभुदयाल मिश्र	167
मंदिर भव्य बनेगा	नरेश शांडिल्य	168
राम जन्म भूमि पर प्रश्नचिन्ह क्यों ?	जूही वैष्णव	169
अभिनन्दन	शकुन्तला बहादुर	172
राम बसेंगे	मृणाल शर्मा	173
आ गए हैं राम वापस	राम नरेश 'उज्ज्वल'	174
मेरे राम	विश्वास दुबे	175
पावन राम मंदिर	गौरीशंकर वैश्य विनम्र	176
राम की जन्मभूमि	अनुपमा गुप्ता	178
राम मंदिर	कृष्णा जैमिनी	179

राम राज्य

श्री राम	उषा अवस्थी	180
राम हमारा संविधान हैं	लक्ष्मी नारायण गुप्त	181
राम राज्य की कामना है	नीलम त्रिवेदी	182
फिर आज तुम्हारा अभिनंदन	सरोज सिंह 'सूरज'	183
राम तो राम ही है	मो. अम्जद अली	184

मानस महिमा

मानस महिमा	सुशील शर्मा	185
रामचरित मानस	चित्र भूषण श्रीवास्तव ‘विदग्ध‘	186
युग का विराम	भद्रेश झा ‘भद्र’	187
तुलसी तुमको नमन	महेश चंद्र द्विवेदी	188
मानस सम जीवन	करुणा पांडे	190
तुलसी महिमा	श्याम सुन्दर पंचोली	192
My Search of Divinity	Rajesh Kumar Mishra	193
तुलसी मानस महिमा	ओमप्रकाश गुप्ता	194

कवि सूची 195

जदपि कबित रस एकउ नाहीं।
राम प्रताप प्रगट एहि माहीं।।
(मानस 1.10.C7)

कवि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ।
मति अनुरूप राम गुन गावउँ।।
(मानस 1.12.C9)

एही महँ रघुपति नाम उदारा।
अति पावन पुरान श्रुति सारा।।
(मानस 1.10.C1)

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।।
(साकेत - मैथिलीशरण गुप्त)

'ओम' चरणों में पड़ा, प्रभु भक्ति मुझको दीजिए।
तुलसी-पथ पर चल पड़ूँ, कृपा मुझ पर कीजिए।।
(राम काव्य पीयूष - पृष्ठ 194)

कवियों के प्रिय राम!

आरती 'लोकेश'

दुबई, यू.ए.ई.

इतिहास वर्णित हिंदी साहित्य,
है तृप्ति देता रुचिकर लालित्य।
सुभग उसमें प्रभु राम के दर्शन,
दमकता नभ में एक आदित्य।

बाल्मीकि कृत 'रामायण' के,
कोष से सिंचित धारा हैं राम।
हर भाषा में पुष्प विकसित कर,
हिंदी वन-थल में राम का धाम।

संस्कृत प्राकृत, पालि, अपभ्रंश,
के उर में बसा सदैव रघुवंश।
तुलसी पूर्व रचते विष्णुदास,
'रामायणकथा' में राम का अंश।

'पृथ्वीराज रासो' में चंदबरदाई,
उल्लेख करें दशावतार नाम।
मंगलाचरण के अड़तीस छंद,
कथा में षष्ठम् अवतरित राम।

चौदहवीं शती स्वामी रामानंद,
रचे हिंदी-संस्कृत में सत्रह ग्रंथ।
राम भक्ति शाखा के संस्थापक,
राम नाम स्वर गूँजे काल अनंत।

शीर्ष रामभक्त कवि तुलसीदास,
'रामचरितमानस' रची अविराम।
इकत्तीस माह और छब्बीस दिन,
प्रतिष्ठित जन-जन हिये प्रभु श्री राम।

मुनिलाल लिखित है 'रामप्रकाश',
'रामचंद्रिका' रचित केशवदास।
राम की गंगा से पावन सुरभित,
कवि सेनापति और नाभादास।

'रामायण महानाटक' में प्राणचंद्र,
नाट्य में लाए महानायक राम।
जहँ जहँ हनुमत वहाँ रामकथा,
'हनुमन्नाटक'रचे कवि हृदयराम।

लालदास कृत 'अवधविलास',
'रामप्रताप' के कवि गोपालदास।
हिंदी कवि देव की 'राम रसायन',
'रामविनोद' रचित श्री चंद्रदास।

राम का स्रोता जब से फूटा,
अविरल बहता है अभिराम।
हिंदी समृद्ध भक्त कविगण से,
घर-घर बसता राम का ग्राम।

विश्वनाथ की ‘आनंद रघुनंदन’,
हिंदी कवि करते राम का वंदन।
‘योगवशिष्ठ’, ‘पद्मपुराण’, ‘रामचरित’,
में रामकथा से मस्तक चंदन।

‘रामाश्वमेघ’ या ‘रघुवंश दीपक’
‘राम मडैया’, ‘कौशल किशोर’।
‘रामावतार’ व ‘राम चंद्रोदय’,
प्रबंध-मुक्तक भी करते विभोर।

आधुनिक काल भिन्न मान-रूप,
राम साहित्य बहुविध आयाम।
उपेक्षित पात्र दिखे हिंदी के पद्य,
नव उन्नायक व नव अनुगाम।

कवि अयोध्यासिंह के दृढ़ हाथ,
‘वैदेही वनवास’में सिय का साथ।
मैथिली की उर्मिला बसी ‘साकेत’,
‘कैकेयी’ रचते हैं केदारनाथ।

युग बदला, ओमप्रकाश सारथी,
राममंथन-राम जिज्ञासा निष्काम।
अधुनातन ग्रंथ दशमी विमोचन,
‘रामकाव्य पीयूष’ में सबके राम।

सदियों से काव्य रचा जा रहा,
नाना विषय विविध पथगाम।
हिंदी कर्म शोध स्वत: सत्यापित,
हिंदी कवियों के सदा प्रिय राम।

लौट कहाँ पाये हैं राम!

शैलजा सक्सेना
ओकविल, कनाडा

दीपावली के उजले प्रकाश में
देख रहे हैं राम
अपनी प्यारी अयोध्या को,
जन्मदात्री अयोध्या, बचपन के खेलों सी चपल अयोध्या!
सुदृढ़ होती बाजुओं के बीच सुरक्षित अनुभव करती अयोध्या!
और सीता के साथ प्रणय केलि की सी मीठी अयोध्या!

लौटे हैं चौदह वर्षों के बाद
पर लौटना ठीक वहाँ कहाँ होता है
जिसे छोड़ कर जाता है व्यक्ति!
समय की कूची
यथार्थ के नये चित्र बनाती है
और स्मृति नये-पुराने के बीच अटक-अटक जाती है।
दोनों के अंतराल में बसता है
घटनाओं का अँधेरा।

राम यथार्थ देख रहे हैं
प्रौढ़ सी शांति है भाइयों के चेहरों पर
वैधव्य से झुक सी आईं हैं वृद्धा माँएँ
भय और आदर के बीच जयजयकार करती
एक पूरी नयी पीढ़ी खड़ी है चौदह साल के बाद!

राम लौट कहाँ पाये हैं
उस जानी पहचानी अयोध्या में?
यात्रा चाहे भीतर की हो
या बाहर की,
बहुत कुछ बदल देती है

अपने जाने और लौट कर आने के बीच,
यथार्थ और स्मृति के बीच,
एक नयी-पुरानी गंध बसी रहती है
जिसमें झूलता रहता है आदमी कुछ देर तक!

राम देख रहे हैं,
प्रजा की आँखें
तराजू के पलड़े बनी
तौल रही हैं उन्हें!
इस व्यस्क, रावण विजेता पुरुष में
अपने सुकुमार राम को
पहचानने की चेष्टा है उस दृष्टि में!

सोचते हैं, इस उत्साह सागर में
समय ने जो डाले हैं भँवर
वो करने ही होंगे पार
फिर एक बार!
फिर एक बार
पादुकाओं से नहीं
मानवीयता से राज्य चलाना होगा!
पुराने संबंधों के नये आयाम खोजने होंगे
बनाने होंगे राजमहल से
साधारण घर तक जाते सुन्दर रास्ते,
भय और आदर से भरे मनों की देहरी पर
कर्म और विश्वास के नये दीपक जलाने होंगे!

तब लौट पाऊँगा मैं
अपने मन में बसी अयोध्या में।
सबके मन में बसी अयोध्या में॥

मेरे आराध्य: श्री राम

शील रानी निगम
मुम्बई, भारत

हे राम! तुम कौन हो,
वाल्मीकि के,
कबीर के,
तुलसी के,
या फिर तुलसी साहिब के
ये नाम केवल प्रतीक हैं
उन सब के जो तुम में अपने
आराध्य देव को खोजते हैं?

हाँ!
तुम आराध्य हो,
मर्यादापुरुषोत्तम कहे जाते हो,
विष्णु का अवतार बन कर
शबरी के बेर खाये,
अहिल्या का उद्धार किया
और भी बहुत कुछ किया, कि
जन-सामान्य तुम्हें पूजने लगा,
तुम जन-जन के 'राम' बन गये।

क्रौंच पक्षी के दर्द से आहत हो
वाल्मीकि आदि कवि बने,
'मरा-मरा' जप कर राममय हो कर
तुम पर रामायण लिख डाली,
पत्नी के प्रेम से वंचित होकर तुलसी ने भी
रामचरितमानस लिख डाली,
विश्व के कई देशों में, कई भाषाओं में
तुम्हारे बारे में, तुम्हारे होने के साक्षात्
प्रमाण मिलते हैं,
पर थे तो तुम राजा-राम ही, हे दशरथ-पुत्र!

इस धरती पर संसार ने तुम्हारे
'साकार ब्रह्म' का जो स्वरूप देखा,
वो कबीर ने नहीं देखा,
कबीर ने तुम्हें 'आदिराम' कहा
(राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।)
उनके राम निगुण हैं।
(निरगुण राम निरगुण राम जपहु रे भाई। अवगति की गति लखी न जाई।।)

कबीर के राम हैं,
तुलसी साहेब की 'घट रामायण' के राम जैसे,
जिनको तुलसी ने ही लिखा पर 'मानस' के रूप में नहीं,
'रामचरित' लिख कर तुलसी जन्मे फिर एक बार...
परम् तत्व ज्ञान के प्रति,
नई समझ के साथ जीवन जीने,
उपासना व आध्यात्मिक साधना मार्ग के लिये
संकल्पबद्ध हो कर मार्गदर्शन करने,
तुम्हारा सच्चा स्वरूप उजागर करने,
विश्वास, आत्मबोध और प्रपंचों से
मुक्त होने की समझ देने।

'घट रामायण' और 'राम चरित मानस' एक ही संत की काव्यात्मक अनुभूति बनी।
(संवत् सोला सै इकतीसा। रामचरित कीन्ह पद ईसा।।
ईस कर्म औतारी भावा। कर्मभाव सब जगहिं सुनावा।।
जग में कगरा जाना भाई। रावन रामचरित्र बनाई।।
पंडित भेष जगत् सब मझारी। रामायन सुनि भये सुखारी।।
अंधा अंधे विधि समझावा। घट रामायण गुप्त करावा।।)

तुम्हारा यह सच्चा रूप इतना गहन है कि
भक्तगण देख ही नहीं पाते,
जो देख पाते हैं,
वे उसी में रम जाते हैं।

तुलसी साहेब, कबीर-तुलसी के संवत् एक तो नहीं थे।
पर 'राम' के प्रति समभाव रखते थे।
काश! हम सब उस 'समभाव' को समझ पाते
तो अपने मन में ही 'राम' को पा जाते।।

रामचंद्र काव्य

दीपा रस्तोगी ‘दीप’
अशोकनगर, भारत

श्री राम शरणम! श्री राम शरणम!
पाप बढे पृथ्वी घबरायी,
दीन-हीन हो टेर लगायी,
दयानिधि मोरि रक्षा किजै!
कृपासिन्धु ने धीर बंधाई!

कश्यप ऋषि दशरथ बन आये,
पुत्र रूप मे हरि को पाये!
चरु प्रसाद खा प्रभु उपजाए,
प्रभु देखन नृप हृदय हर्षाए!

सकल सुमंगल बाजने बाजे,
पुष्प वर्षा करें देवगण साजे!
हुए अवतरित प्रभु सिसु रूपा,
ब्रह्मानंद मगन भये सबहि अनूपा!

अनुपम छटा मुख चंद्र चकोरा,
नयन कमल दुइ हरहु मन मोरा!
बाल विशाल श्रवण मनमोहित,
अरुण अधर नासा तिलक सोहित!

कोमल बदन अरु कुंचित केशा,
पीत झँगुलि शोभित त्रय रेखा!
मातु दुलारे कहे प्रिय ललना,
कर सिंगार पौढाए पलना!

बाल सुलभ लीला प्रभु कीन्हा,
एहि बिधि सबहि बहुत सुख दीन्हा!
ठुमुक-ठुमुक चलहि सुरभूपा,
किलकि-किलकि भाजि अनूपा!

लोटत-पोटत धूसर धूरि तनु पंक,
दौड़त बैठत दशरथ के अंक!
भोग लगावै प्रसाद पावै जगदीसा,
सबहि नचावै मन भरमावै हरी ईसा!

बन्दौ मुनि पद पदुम परागा,
अनुज संग विशेष अनुरागा!
असुर निकन्दन, हे दुख भन्जन, बाल लीला अति मनोहारी!
कौसल्यानन्दन, भक्त हृदय चन्दन, प्रभु स्मरण अति सुखकारी!

शरणागत प्रातिपालक राम, मेरी विनय सुनो सुखधाम!
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्व वन्द्य अन्वद्य्य अमित मति!
राम लला अब किरपा कीजै,
लोकपाल प्रभु शरण में लीजै!
राम नाम मुद मंगलकारी,
रामचन्द्र की मैं बालिहारी!

उसमें तेरा राम नहीं है

राकेश खंडेलवाल
वाशिंगटन डी.सी., यू.एस.ए.

अरे उपासक रोली चंदन लेकर जिसको सजा रहा है,
प्रतिमा एक सुशिल्पित है पर उसमें तेरे राम नहीं हैं!

राम एक विस्तार परे जो किसी कल्पना की सीमा के,
राम एक दर्शन है जिससे जन्म लिया है संस्कृतियों ने।
राम एक अध्याय अनवरत, सिमट नहीं पाया ग्रंथों में,
वर्णित हो न सका कितने ही यत्न किए युग के कवियों ने!

वाल्मीकि से ले तुलसी तक और गुप्त ने शब्द सँवारे,
लेकिन शब्दों की सीमा में बँधने वाले राम नहीं हैं!

राम एक अध्यात्म समूचा आदि रहित है, अंतरहित है,
पुष्प वाटिका के प्रांगण में, रूप प्रेम में डूबा लेखन।
राम गूढ़ता है अवगुंठित, राम एक अनुभूति सहज सी,
राम भेजता वन महिषी को, मौन हृदय का अंतर्वेदन!

तुझ में राम, राम में तू है, उसका इंगित तेरा उपक्रम,
कोई क्रिया नहीं उत्प्रेरक जिसके होते राम नहीं हैं!

जीवन की पहली धड़कन से, साँसों की गति के अंतिम पल,
समय सिंधु की लहर-लहर पर अंकित है बस धाम एक ही।
हर बोली में, हर भाषा में जन जन के मन का सम्बोधन,
कंठ स्वरों से मुखरित होता आया है बस राम एक ही।

करे प्रतिष्ठित मर्यादाएँ, कर्मवीर जो वचनबद्ध हो,
हर इक युग में प्रतिमानों से सज्जित होते, राम वही हैं!

राम और रामायण

सुधा चौहान 'राज'
इंदौर, भारत

रामायण भारत का ही नहीं,
विश्व का महाकाव्य है।
रचेता त्रेता के वाल्मीकि,
कलयुग के तुलसीदास हैं।।

रामायण में छिपा खजाना,
नीति और संस्कृतियों का।
बौद्धिक और अध्यात्मिक,
सभ्यता के विकास का।।

रामचरित्र संस्कार संस्कृति,
मर्यादा का बोध कराता है।
ज्ञान विज्ञान विश्लेषण कर,
मानवता का पाठ पढ़ाता है।।

छोटों से प्रेम बड़ों का आदर,
त्याग का मूल सिखाती है।
राजा का दृष्टिकोण कैसा हो,
ये रामायण हमें बताती है।।

थी रामराज में वर्ण समानता,
सोलह संस्कारों का मान था।
प्रेम त्याग बलिदान सहित,
वहां नारियों का सम्मान था।।

होते पंचयज्ञ अतिथि यज्ञ,
पितृयज्ञ और वेदज्ञान था।
उत्कृष्ट वास्तु विज्ञान सहित,
पर्यावरण पर भी ध्यान था।।

श्री राम चरित्र में दया ममता,
और करुणा का समावेश था।
गुरु माता पिता पितर सहित,
प्रजा पर पुत्रवत स्नेह था।।

है रामायण के सारे पात्रों में,
लौकिक स्वरूप की संरचना।
भाई भरत का खड़ाऊ रखकर,
आदर्श उदाहरण राज चलाना।।

मारकर बुराई के प्रतीक रावण को,
संरचना कर मानवीय मूल्यों की।
की शाश्वत मूल्यों की स्थापना,
यही है राम "राज" की कल्पना।।

राम - कौन और कहाँ

सुरेश राय
बैटनरूज़, यू.एस.ए.

कौन, बता तू राम।
भक्त कबीरा नानक गावें, जिनकी है निरगुन पहचान।
साधारण बन, वन-वन घुम्यो, तुलसी का सरगुन भगवान।।
आदि-कवि की काव्य कल्पना, अथवा दशरथ की तू जान।
अ-वैरी अंगद छुपि हंत्यो, बनकर एक सहज इन्सान।।
नाम-रूप के प्रणव ब्रह्म, कह गूढ़ भेद, समझा यह राम।

कबन्ध-तारी राम कहाँ?
असुर-नीति, बन कंस-दसानन, फिरते हैं इन्सान यहाँ।
अट्ठहास सुन दु:शासन का, नित कृष्णा की चीर हराँ।।
भौतिकता की पराकाष्ठा, तार-तार रिश्तों का जहाँ।
धरती धरम पड़े खतरे में, किस पल-गह्वर तू, छिपा कहाँ?
परशुराम बन, चक्र चला, कर शब्द-बेध, अब उतर यहाँ।

हे रघुनंदन!

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

तुम्हें लगाऊं मन का चंदन,
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

मन करता है तेरा वंदन,
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

मुझको अपनी शरण में ले लो,
नहीं चाहिए यश अभिनंदन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

यह संसार-असार छुड़ा दो,
तुमको करती तन-मन अर्पण।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

एक विचार का समुद्र भरा है,
राम नाम से करती मंथन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

सारा झूठ का ताना-बाना,
लगता अपना महिमामंडन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

सत्य दिखाकर मुझको मेरा,
मत करना अब इसका खंडन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

काल-व्याधि की सीमा तोड़ो,
स्वीकारो तुम मेरा वन्दन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

सबकी तुमने पीर हरी है,
मेरी बारी अब रघुनंदन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

अपनी अवधपुरी बुला लो,
मत भेजो तुम मुझको मधुबन।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

सांस त्याग जो मिलन हो तुम से,
कर दूं सारी अभी मैं अर्पण।
हे रघुनंदन! हे रघुनंदन!!

करुणावतार श्री राम

अमित अवस्थी
लखनऊ, भारत

राम कृपालु कृपा करिहैं, करनी फिर कौन न जौ करि जाई।
मेघ मल्हार झरैं निसि-द्यौस, कहौ फिर कौन न प्यास बुझाई।।
जो प्रति श्वास रहै प्रभु आस, चढै जेहि चित्त न प्रीति पराई।
सो न कबौं बिनसाइ सकै, जेहि राखन चाहि लियैं रघुराई।।

हे रघुनंदन! आनंदकंद, तुम्हें नित नैन निहारत हैं।
धर्म धुरीन धराइके ध्यान, अधरान सों नैकु पुकारत हैं।।
हाय अकेल बिहाय गयो प्रभु, अवगुण कौन विचारत हैं।
सोचत हैं निज की करनी, कर मींजत हैं मन जारत हैं।।

हे भरताग्रज राम प्रभु, उर का उन्माद न जाय कहा।
डोलत पाँव धँसै धरनी, बरसैं अँसुआँ मन जाय बहा।।
ओ छविधाम सियावर राम, वियोग न आपका जाय सहा।
पद पंकज धूरि बिना हरि हे, निरधार ये जीवन जाय रहा।।

हर बार अवर्णित

राकेश खंडेलवाल
वाशिंगटन डी.सी., यू.एस.ए.

ओ मेरे प्राणेश राम! मैं कैसे करूँ तुम्हारा वन्दन,
तुम निस्सीम, परे शब्दों की सीमा से, हर बार अवर्णित।

तुम करुणावत्सल दुखहर्ता, सकल सृष्टि के पालनकर्ता,
तुम अद्वैत, द्वैत भी तुम हो, तुम साकार और तुम ओझल।
अन्तहीन विस्तार तुम्हारा, तुम अनादि हो और अन्त भी,
तुम ही महातिमिर में ज्योतित, कोटि सूर्य बस तुमसे उज्ज्वल।

रूप तुम्हारा देख सकूँ मैं, इतनी क्षमता कहाँ नयन को,
कैसे हो आकार समाहित एक चित्र में? अरे अकल्पित!

पाँचजन्य का गुंजित स्वर तुम, तुम नीरवता क्षीर निधि की,
तुम्हीं रचेता महारूद्र के, शिव के तुम ही सकल पुजारी।
सृष्टि नियंत्रक, भाग्य विधाता, तुम संचालक हो प्रकृति के,
कर्म फलों के निर्देशक तुम, तुम ही एक अमंगल हारी।

बढ़ा तुम्हारा हाथ सदा ही बरसाता सुख शांति निरन्तर,
उस पर चलता आदर्शों के पथ पर जो होकर संकल्पित।

सामाजिक परिवर्तन के आधार तुम्हीं तो हो पुरुषोत्तम,
जाति भेद को मिटा तुम्हीं ने सबको ही समानता दी है।
वाल्मीकि, कम्बन, तुलसी के रचनाक्रम के मुख्य पात्र तुम,
तुमने ही तो जन मानस को प्रतिपल नई चेतना दी है।

लिखते हुए तुम्हारी गाथा थकी लेखनी बीते बरसों,
कभी सरल हो, कभी सहज हो और कभी लगते अवगुंठित!

मेरे मन श्री राम बसे हैं

संतोष कुमार सिंह
मथुरा, भारत

मेरे मन श्री राम बसे हैं।
हर पल आठों याम बसे हैं।।

जिनकी कृपा बरसती निश-दिन,
वही हृदय अभिराम बसे हैं।

मात-पिता, गुरु के पद-पंकज,
श्री हरि करत प्रणाम बसे हैं।

असुर विहीन बनाने धरती,
राम अयोध्या धाम बसे हैं।

दीन-हीन, निर्बल हितकारी,
अनगिन प्रभु के काम बसे हैं।

शापित हुई अहल्या तारीं,
अनुपम अति सत्काम बसे हैं।

सत्य-धर्म के प्रभु तुम रक्षक,
धर्म-विजय संग्राम बसे हैं।

वन से लौट अयोध्या आए,
दर्शन नयनाभिराम बसे हैं।।

राम तेरी महिमा

सी. कामेश्वरी
सिकंदराबाद, भारत

राम तेरी महिमा अपार।

उदार हृदय, सुकोमल भाव, आचरणीय व्यवहार,
मानव रूप अवतरित करते रहे उपकार।

राम तेरी महिमा अपार।

माता-पिता, भ्राता, गुरु से सीखा सदाचार,
पशु, पक्षी, वानर, दानव का भी परोपकार।

राम तेरी महिमा अपार।

समानता का पाठ सिखाया,
प्रफुल्लित होते नर-नारी,
जिसको मिल जाती छाया,
उसको मिलता परम पद धाम।

राम तेरी महिमा अपार।

दशरथ नंदन तुम,
कौशल्या के प्रिय तुम,
भरत के भ्राता भी तुम,
सीता पति तुम,
विश्वामित्र-वशिष्ठ, मुनि-गुरु के आज्ञाकारी तुम।

राम तेरी महिमा अपार।

वानर के संग किए करतब,
लंकेश्वर अमृत-कुंड भेद,
विभीषण का रख मान,
सुग्रीव को पद दान,
जटायु को मोक्ष दान,
मारीच को परम पद धाम।

राम तेरी महिमा अपार।

अहिल्या का उद्धार,
शबरी का आतिथ्य,
कैकेई की आज्ञा,
केवट का सौभाग्य।

राम तेरी महिमा अपार।

तमसा नदी से शुरू प्रवास,
सरयू, वेदश्रुति, गोमती को किया तृप्त,
गांव, नगर-शहर पथ पर करते रहे लीलाएं सहर्ष।

राम तेरी महिमा अपार।

मानस से मन लगाया,
सोनभद्र को किया पार,
कौशिकी, गंगा, बिंदु सरोवर को किया पुनीत,
गोदावरी, पंपा, नर्मदा, का भी कहां किया बिछोह।

राम तेरी महिमा अपार।

पतित पावन नाम तुम्हारा,
हे दयानिधान!! कर जोरे,
वंदना करते सभी भद्र,
कर दे हमारा बेड़ा पार।

हे राम!! तेरी महिमा अपार।

राम स्तुति

नरेश शांडिल्य
नई दिल्ली, भारत

राम राम बस राम हैं, राम बिना कछु नाहिं।
इत-उत जहं-तहं दस दिसा, राम बसे सब माहिं।।

जग में नहीं राम - सा कोई।
राम सरीखा हुआ न होई।।

उन सा योद्धा उन सा राजा।
मिला न ढूंढ़ा सकल समाजा।।

सुत, पति, भाई, सखा राम सा।
कहीं न कोई मिला राम सा।।

दीन-दुखी, पतितों के तारक।
दुष्टों, असुरों के संहारक।।

शशि से धवल, सूर्य से उज्ज्वल।
जय जय जय हे निर्बल के बल।।

राम राम मय राम मय, सकल राम मय जान।
राम राम जप राम जप, राम राम करि ध्यान।।

तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है

श्याम सुन्दर पंचोली
वड़ोदरा, भारत

ईष्ट, गुरु मम हनुमत को, वन्दन हाथ जोड़ाई है,
गुण राम के करऊँ बखानी, श्री हरि कृपा बरसायी है।
प्रभुजी तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

चरित किये सिख दें जीव को, कारन जग की भलाई है,
गुरु, पितु, मातु की आज्ञा मानी, करि आदर सेवकाई है।
हे राम तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायीहै।।

सेवक, बन्धु, सखा, संगिनी, जिसने प्रीत दृढ़ाई है,
निज सुख त्याग के रक्षा किन्ही, विपत्ति दूर भगायी है।
प्रभुजी तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

जड़मति, लघुता, कपट, दुराव से अवगुण या ढिठाई है,
भूल बिसारि सद्गति दीन्ही, जय कृपालु रघुराई है।
हे राम तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

सुनत, कहत, पढ़त, समुझत, राम कथा मन लायी है,
जीवन मृत्यु की कला सीखा, करम में धर्म समायी है।
प्रभुजी तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

घर-व्यवसाय, सेवा, कृषि या शासन की कठिनाई है,
जो जन हुआ राम अनुरागी, निश्चय पार लगायी है।
हे राम तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

भगति, विवेक, साधना के पथ पर, "श्याम"की निष्ठा आयी है,
भ्रम गया सुमति पायी, भव सागर तर जायी है।
प्रभुजी तेरा सुमिरन बड़ा सुखदायी है।।

शाश्वत हैं श्री राम!

कौशल किशोर श्रीवास्तव
मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया

हे रामचन्द्र, हे दशरथ नन्दन, हे कौशल्या के लाल!
हे जनक-सुता सीता के स्वामी, मर्यादा पुरुषोत्तम राम!
बल, बुद्धि, विद्या से पूरित, तीर-धनुष के धारक,
ऋषिजनों के संरक्षक और दुष्टों के संहारक।
मानव रूप में विष्णु उतरे, पावन भारत की धरती,
देवलोक की आयी परम्परा, सत्य न्याय की अनुभूति।
त्रेता युग में धर्म विधान को पुनः मिला संज्ञान,
रामराज्य की गाथा फैली, जनता हुई निहाल।
अवध पुरी में आई दिवाली, लौटे वन से राजा राम,
युगों-युगों की यही विरासत, जन-जन का पैगाम।

मुक्त ध्वनि से जनता कहती जय-जय हो श्री राम!
भारतवंशी कहीं रहें, शत-शत करते उन्हें प्रणाम।
पुष्प हृदय का अर्पण करते, गाते हैं उनका गान,
नतमस्तक हैं उनके आगे, अंतर्मन में जय सिया-राम।
स्पंदित होता रोम-रोम, जब प्रेम से सुनते रामायण,
तुलसीदास का काव्य ग्रन्थ, जीवन में लाए अमिय ज्ञान।
क्षणभंगुर जीवन कालचक्र, शाश्वत हैं श्री राम,
शाश्वत हैं श्री राम, सबका करते कल्याण!!

जय हो राम लला की

ताराचन्द 'नादान'
दिल्ली, भारत

जय हो राम लला की, जय हो दशरथ नंदन की।
दीप जलाओ घर-घर, घड़ी है आई वंदन की।।

चौक पुराओ, मिलकर मंगलगान करो सारे,
बरसों बाद अवध में आए अपने प्रभु प्यारे,
शुभ मंगलमय घड़ी ये आई प्रभु अभिनन्दन की।
दीप जलाओ घर घर घड़ी है आई वन्दन की।।

मानवता के संकट अब तो दूर हुए सारे,
बीत गयीं काली रातें दिन आए उजियारे,
खत्म हुई हैं घड़ियाँ सारी रुदन ओ क्रन्दन की।
दीप जलाओ घर घर घड़ी है आई वन्दन की।।

मात सिया की, भरत, शत्रुघ्न, लखनलाल की जय,
केवट, सबरी, वानर दल, हनुमत विशाल की जय,
चित्रकूट के घाट की, जय तुलसी के चन्दन की।
दीप जलाओ घर घर घड़ी है आई वन्दन की।।

श्री राम की वंदना

मीरा सिंह
सियटल, यू.एस.ए.

व्यापक ब्रह्म निरंजनं, लीजिए कृपासिंधु अवतार।
माया रहित मुकुंदनं, सुखमूल हरो भुवन भव भार ॥

सुरनायक सुजान प्रभु, राघव रघुनायक रघुवीर।
अखिलेश्वर पावन परमात्मा, कृपासिंधु मति धीर॥

वंदन वंदन करूँ प्रभु, वंदन बाहुविशाल सीतापति।
वंदन वंदन करूँ प्रभु, वंदन भवबाधा हरन रघुपति॥

जाकि कृपा मुनिवर तर गए, तर गई अहल्या नारी।
जाकि कृपा पातक तर गए, हनुमत जी लंका जारी॥

हरि मुख ललाम खंजन नयन प्रभु, भव भय हरन जगतपति।
हरि मायापति भक्त रंजन प्रभु, भव भय हरोदे सुमति॥

हे प्रभु पावन परमात्मा, श्री राम करूनायतन।
दीनबंधु दीनानाथ प्रभु, धनुर्धारी कृपा निधान॥

भक्त हितकारी रघुनंदन, पीतपटधारी भगवान।
प्रभु श्रद्धासुमन समर्पित, तन मन धन अर्पन श्री राम॥

राम रस

वीणा अग्रवाल
कोटा, भारत

बिन पिये राम रस को, बताऊँ मैं क्या?
बिन जिये रामधुन को, सुनाऊँ मैं क्या?

ये तो केवट बताये, अहिल्या कहे,
बिन छुए राम रजको, बताऊँ मैं क्या?

ये तो लक्ष्मण बताये, भरत जान ले,
बिन चरण शीश धारे, बताऊँ मैं क्या?

ये तो शबरी बताये जो चख-चख खिलाये,
बिन चखे बेर मीठे, बताऊँ मैं क्या?

ये तो हनुमत बताये, सिया जान ले,
बिन हृदय राम धारे, बताऊँ मैं क्या?

भई भोर जागो, कौशल्या कहे,
वो सतत जागरित है, जगाऊँ मैं क्या?

है तेरे नाम का ये, समन्दर भरा,
बिन नहाये ही उसमें, बताऊँ मैं क्या?

बिन पिये राम रस को, बताऊँ मैं क्या?
बिन जिये रामधुन को, सुनाऊँ मैं क्या?

सतत करूँ मैं प्रणाम

सरस्वती मल्लिक
मैकिन्नी, यू.एस.ए.

राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।
फिर से मुझे दर्शन दे दो राम।
राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।

श्यामल छवि मैं निरखि न पायी।
भली-भाँति मैं मिल भी न पायी।
क्यों हो गये अन्तर्धान।
राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।

योगीजन तुम्हें योग से पाते।
ऋषि मुनिजन तुम्हें ध्यान से ध्याते।
तप से पाते तुम्हें तपस्वी।
संसारी तो हैं भरमाते।
मुझ संसारी के घर हो तेरा कैसे विश्राम।
राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।

राम-नाम में तन-मन रँग लूँ।
राम-नाम ही गाऊँ।
जहँ देखूँ तहँ राम ही देखूँ।
राम में ही रम जाऊँ।
राम-नाम जपते ही जपते।
राम राम रटते ही रटते बीते आठों याम।
राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।

प्रेम भक्ति दो शरणागति दो मन में बसो सियाराम।
मेरा सारा जीवन बीते भजन करत निष्काम।
राम तुम्हें सतत करूँ मैं प्रणाम।।

मेरे मन बसे राम!

शिवप्रभाकर ओझा
फरीदाबाद, भारत

रोष-होश-जोश राम, भावना का कोष राम,
प्रेम परितोष राम, राम गुण धाम हैं।
धर्म-कर्म पाल राम, काल के भी काल राम,
भारत भुवाल राम, राम शुभ काम हैं।
दुष्ट जन मारे राम, संत जन तारे राम,
जन-मन प्यारे राम, राम निष्काम हैं।
राम को करूँ प्रणाम, नाम जपूँ आठों याम,
मेरे मन बसे राम, राम, राम, राम हैं।

कर्म का प्रकाश राम, धर्म का विकास राम,
धरा औ' आकाश राम, राम सुखधाम हैं।
ऋषियों पर वारे राम, भक्तों के सहारे राम,
अवध दुलारे राम, राम शुभ नाम हैं।
केवट के मित्र राम, प्रेम का चरित्र राम,
साधना का चित्र राम, राम को प्रणाम है।
भारत की चाह राम, सच्चाई की राह राम,
शत्रुओं की आह राम, राम, राम, राम हैं।

रोम रोम में रमते राम!

रुचि श्रीवास्तव
लखनऊ, भारत

रोम रोम में रमते राम।

सुख के समय उमंगित मन में,
आपद काल सशंकित मन में,
संग सदैव हमारे राम।

राह कौन सी, दुविधा हो जब
राम नाम ही सुविधा हो तब।
भव-सागर से तारें राम।

विपदा भारी आन पड़ी हो,
कष्ट भयंकर, कठिन घड़ी हो
समाधान है, हरि का नाम।

जीवन सुख का सागर भी है,
भरती अपनी गागर भी है,
कृपा राम की, उन्हें प्रणाम।

राम सत्य हैं, शिव हैं, राम,
राम आदि हैं, अंत हैं, राम,
तुझ में, मुझ में, सब में राम।

उर में सदा विराजें राम,
रोम रोम में रमते राम।

बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ

ब्रजेश कुमार सिंह ‘विशाल’
सीधी, भारत

कण-कण में जहाँ राम का अनुराग बोलता है
हर दिशि में जहाँ राम का प्रताप डोलता है
वाद हो संवाद हो दर्शन हो या साहित्य
बिना राम के जहाँ कोई मुँह न खोलता है
ऐसे प्रभु श्री राम की जयकार कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

इस देश की धड़कन में श्री राम हैं समाए
जिसके हृदय में राम वही पार निकल पाए
राम-राम कह कर ही ये देश जागता है
अंतिम समय में राम का संदेश माँगता है
हर साँस राम नाम का गुणगान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

सदियों से सियासत के बादल रहे छाए
हस्ती मिटाने राम की कुछ कायर रहे आए
कुछ ने तोड़ी मूर्तियाँ कुछ ने मिटाए नाम
पर राम का करता रहा संसार ये सम्मान
मैं राम की शक्ति का संधान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

फिर भी कबीर तुलसी में राम थे समाए
रसखान मीरा में वे कृष्ण बन कर छाए
केशव व सेनापति भी थे राम के अनुरागी
राम की महिमा को इस देश ने न त्यागी
संत रामानन्द जी को प्रणाम कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

बाबर की तोड़-फोड़ से हैरान रहा देश
साजिश थी मिटाने की परेशान रहा देश
आपस में ही उलझे रहे देखा नहीं वतन
न जाने कितने कारसेवक ओढ़े रहे कफ़न
सीने पर गोली खाकर मुस्कान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

हमको मिली आज़ादी पर छाया रहा अंधेरा
उषा की नई किरणों में था संशय का बसेरा
जिस राम के बिना ये माटी है अधूरी
उस राम मन्दिर की इच्छा भला कैसे होगी पूरी
हिन्दू के दिल की टीस का उन्वान पढ़ रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

कुछ राष्ट्रवादी हिन्दू ने फिर लक्ष्य बनाया
वर्षों रहा संघर्ष तब ये दिन सुनहरा आया
सुप्रीम अदालत ने तब मुहर थी लगाई
एक भव्य दिव्य मंदिर की अलख तब जगाई
हर मन के संघर्ष की दास्तान पढ़ रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

जूझे हमारे राम अदालत की फाइलों से
कुछ नामुराद लोगों व कुछ अपने जाहिलों से
ऐसे ही अंधेरों से ये देश लड़ रहा था
हर साँस में बसे राम जनमानस कह रहा था
हर राम भक्त का मैं आह्वान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।
सूर्यवंशी राम की आभा है अद्भुत छाई
भारत की स्वर्णिम चमक से ये धऱती मुस्काई
मंदिर की नींव पड़ गई उद्घोष हो रहा है
संसार भर में रामलला का जयघोष हो रहा है

हिन्दू की हर साँस का गुणगान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

हर नगरी से है प्यारी अयोध्या हमारी
देवताओं ने भी इसकी है आरती उतारी
सरयू के तट पर ऐसा ये धाम हमारा है
सब कुछ न्योछावर इस पर ये प्राण हमारा है
हर शब्द भाव इस पर बलिदान कर रहा हूँ
बुद्धि है जितनी उतना बखान कर रहा हूँ।

नित स्मृति रहे श्री राम की

गिरीश्वर मिश्र
गाजियाबाद, भारत

भीत-त्रस्त-मानव के निविड-गहन–मन–वन में,
अंतस्थल दूषित है भाव-जगत आकुञ्चित।
तृष्णा-स्वर-मुखरित हैं सत्वरगति आतुर जन,
व्याकुल चित्त-चित्र में मंडराते अमित्र भाव।

आकर्षित दृष्टि, चपल-चंचल दृग्जाल-तंतु,
चीन्हे-अचीन्हे-हेय-हीन से उलझते हुए।
अन्तस के गह्वर में चित्रित अंधकार हुआ,
धर्म हो विदीर्ण छाया परितः अशुद्ध भाव।

कामना अछोर, ढोर जीवित-मृगतृष्णा सी,
भूले और भटके बिसरते सब यत्र-तत्र।
किए सब कर्म हित-अनहित को ध्याए बिना,
लौ के लगाये बिना जीवन जिए गए।

करते प्रपंच विविध, पहुंचे जिस धाम आज,
धन्धे धर, कुण्ठित-भाव मुग्धबुद्धि तृषितहृदय।
भावना अभाव-भारी, भव-सागर उद्वेलित,
स्वार्थज्वलित दावानल, उद्धत तरंगित वृत्ति।

जीवन में जड़ता, मलिनता-आवृत्त, वृत्त,
दारुण-दुख-कीलित हैं धरणी की पीड़ाएँ।
संकट से ग्रस्त-त्रस्त वायु, वारि, अंतरिक्ष,
प्रलय को आसन्न देख, ठहरी अवाक सृष्टि।

सुगति की प्रतीक्षा और सद्गति की इच्छा है,
ऊर्जा-स्नेह-वारिसे सुपूरित करो जन-जीवन।

आओ अभिराम राम! दूर करो तीनों ताप,
हो कर कृपालु निज सन्निधि का दान करो।

होवे मन शान्त मुक्त अविचल-रति तुममें हो,
धैर्यधनी, कलुषहीन, मर्यादित हों सद्विचार।
नव प्रभात धरती पर हो ज्योतित दिग-दिगंत,
भव-बाधा-शमन में समर्थ सद्विचार बनें।

मैत्री की आस लिये जीवन भटकता कहीं,
आशा निराशा सह दोलित और खंडित मन।
व्यथित भाव चिन्तातुर विचलित हो भग्न-हृदय,
द्वंद्वों की छाया ही सत्ता हुई जीवन की।

हिंसा-सन्निपात ग्रस्त जगती के त्राता जो,
भक्तवत्सल, अम्बुजनेत्र करुणा के वरुणालय।
शुभ्ररश्मिखचित राम मंगल के अमित धाम,
जग के सब कल्मष आमूलचूल नाश करें।

जगत हितकारी करें सबकी विमल मति जानकीपति,
गुने, ध्यायें, भजें, गाएँ हम सभी बस राम सीताराम।
चलें जुट सद्धर्म हित, पथ लोकहित को हो समर्पित,
करें सीताराम आलोकित हमें नित स्मृति रहे श्री राम की।

विनती श्री राम जी से

सुप्रभा गुप्ता
नेपरविल, यू.एस.ए.

राम जी वो भाव कहाँ से लाऊँ,
जो तुमरे मन को भावे।

राम जी वो श्रद्धा कहाँ से लाऊँ,
जो तुम्हारा हृदय पिघलावे,
राम जी तुम्हारी मन भावन,
भक्ति कहाँ से लाऊँ,
जो मेरे इष्टदेव का दरस दिखलावे,
हे पालन हारे, हे दीन दयालु,
तुम्हारी दया और कृपा के बिन,
वो भाव कहाँ से पाऊँ,
जो मेरे दाता के मन को भावे।

हे उपकारी तुम्हारी दया और कृपा के बिना,
वो श्रद्धा कहाँ से पाऊँ,
जो मेरे धनुर्धारी का हृदय पिघलावे।

हे जगत नियंता, तुम्हारी दया और कृपा के बिना,
ये चंचल पापिन, अवगुणों की खान,
तुम्हारी मन भावन भक्ति, कहाँ से पावे,
जो मेरे आराध्य श्री राम जी के,
साक्षात दर्शन करवावे,
मुझ पापिन का जन्म, सफल हो जावे।

राम जी वो भाव कहाँ से लाऊँ,
जो तुमरे मन को भावे।

कोई वचन निभाना!

हरिहर झा
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

हे राम! कहाँ आवश्यक है
कोई वचन निभाना।

ख्याली लड्डू दो वोटर को,
काहे जंगल जंगल सड़ना।
हर पिशाच से हो समझौता,
काहे खुद लफड़े में पड़ना।
हाथ मिला कर राजनीति में,
मक्खन खूब उड़ाना!

पत्ता काटो हर कपीश का,
दूध में मक्खी, सेवादार
कहाँ फँसे वनवासी दल में।
अयोध्या के ओ राजकुमार!
केमेरा हो, शबरी से मिल,
चित्र केवल खिंचवाना!

गले पड़े ना केवट कोई,
रहने दो अपने दर्जे में।
सत्ता रखो इंद्र वरुण पर,
नर्तकियाँ खुद के कब्जे में।
जाम इकठ्ठा वोट बैंक में,
भर भर चषक पिलाना!

हे राम! नहीं आवश्यक है
अब कोई वचन निभाना!

श्री राम पधारो

प्रतिभा सक्सेना
फ़ोल्सम, यू.एस.ए.

प्रभु, श्री राम पधारो!
इस साकेतपुरी में, मन में,
रम्य चरित विस्तारो!

बीता वह दुष्काल, सत्य की जीत हुई,
नया भोर दे, तिमिर निशा अब बीत गई।
विष-व्यालों के संहारक तुम गरुड़ध्वजी,
मातृभूमि के पाश काटने, धनुर्भुजी।
भानु-अंश, तम हरने को पग धारो!

युग-युग के दुष्पाप शमित हों, रहे शुभम्,
सुकृति-सुमति से पूरित हो तन-मन-जीवन।
कुलांगार कर क्षार, भालचंदन धर दो,
राष्ट्र-पुरुष का माथ, तिलक से मंडित हो।
मनुज-लोक में पुण्य-श्लोक संचारो!

सहस बरस बीते अँधियाते, टकराते,
रहे सशंकित, पग-पग पर धक्के खाते।
इस भू से कलंक चिह्नों को निर्वारो,
परित्राण दो, क्षिति-तल के संकट टारो।
परम वीर हे, महिमावान पधारो!

दुर्मद-दुर्मति का निष्कासन संभव हो,
मिटा दैन्य, सामर्थ्य- नवोर्जाएँ भर दो।
भूमा का वरदान, विश्व में शान्ति रहे,
बाधाएँ हट जायँ, न कोई भ्रान्ति रहे।
करुणामय, निज जन के काज सँवारो!

कर्मों में रत जीवन, जब निस्पृह जीता,
शीश वहीं पर अखिल विश्व का नत होता।
सिद्ध किया तुमने निज को दृष्टान्त बना,
दिव्य कर दिया पञ्चभूतमय तन अपना।
आ, साक्षात् विराजो, निज लीला धारो!
अब श्री राम, पधारो!

आओ मेरे राम यहाँ

इंदल सिंह भदौरिया
लखनऊ, भारत

भोगवादिता के इस युग में, भोगों का विस्तार हो रहा।
परम लक्ष्य जीवन का बनकर इसका सघन प्रचार हो रहा।।

स्वार्थ लिप्त भावनाओं से आहत वसुधा चीख पडी़ है।
पशुता वृत्ति प्रचंड हो रही मानवता अब विवश खड़ी है।।

हिंसा हुंकारों की कलुषित काया क्रोधित डोल रही है।
नास्तिकता के नग्न-नृत्य में आपाधापी बोल रही है।।

धर्म, नीति, अध्यात्म कहाँ प्रभु? कहाँ गये वे सद् आचार।
जिनसे प्राणी भवसागर से सहसा हो जाता था पार।।

पाप ताप से धरा धधकती जग में अत्याचार नचा है।
दीन-हीन निबलों पर देखो कैसा हाहाकार मचा है।।

माया-मोह महामद सन्मुख वस्त्रहीन निरीह मर्यादा।
सदाचार असहाय सिसकता, पाप प्रतारण प्रति आमादा।।

हे सुरनायक, दीन सहायक धर्म ध्वजा के रखवारे।
शपथ आपको भक्त जनों की, जो लगते हैं अति प्यारे।।

सरयू अपलक बाट जोह रही अब विलंब का काम कहाँ।
प्रबल-प्रतीक्षा में रत युग है, आओ मेरे राम यहाँ।।

काश!

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

भक्ति भाव कपीश सा होता,
जग में राम भक्त कहलाता।
या मैं अनुज भरत सा होता,
चरण पादुका शीश लगाता।
अथवा मैं जो केवट होता,
पाँव पखारन का सुख पाता।

जन्म मुझे शबरी का मिलता,
तुमको जूठे बेर खिलाता।
कहीं राह का पत्थर होता,
स्पर्श से प्रभु के मुक्ति पाता।
न मानव का जन्म जो होता,
बन जटायु धरती पर आता।

पता बता सीता माता का,
राम गोद में प्राण गँवाता।
काश मैं सुग्रीव ही होता,
राम सहायक मैं बन पाता।
यह भी नहीं विभीषण होता,
राम शरण में जीवन पाता।

कम से कम रावण ही होता,
अंत समय प्रभु दर्शन पाता।
पर मैं कलियुग का प्राणी हूँ,
रघुवर कैसे तुम तक आऊँ।
बुद्धिहीन मैं नीच पतित हूँ,
मिथ्या अपना जन्म गँवाऊँ।

पाप बोझ का भारी जग में,
पुण्य की न परछाईं पाऊँ।
लो अवतार पुनः धरती पर,
कातर स्वर में तुम्हें बुलाऊँ।
तुमको राह दिखाना होगा,
भ्रम का कैसे बिम्ब हटाऊँ।

करो कृपा हम पर भी स्वामी,
भक्ति भाव से भजन सुनाऊँ।
अज्ञानी पर हूँ मैं तेरा,
तुझ बिन कौन शरण में जाऊँ।
इक ही लगन लगी जीवन में,
किस विधि कृपा राम की पाऊँ।

नियति

मृदुला सिन्हा
पटना, भारत

जरूरत है अब राम तुम्हारी
हर तरफ है स्वार्थ, हिंसा और दर्द का घना कोहरा
आंशुओं में लिपटी संवेदना
दर्द गहराता ही जा रहा
राम तुम्हारी मर्यादित जीवन की शिक्षा
जरूरत है अब राम तुम्हारी।

तिनका तिनका सा बिखर रहा परिवार
ना बड़ों की चिंता ना लेते उनसे कोई शिक्षा
स्वार्थ में भाई भाई का नाम रहा
त्याग नाम का तो कोई अर्थ ही ना रहा
अपने हर संस्कार बतलाने को
जरूरत है अब राम तुम्हारी।

शक, मोह माया में उलझे सब
बस अपना ही सोच रहे सब
जाति पांति का भेद मिटाने
सब अपने पराए को साथ निभाने को
सब नीति बतलाने को
जरूरत है अब राम तुम्हारी।

दुश्मनों से भी मित्र की तरह व्यवहार करना
कुटिल नीति करने वाले से भी मां की तरह प्यार करना
कटुता का भी जवाब प्रेम से देने को
क्षमा, त्याग ममता की नींव बनाने को
जरूरत है अब राम तुम्हारी!

राम तुम्हें फिर आना होगा

नूपुर अशोक
राँची, भारत

राम तुम्हें फिर आना होगा,
उलझे सवालों को सुलझाने,
हर कर्म का मर्म बताने,
जो किया वह क्यों किया,
राम चरित्र को फिर समझाने,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

तुम पर उठते हैं सवाल,
तुम पर हो जाते हैं बवाल,
तुम्हारे नाम पर लड़ने वाले
मंदबुद्धियों को समझाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

किसी के लिये तुम फैशन हो,
किसी के लिये बस आइटम हो,
जिये जो जीवन मूल्य तुमने,
उन्हें फिर से समझाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

किसी के लिये बस मूरत हो,
आरती, पूजा और मन्नत हो,
मूरत से बाहर आकर अब,
फिर कर्तव्य सिखाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

किसी कठघरे में आरोपी हो,
सीता त्याग के दोषी हो,
निज प्रेम पर राज धर्म का
महत्व उनको समझाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

क्यों ठुकराया शूर्पणखा को,
प्रेरित किया क्यों अंग-भंग को,
मर्यादा का सीमा-लंघन
है असह्य, बतलाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

क्यों गये तुम गहन वन में,
क्यों किये असुर-वध तुमने,
अराजकता और प्रपंच का
विनाश करना सिखलाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

तुम तो थे सियावर राम,
कैसे बन गये जय श्री राम,
नारों, झंडों को छोड़ फिर से
सियावर राम कहलाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

कुछ आहत हैं रावण वध पर,
कुछ विभीषण अभिषेक पर,
नीति रहित ज्ञान है निष्फल,
पुनः स्थापन कर जाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

जो करणीय, वही है धर्म,
तुम्हारा जीवन, तुम्हारे कर्म,
धर्म की सही परिभाषा को
फिर से याद दिलाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।

'मेरा' और 'मैं' तक सीमित,
बस अपने सुख तक संकुचित,
इस स्वकेन्द्रित दुनिया को,
विश्व-कर्तव्य सिखाना होगा,
राम तुम्हें फिर आना होगा।
राम तुम्हें फिर आना होगा!!

रघुबर कहिया अईबै

कंचन पाठक
नई दिल्ली, भारत

विरह ज्वाल जरली सीता करै छथि नेहोरा
रघुबर कहिया अईबै।
सहलो नै जाईये दुःख अपार
रघुबर कहिया अईबै।
नोर नै सुखाई अछि दृग से
चित्त फाटल स्वर्ण मृग से
मोहिनी मुरतिया कखन देखैईबै
रघुबर कहिया अईबै।

झर झर घन सावन गरजल
कानि कानि भादो बरसल
निर्मम सभ स्वप्न लुटल अछि
अन्तर के मधुबन उपटल
युग बीतल जीवन भेल पतझड़
रघुबर कहिया अईबै।

विकलित मन दुखमय भीषण
निराहार नीरव जीवन
राक्षस पैशाच प्रताड़ित
निष्प्रभ अरु मूक बनल हम
हिरदय में उतरल शोणितक धार
रघुबर कहिया अईबै।

हिंदी अनुवाद

हे राम! आप कब आएँगे?
हे राम! विरह की अग्नि में सीता जल रही है,
आप कब आएँगे?
अब यह विरह दुःख असह्य हो चुका है।
आँखों से आंसू नहीं सूखते,
सोने के हिरन से मेरा मोह भंग हो चुका है।
हे राम! आप मोहनी सूरत हमें कब दिखायेंगे?
आप कब आएँगे?

सावन के बादल झर -झर कर बरस गए,
रो-रो कर भादो भी बरस गया
और मेरे अंतर का मधुवन उजड़ गया,
राम, आपको देखे युग बीत गया।
मेरा जीवन पतझड़ हो गया।
हे राम! आप कब आएँगे?

यहाँ राक्षस और पिशाच, मुझे प्रताड़ित करते हैं।
मेरे मन को भीषण दुःख देकर विकल कर देते हैं।
निष्प्रभ और मौन रहकर सब सहती हूँ।
मानो हृदय में रक्त की धार उतर आई हो।
इस नीरव जीवन में सुख लेकर
हे राम! आप कब आएँगे?
हे राम! आप कब आएँगे?

राम, श्री राम!

सरोजिनी अग्रवाल
लखनऊ, भारत

हारा है जब भी इंसान
चटक गया दर्पण छविमान
अंतर की कोरों से, यथाशक्ति जोरों से
टेरा है तुमको ही बदल बदल के नाम।
जय राम, श्री राम!

सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में, कलियुग में
खंडित आशाओं के विश्व व्यापी हर युग में
प्रकटे तुम सहज सुलभ विश्वासी धाम।
जय राम, श्री राम!

फिर घिरता अंधियारा, लूट रहा बंटमारा
पहचानों की बस्ती में स्वार्थ बना हत्यारा
जगमग कर दो राघव! रिश्तों की शाम।
जय राम, श्री राम!

जीते फिर अच्छाई, मानवता और सच्चाई
कुचले ना कभी न्याय, नीति और तरूणाई
आवाहन स्वीकारो, नाश पर करो विराम।
जय राम, श्री राम!

मैं प्रीत सजाऊँगी आना

नीलम तोलानी
इंदौर, भारत

मैं प्रीत सजाऊँगी आना, मैं दीप जलाऊँगी आना,
तोरण द्वारों पर लगते है, मैं हृदय लगाऊँगी आना।

जगमग सजी अयोध्या नगरी, प्रियतम को निशदिन तकती थी,
दर्शन जो प्रभु के मिल जायें, रसिका प्रभु प्रभु जपती थी,
मैं भी दीवानी हूँ तेरी, मिटकर खुद पाऊँगी आना।
तोरण द्वारों पर लगते है, मैं हृदय लगाऊँगी आना।

दीपों से रोशन है कोने, हर ओर उजाला है छाया,
हरने को तमस अमावस का, दीपों का उत्सव है आया
पुष्पों से महके घर आँगन, मैं उर महकाऊँगी आना।
तोरण द्वारों पर लगते है, फिर तुझको भाऊँगी आना।

सोना चांदी मांगें सब ही, दुनिया इससे ही चलती है,
मोहक तेरी माया है जो, चुपके चुपके से छलती है,
मैं माँगूगीं तुझसे तुझको, और आजमाऊँगी आना।
तोरण द्वारों पर लगते है, मैं हृदय लगाऊँगी आना।

छोड़ सिंहासन वन आओ

शीला पांडे
लखनऊ, भारत

हे राम सृष्टि विपदा में है
तुम छोड़ सिंहासन वन आओ

नर जीव अधम ने कर डाला
वसुधा का गौरव छिन्न-भिन्न
कण-कण पर तांडव डोल रहा
शिव के मस्तक तक जा अभिन्न

हे वन देवी के देव त्वरित
कर वाण-धनुष लेकर आओ।

यह नदी आँख की भर आयी
वसुधा की नदियाँ सूख गयीं
हिरदय पाषाण सरीखा अब
पर्वत तक उगती ऊख गयीं

सब जीव-जन्तु जंगल बिफरे,
प्रतिशोध मिटाने घन आओ।

सँग देवर लखन सरीखे थे
हम दोनों वन-वन में भटके
कण-कण प्रकृति की रक्षा की
गिर-गिर सँभले, उठ-उठ अटके

तब दानव, दैत्य, पिशाच मरे,
विषाणु अदेखा अब आओ।

मैं भूमि सुता धरती उपजी
तुम भी वन में ही मुझे मिले
वन में ही मानव-प्रीति हँसी
मानवता बोयी रूप खिले

जन अधम विनाशक रोग-भोग का,
पार लगाने 'मन' आओ।

लेकर राम नाम की नाव

नरेंद्र शर्मा ‘कुसुम’
जयपुर, भारत

लेकर राम नाम की नाव
चलें हम भव सागर के पार।

घेरा हमको भव तापों ने,
बाँधा हमको निज पापों ने,
हम संतप्त स्वयं से निश-दिन,
हम अभिशप्त विविधि शापों से,
राम नाम की लेकर चाबी,
खोलें बंद मुक्ति के द्वार।
लेकर राम नाम की!!

हम हो रहे मुग्ध तन-मन में,
हम गर्वित अपने जीवन में,
मृगतृष्णा हमको भटकाती,
लिपटा भ्रम भटके जन-जन में,
हम उलझे माया चंगुल में,
प्रभु को दिया बिसार।
लेकर राम नाम की!!

हमने सब कुछ जान लिया है,
“हम हैं सब कुछ” मान लिया है,
हम से ही है जग संचालित,
उसे ज्ञान-विज्ञान दिया है,
हम आबद्ध अहं पाशों में,
जुड़ता नहीं राम से तार।
लेकर राम नाम की!!

हम भटके तीर्थों में जाकर,
सँभले नहीं ठोकरें खाकर,
हम अंतर में झाँक न पाए,
बने रहे तम के हम चाकर,
बार-बार गंगा तट पहुँचे,
धुल पाये क्या कभी विकार?
लेकर राम नाम की!!

मन के पांचों मैल मिटायें,
उर से विकृति-शैल हटायें,
अपने सुख को विस्तृत करके,
दु:खितों का हर दु:ख बँटाएँ,
मन का दर्पण साफ रहे यह,
प्रभु के दर्शन हों साकार।
लेकर राम नाम की!!

राम-राम हो नित्य सहारा,
उसे समर्पित जीवन सारा,
राम नाम की रट जग जाए,
क्यों हो यह जग तब दुखियारा,
साँस-साँस में राम नाम हो,

राम नाम प्राणों का सार।
लेकर राम नाम की!!

राम नाम बाँधे हर मन को,
स्वच्छ रखे तन के आँगन को,
तिरती रहे तरणि लहरों पर,
साध्य मिले पावन साधन को,
उतरें पार तिमिर सागर के,

राम कृपा की ले पतबार।
लेकर राम नाम की!!

राम की महिमा

रेखा राजवंशी
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

राम मात्र नाम नहीं,
श्रद्धा हैं, विश्वास हैं।
लोगों के मन में बसी,
आस्था हैं, आस हैं।

राम दया का पर्याय हैं,
राम क्षमा का अध्याय हैं।
राम सत्य हैं, आदर्श हैं,
राम कर्म हैं, स्वाध्याय हैं।

राम ऐसा विश्वास, जिसमें
पिता की वचन बद्धता है।
एक ऐसा आदर, जिसमें
आज्ञा पालन की क्षमता है।

राम भक्ति हैं, जिसने
शबरी को उबार दिया।
राम शक्ति हैं जिसने
अहिल्या का उद्धार किया।

राम एक संयोग हैं,
जो अच्छे दिन लाते हैं।
राम एक सुयोग हैं,
जो कष्ट सब मिटाते हैं।

राम रघुकुल की रीत हैं,
राम ही सीता की प्रीत हैं।
राम तो मित्रों के मीत हैं,
राम ही रावण पर जीत हैं।

राम की महिमा अपरम्पार है,
राम ही संबल हैं, आधार हैं।
राम हैं तो सबका बेड़ा पार है,
राम हैं, इसीलिए संसार है।

राम नाम है सबसे प्यारा

सुशील कुमार ‘लखनवी’
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

विष्णु के सहस्त्र नामों में,
राम नाम है सबसे प्यारा।
करुणा निधान श्री राम ने,
पतितों के जीवन को तारा।।

राम नाम विख्यात हो गया,
कण-कण में वह व्याप्त हो गया।
जन्म-मरण की अंगवाड़ी में,
राम लला का राज्य हो गया।।

यात्री सहयात्री से कहते,
मेरी राम राम कह देना।
संकट आने पर राम राम,
मुख से उच्चारित कर लेना।।

जब तक तन में प्राण व्याप्त हैं,
राम जिह्वा से दूर न जाते।
रोगों के सम्पूर्ण निदान में,
राम अचूक औषधि बन जाते।।

राम पुनः न वापस आये,
फिर भी राम माला को जपते।
अर्थी के संगचलने चलते,
राम नाम को सत्य समझते।।

अपने कर्म क्षेत्र में हरदम,
राम नाम वाणी पर आता।
अन्तिम यात्रा में बापू ने,
हे राम! कहकर तन त्यागा।।

ब्रह्म मुहूर्त में राम जपने से,
आध्यात्मिक शक्ति बढ़ जाती।
पूरे दिन की कार्य प्रणाली,
बिन दुविधा पूर्ण हो जाती।।

राम नाम मिल गया

करुणा पांडे
लखनऊ, भारत

भक्तिभाव जग गया, प्रेम भाव पल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।
कामनाएं लादकर, धन की हम तलाश में,
अनंत ढेर वासना ले, मन के इस पलाश में,
कंटकों के मार्ग में, आगे पग रख दिये,
पाप गठरी हम लिये, तपोभूमि चल दिये,
तप के इस उजास में, नाम के प्रकाश में,
राम तो मिले नहीं, राम नाम मिल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।

रामराज्य की मशाल, दे के वह चले गये,
जिन्दगी के सुख से, राम तो छले गये,
त्याग मूर्ति बन के राम, जग को तारते रहे,
भक्त जीतते गये, राम हारते रहे,
भावसारे खो गये, अभाव सामने रहे,
अभाव के ही भाव में, राम नाम मिल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।

जग के हर सवाल का, जवाब सिर्फ राम हैं,
दुःख की हर कहानी का, उपाय सिर्फ राम हैं,
अक्षरों में राम हैं, निरक्षरों में राम हैं,
अणु-अणु कण-कण, राम का निशान है,
जन्मों के पुण्य का, प्रभाव हमको मिल गया,
तृष्णा भरे मन को, आधार राम मिल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।

सूर्य वंश के दीप थे, शीत चन्द्र सम रहे,
ताप में जले मगर, ताप हरते रहे,
सूत्रधार बनके राम, मुक्त करते रहे,
दृष्टि चहुँ डालते, राम अवध में रहे,
राम मकरंद का, पान हमने जब किया,
ज्ञान चक्षु खुल गए, तत्व नाम मिल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।

हमने क्या किया सुनो, राम नाम खो दिया,
स्वार्थ चित्त लिप्त हो, राम राज्य खो दिया,
भ्रमित हो के जीव ने, साधना को खो दिया,
अहंकार लिप्त हो, मुक्ति मार्ग खो दिया,
तीन तत्व चार पुरुषार्थ का मनन किया,
देख त्याग राम का, आत्मज्ञान मिल गया।
कष्ट तारने को एक, राम नाम मिल गया।।

पथिक के राम

अलका धनपत
मॉरीशस

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

पलकों में लहरें खेलती हैं
सपनों में कभी उतरते हैं वे दिन,
गिरमिटिया बदलने भाग्य आए थे,
मिली गुलामों-सी ज़िंदगी,
रह गई हृदय में राम की बंदगी।

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

बैठकाओं में राम-सियाराम की गूँज थी
पर मन पर तम की उलझन थी,
छिप-छिप कर, मोती आँख से ढुलके थे,
मिटाया था दिनभर की थकान को, राम नाम की धुन से,
राम नाम का उपवन ही था, जीवन इस जन का।

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

मिट्टी के कण-कण में गिरा है पसीना खून-सा,
अभिनंदन किया हर तूफान तथा प्रलय का,
ये झंझा ही राम का दूत बन लाई उपहार
तन मन जप, राम-राम हुआ सौरभपूर्ण,
लड़ने की ताकत पाई राम-रमैया भज कर।

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

धरती ने उगला सोना ईख चीनी के रूप में,
रामकथा तथा राम मंदिर भी लगे दिखने,
हर आँगन चमक उठा महावीर की ध्वजा से,
गूँज उठा हर धाम दुःख-सुख कहने अपने राम से,
बची संस्कृति, राम राम जय राम राम गीत से।

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

बना नया इतिहास हर गाँव-गली का,
नयनों को मिले अभिराम राम,
परस राम का, दरस राम का, जीवन राम का
यही बना मंथन संजीवन रस
गिरमिटिया रह गया दूर, राम आज भी हैं
मन के पथ में।

समुद्र आज मेरा अपना है,
टापू पर तो मेरा आशियाना है।

राम नाम के दोहे

हर्षवर्धन आर्य
दिल्ली, भारत

बरसों से मन में बसे, स्वप्न हुए साकार।
फिर पुनीत भू अवध पर, सजे राम दरबार।।

जो चित्त रमता चरित में, उसको मिलते राम।
छद्म भक्त बिन भाव के, खपते जपते नाम।।

सौंप राम को काज सब, होंगे भव से पार।
कर्मनिष्ठ बन सौंप दो, राम हाथ पतवार।।

राम नाम है संस्कृति, राम नाम पहचान।
राम नाम विश्वास है, राम नाम सम्मान।।

त्याग-तपस्या-साधना, के पथ पर अविराम।
सत्यनिष्ठ होकर चले, राम बने तब राम ।।

जिस मन रावण जागता, सोते जिस मन राम।
उसी मनुज को व्यापते, लोभ-क्रोध-मद-काम।।

माया की माला जपी, खूब हुआ धनवान।
राम नाम के धन बिना, सब धन धूल समान।।

छोटा ना कोई बड़ा, सब हैं एक समान।
सबके मालिक राम हैं, सब उनकी सन्तान।।

समय चक्र जब घूमता, होती ना आवाज।
राजा फिरते रंक बन, रंक चलाते राज।।

कलियुग में सब खो गये, आदर्श औ' उपदेश।
पग पग पर रावण खड़े, धरे राम का वेश।।

राम नाम लेकर हम भी

सुभाष शर्मा
मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया

राम नाम लेकर हम भव सागर से तर जाएँगे
जैसे पत्थर उतराए वैसे ही हम भी उतराएँगे।

राम नाम से तरी अहिल्या
शबरी तरी, तरी कौशल्या
दशरथ भरत न बन पाए तो केवट ही बन जाएँगे
राम नाम लेकर हम भी भव सागर से तर जाएँगे।

राम नाम से तरे विभीषण
बाली तरे, तरे खर दूषण
हनूमान और लक्ष्मण छोड़ो हम बाली बन जाएँगे
राम नाम लेकर हम भी भव सागर से तर जाएँगे।

तरे नाम से वीर जटायू
तरे सिंधु जल थल और वायू
राम बाण न बन पाए तो तरकश ही बन जाएँगे
राम नाम लेकर हम भी भव सागर से तर जाएँगे।

राम नाम ले तरे भक्त जन
नित पायें सब राम रतन धन
राम राम कह मरे अगर हम राम भक्त कहलाएँगे
राम नाम लेकर हम भी भव सागर से तर जाएँगे
जैसे पत्थर उतराए वैसे ही हम भी उतराएँगे।

जन्मे थे क्यों श्री राम?

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

इस रामनवमी पर,
मन में एक प्रश्न उभरता है!
जन्मे थे क्यों श्री राम?
परमपिता स्वयं क्यों उतरे ले मानव का नाम!

'यह भी कोई प्रश्न है?' कहेंगे आप,
क्या! तुमने रामायण भी नहीं पढ़ी!
तुलसीकृत मानस अवश्य घर रखी होगी!
रामानंद सागर की शृंखला भी देखी होगी।

आश्चर्य है पर, आज बता देते हैं,
दयानिधान, तुम्हारा अज्ञान मिटा देते हैं।
जब रावणादि दैत्यों का बढ़ा था त्रास,
जन्मे थे प्रभु, करने उन दुष्टों का नाश!

ऊँह! कुछ और हैं मेरे विचार,
इन छोटे-मोटे दैत्यों का,
क्षीरसागर से परमपिता,
एक संकेत से कर सकते थे संहार।
इस क्षुद्र काम के लिए भला,
मानव-जन्म लेना क्यों पड़ा?

जन्मे थे प्रभु श्री राम,
मानव जाति को देने शिक्षा।
मार्गदर्शन करने हमारा,
मानव-जन्म की देने दीक्षा।

कैसे करें आदर बड़ों का,
माता, पिता, गुरुजनों का।
धर्म-पालन के लिए,
त्याग करें अपने सुखों का।

कैसे करें हम प्रेम,
अपने बंधु भ्राताओं से।
पति पत्नी में हो प्रेम कैसा,
सीखें सीता-राम से।

कैसे निबाहें मित्रता,
प्राण लेकर हाथ में।
दुष्ट-दण्डित कैसे करें,
हनुमान लेकर साथ में।

कैसे मिटायें भेद मन से,
ऊँच-और-नीच का।
केवट-शबरी से कैसे करें,
निश्छल प्रेम राम सा।

इस रामनवमी पर प्रभो,
कुछ बोध मुझको दीजिये।
अनुकरण कुछ कर सकूँ,
प्रबुद्ध मुझको कीजिये।

मैं 'ओम' चरणों में पड़ा,
कृपा-शरण दीजे विभु।
श्री राम व्याप्त सर्वत्र हो,
जय-जयकार हो मेरे प्रभु।

सोने का मृग

अनिल शर्मा 'जोशी'
दिल्ली, भारत

सोने का मृग
अभी-अभी
उछलता-कूदता, किलकारियां मारता
गया है सोने का मृग
बस गया है वो सीता की आंखों में
सीता स्नेह से
राम के कंधे पर हाथ रखती है
कहती है-
अहा, कैसा सुन्दर है यह
कभी देखा नहीं ऐसा मृग
कितनी सुन्दर लगूंगी
मैं इसकी मृगछाल पहनकर!

राम जानते हैं सोने के मृग नहीं होते
कहते भी हैं सीता से
पर हठ पर है सीता
उसे सोने का मृग चाहिए।

राम सोचते हैं-
दे ही क्या पाया हूं मिथिला कुमारी को
आंसू, पीड़ा आत्मीयों से विछोह और बनवास
और धनुष उठा कर चल पड़ते हैं
सीता को सोने का मृग चाहिए।

'लक्ष्मण-लक्ष्मण' की आवाजें दें ढेर हो गया है मायावी
सामने पड़ा है
विशाल, दैत्याकार, लहुलुहान शरीर

अपनी अंतिम परिणति में
कितना वीभत्स है सोने का मृग!
स्तब्ध खड़े हैं राम
ठगे गए हैं वो!
पर वो क्या करते
सीता को सोने का मृग चाहिए।

सीता को संदेह हो गया है लक्ष्मण पर
उसकी दृष्टि में
समर्पित एकनिष्ठ भाई नहीं है वो
बल्कि अवसर की तलाश में
भाई का हत्यारा है।

लक्ष्मण जानते हैं
राम को कोई नहीं हरा सकता
गलत जानते हैं वो,
सोने का मृग सबको हरा सकता है।

अब जंगलों में भटक रहे हैं राम
वृक्षों, पर्वतों से पूछते, अपने दुर्भाग्य से जूझते
अब उन्हें सोने का मृग नहीं चाहिए
अब उन्हें सीता चहिए।

जंगल में गूंज रहा है रावण का अट्टाहास
रावण के हाथों पड़ सीता कर रही है विलाप
अब उसे सोने का मृग नहीं चाहिए,
अब उसे राम चाहिए
राम को सीता चाहिए, सीता को राम चाहिए
सोने के मृग के बिना भी सुखी था उनका जीवन
आपको क्या चाहिए?

उपसंहार

दिव्या माथुर
लंदन, यू.के.

‘होइहि वही जो राम रचि राखा’
संघर्ष सदा पर मैंने किया
‘को करी तर्क बढ़ावहि साखा’
मैंने सदा वितर्क किया।

‘जेहि बिधि राखे राम’
ताहि बिधि मैं क्यों न रही
‘जिन खोजा तिन पाइयाँ’
जितना पैठी उतना उलझी।

बीत गए फ़िक्र में मेरे
‘फागुन के दिन चार’
कटी रही पूरी दुनिया से
दिया-लिया नहीं प्यार।

किस मुख से अब याद करूँ जब
‘सुख में सुमिरन न किया’
शर्मिन्दा हूँ मुझे डूबने को
चुल्लू भर पानी नहीं मिला।

'राम चरण बारिज जब देखउँ'
केवल यह मोरि आस
'तब निज जनम सफल कर लेखउँ'
प्रभु, करना नहीं निरास।

रावण मन में हँसता है

सोमनाथ डनायक
कानपुर, भारत

रावण वध को आतुर मानव
धनुष बाण जब कसता है
रावण मन में हँसता है।

अज्ञानों से घिरा हुआ
छल-कपट ढांचा सजा हुआ
तृष्णाओं में फंसा हुआ
जब मानव हाथ मचलता है
रावण मन में हँसता है।

काम-क्रोध से भरा हुआ
राग-द्वेष से सना हुआ
पशुवत सा धरती पड़ा हुआ
जब मानव आग उगलता है
रावण मन में हँसता है।

सप्तेंद्रिय को हार चुका
अनियंत्रित हो लाचार हुआ
तन-मन से बीमार हुआ
जब मानव तरकश भरता है
रावण मन में हँसता है।

जल भोज श्वास से लुटा हुआ
पृथ्वी, वन, तटिनी पिटा हुआ
मिथ्या वनवासी बना हुआ
जब मानव मंचन करता है
रावण मन में हँसता है।

लोभ मोह से तसा हुआ
समझौतों में फंसा हुआ
सहस्त्र सरों से सजा हुआ
जब मानव स्वयं को राम समझता है
रावण मन में हँसता है।

सोचे रावण, हे मानव!
तुम कभी विजय न पाओगे
आदर्श राम के यदि पाये तो
मुझको नहीं जलाओगे
तेरे सभी विकारों में
रावण ही तो बसता है।

तुच्छ, विकारी मानव जब
प्रत्यंचा को कसता है
तब रावण मन में हँसता है,
रावण मन में हँसता है|

राम-व्याकरण

यूरी बोत्वींकिन
कीव, युक्रैन

हे सियाराम! उदास न हो,
हर ‘शिष्य’ ‘भक्त’ नहीं है।
तुम मिथक ही बने रहो,
विश्व को कहाँ पड़ी है
आदर्श बनने की।
राम-कथा
जितना भी मन को मोहे
‘आदर्श’ का व्याकरण है ‘था’
या ‘होगा’।
पर हम तो ‘हैं’...
भला है कलियुग की आग में
कृष्ण ने हँसना सिखाया।
मिल जाए दिव्य अनुराग में
यह द्वंद्व... और दुख की माया।

राम और हम

मीरा रामनिवास वर्मा
गांधीनगर, भारत

राम सा बनना
इतना कठिन भी नहीं है,
राम को जीना
असंभव भी नहीं है,
राम को जीवन में
उतारने के लिए
बस इतना ही तो करना है।

पिता की आज्ञा पालना है,
माता का आदर करना है,
गुरु को मस्तक नवाना है,
भाईयों से प्रेम निभाना है,
सहज सरल बनना है,
अपना नहीं दूसरे का
गुणगान करना है,
बस इतना ही तो करना है।

नहीं करना है अभिमान,
रखना है वचन का मान,
रखना है निबल पर हाथ,
रहना है सच के साथ,
बुराइयों को देनी है मात,
नहीं करना है जात-पात.
बस इतना ही तो करना है।

राम के चरित्र को
पढते सुनते रहना है,
रामचरित को
जीवन में उतारते रहना है,
बच्चों को यदि
राम सा बनाना है,
घर को पर्णकुटी
बनाना है,
बच्चों को रामचरित
सुनाना है,
बस, इतना ही तो करना है!

श्री राम को राम रहने दो

राकेश कुमार चौबे
भोपाल, भारत

आम आदमी की जीवन शैली
और उसकी अभिव्यक्ति बनाने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

राम की किलकारी गूंजने दो,
कागा संग खेलने दो,
भ्रातृ प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

बच्चों को अनुशासन सीखने दो,
शिक्षक के महत्व और पाठ पढ़ने दो,
विद्या अध्ययन करने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

प्यार, प्रेम की परिभाषा गढ़ने दो,
पुष्पवाटिका में मिलने दो,
राम सीता को सीमाएं और
मर्यादा समझने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

यौवन की सुंदरता और
शक्ति का प्रदर्शन करने दो,
अपने बल पर, कमजोरियों
का धनुष तोड़ने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

सीता को आकर्षित करने का मौका दो,
नवजीवन का अंकुर फूटने दो,
बहू, बेटियों को उनकी सीमाएं और
मर्यादा परखने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

सत्ता सम्हालने से पहले
जीवन में संघर्ष करने दो,
राम को वन गमन करने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

जीव प्रेम, सभ्यता, संस्कृति समझने दो,
सृष्टि का सानिध्य और उससे प्रेम करने दो,
जिंदगी का प्रायोगिक ज्ञान पाने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

तपने दो, तपाने दो,
पुरुष से पुरुषोत्तम बनने दो,
तभी राज्याभिषेक होने दो,
श्री राम को राम रहने दो।

विजय गाथा

शिखा सक्सेना
लखनऊ, भारत

भाग्य रूपी कैकेयी,
कर्म रूपी दशरथ को,
विवश कर जाती है जब भी,
वो होता है आरंभ नए इतिहास का।

इच्छाएँ रूपी हिरन,
मन रूपी सीता को,
छल जाते हैं जब भी,
वो होता है कारण नियति का।

अमृत रूपी हनुमान,
विष रूपी लंका को,
भस्म कर देते हैं जब भी,
वो होता है जन्म एक बल का।

श्रद्धा रूपी गिलहरी,
बाधा रूपी सागर में,
डालती है पत्थर जब भी,
वो होता है जन्म एक विश्वास का।

जन्म रूपी संजीवनी,
मृत्यु रूपी नागपाश,
को परास्त करती है जब भी,
वो होता है उदय एक विजय का।

घटित होते समय के पार्श्व में,
निमित्त बन जाते हैं सब ही,
धर्मज्ञ और दृढ़प्रतिज्ञ बुद्धि रूपी राम के,
एक युद्ध करने का,
अहंकार और लोभ रूपी रावण के संहार का।

रामायण से सीख, हल्की फुल्की

हरीबाबू बिंदल
बोवी, मेरीलैंड, यू.एस.ए.

पुरुषों के लिए

वन में जाके मत रहिये,
पत्नी के साथ वन में जाके मत रहिये,
यदि रहना पड़ ही जाय, तो किसी स्त्री से पंगा मत लीजिये,
पंगा यदि पड़ ही जाय, तो उसके नाक कान काट, उसके भाइयों से अड़ंगा मत लीजिये,
खुदानाखास्ता, यदि ऐसा हो ही गया हो तो किसी बड़े खतरे के लिए सावधान हो जाइये,
किसी मृग को कंचन का मान, उसके पीछे मत जाइये,
वर्ना, अपनी ही पत्नी से हाथ धोना पड़ सकता है,
उसे ढूँढने के लिए मारे-मारे फिरना पड़ सकता है,
अगर मिल भी गई, तो अशोक वाटिका में नहीं,
उसे कहीं और पाएंगे, और,
जीवन भर पछताएंगे।

स्त्रियों के लिए

किसी सुंदर, सुनहरे हिरण को,
सोने का मत समझिए,
सोने की चकाचौंध में,
उसे पाने की पति से ज़िद मत करिये,
वर्ना, वही हो सकता है,
जो सीता के साथ हुआ,
सीता तो मिल भी गई,
अपना मिलना नामुमकिन समझिये।

(हमें यह बताते हुए अत्यंत खेद है कि हरीबाबू अब हमारे बीच नहीं रहे। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।)

करुण राम बाण

सौरभ
कटरा, भारत

अमृत भी ये नाभि स्थल में,
दस मस्तक से छला गया,
अत्यारूढ़ि, व्यभिचार, द्वेष
मन मेरुदंड तक गला गया।

आलम्बन कुछ ऐसा पाया,
मोह जगा, संशय भरमाया,
लोभी तृष्णा, प्रचंड वेग से,
शील सा पर्वत हिला गया।

रोम-रोम से विवश हो ऐसा,
कायर मन आतुर हो जैसा,
अतिवेग में, विनिर्बंध सधा,
अंतःगति सिद्धि, भुला गया।

निराश, कुंठित, दस मस्तक,
अहंकार, क्रोध, नतमस्तक,
भोगा जीवन; कुटुम्बियों को,
विपिन्न दशा से मिला गया।

अमृत 'सौरभ', धैर्य, चेतना,
निग्रह, नम्रता, विवेक, क्षमा,
दस चित्तों ने हरा चित्त जब,
करुण राम बाण, जला गया;
जिजीविषा कुंभ सुखा गया।।

अमृत भी ये नाभि स्थल में,
दस मस्तक से छला गया...!

सीख श्री राम की

विश्वास दुबे
एम्स्टर्डम, नीदरलैण्ड

जब श्री राम भक्ति का, चढ़ेगा हम पर रंग,
सीखेंगे हम उनसे, बदलेंगे अपने ढंग।

मोहमाया, दम्भ में उलझे, हम कैसे बाहर आएं,
भव सागर से निकलने का, रास्ता राघव दिखलायें।

भटकते जीवन को सिर्फ, राम-संदेशों का है सहारा,
उनकी आराधना से ही, जीवन तर जायेगा हमारा।

उस ईश से सीखें, कैसे देना पड़ता है बलिदान,
थोड़ा बहुत पा कर हम, दिखाने लगते हैं अभिमान।

परेश में थी अपार शक्ति, फिर भी धैर्य और समभाव,
वचन निभाने महल छोड़, अपनाया उन्होंने अभाव।

अथाह संघर्ष करना पड़ा उन्हें, भले ही थे भगवान,
जरा सी आपदा में हम तुम, हो जाते दुखी परेशान।

विपदाओं से घिरे रहे, फिर भी धर्म न छोड़ा,
शिव धनुष भी कितने, आदर सत्कार से तोडा।

रिश्ते निभाने का हुनर, अपने परायों का सम्मान,
भावनाओं के कंधे पर, रखें ज़िन्दगी की कमान।

मेरे प्रभु के गहने रहे, मर्यादा, सत्य और त्याग,
उनकी राहों पर चल पाएं, तो धन्य हमारे भाग्य।

हर ओर कृपा कौसलेय की, करते ऐसी आस,
राघव से हाथ जोड़, ये विनती करे 'विश्वास'।

मर्यादा के पाठ

अंजू अग्रवाल 'लखनवी'
अजमेर, भारत

मर्यादा के पाठ,
प्रभु श्री राम तुम्हीं से पढ़ने हैं।

तुम से लेकर आदर्श तत्व,
जीवन के मूल्य भी गढ़ने हैं।
जब प्रेम करो तो पूरा हो,
वहाँ विवेक का काम नहीं।
स्वर्ण मृग के पीछे भागे तुम,
प्रिय समर्पण का कोई दाम नहीं।
तुम प्रेम शीर्ष तक पहुँचे भी,
और क्षण में ही फिर त्याग दिया।
जनमत की गरिमा के आगे,
सम्बन्ध सभी नत करने हैं।
मर्यादा के पाठ,
प्रभु श्री राम तुम्हीं से पढ़ने हैं!

पर-नारी की छाया से भी,
तुम सा संकोची और कौन?
अहिल्या को तुमने तारा,
निर्भया को तारेगा कौन?
परिवार जिताने की खातिर
तुमने निज सुख को हार दिया।
संसार बचाने की खातिर,
सब ठाट-बाट भी त्याग दिया!
मात-पिता और भ्रात प्रेम के,
पाठ तुम्हीं से पढ़ने हैं!
मर्यादा के पाठ,
प्रभु श्री राम तुम्हीं से पढ़ने हैं।

कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढें

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

प्रश्न हर बार अपने से करते हैं
कहाँ ढूँढे - कहाँ ढूँढें अपने श्री राम!
मन्थरा की कुमंत्रणा में ढूँढें
कि कैकेयी के डाह में ढूँढें,
दशरथ की उपेक्षा में ढूँढें,
कि ढूँढें उनकी चाह में।
कहाँ ढूँढे - कहाँ ढूँढें अपने श्री राम!

भरत-लक्ष्मण की भ्रातृ-भक्ति,
कि शत्रुघन के प्यार में,
या ढूँढें श्री राम भक्त हनुमान में,
कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढे अपने श्री राम।

प्रेम हृदय सीता में ढूँढें
या सीता-परित्याग में ढूँढें
या ढूँढें परशुराम के क्रोध में
कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढे अपने श्री राम!

शबरी के प्रेम में ढूँढें,
या ढूँढें अहिल्या के उद्धार में,
बाली - विभीषण के न्याय में ढूँढें,
या वशिष्ठ-विश्वामित्र के विश्वास में।
कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढें अपने श्री राम!

रावण के विध्वंस अहंकार में,
या मंदोदरी-तारा के समर्पण में,
या ढूँढें सूपर्णखा की काम-रति चाह में,
कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढें अपने श्री राम!

प्रजा के प्रेम में ढूँढें,
या उनके लांछन और सवालों में!
सीता से ली दो अग्नि परीक्षा,
अपनी अग्नि परीक्षा तो दी शत बार,
उस अग्नि परीक्षा में ढूँढें!
कहाँ ढूँढें - कहाँ ढूँढें अपने श्री राम!

समुद्र लाँघ जो लंका पहुँचे,
स्वयं कभी न लाँघ सके,
मर्यादा की एक लकीर,
तभी समझ आता है,
कहाँ मिलेंगे अपने श्री राम!
सारी अतियों में जो डिगे नहीं,
अपने मूल्यों से हटे नही,
भाव-दुर्भाव सम एक रहे,
न प्रतिकार न कोई पलायन।
अपनी निजता से दूर रहें,
आवेश नही संयम है शक्ति,
बस एक सत्य-कर्तव्य निष्ठ,
हर सम-विषम में निश्छल-निष्चल स्थितप्रज्ञ।
बस यही है राम, यही राम!

दशरथ पुत्र के प्रति

रेखा मैत्र
यू.एस.ए.

राम!
तुम्हारी छवि दशरथ पुत्र-सी
जब-जब मेरे मानस पर
उभरती है,
जीवन के घोर अंधकार में
आशा की किरण
विद्युत-सी चमकती है।

सोच पाती हूँ इस हाड़-माँस के
पुतले के लिए
असम्भव नहीं
कुछ भी कर पाना।

माँ के अविचार से प्रजा का
अन्याय तक
देशमुख से दशरथ तक
सभी के अविवेक
अपने विवेक से पराजित करता
मेरे पास आ खड़ा होता है-
वह चेहरा।

तुम्हें मैं उसी राम में जब पाती हूँ
सम्भव हो पाता है मेरे लिए
तुम्हारी अनुत्तरित लीलाओं को
जीना।

क्षमा करना जो अवतार नहीं
माना
जानते हो तब मुझे-
बाली बध की त्रुटियाँ दीख पड़ती हैं।

सीता-सी सति के प्रति
तुम्हारा अन्याय बेध जाता है।
तब मैं ...
अवतार को क्षमा नहीं कर पाती।

बस! इसी से दशरथ पुत्र-सा
चाहा है तुम्हें!

वो राम राम कहलाते हैं

आराधना झा श्रीवास्तव
सिंगापुर

अवधपुरी से जनकपुरी तक
प्रेम की गंगा बहाते हैं
वो राम राम कहलाते हैं।
राम ही माला, राम ही मोती
मन मंदिर वही बनाते हैं।
वो राम राम कहलाते हैं।।

कर्तव्यों के पाषाण पे घिसते
कर्म का चंदन अर्पित करते,
मर्यादा की डोर पकड़
जो अपना धर्म निभाते हैं।
वो राम राम कहलाते हैं।।

मानव जीवन कठिन डगर है
सब संभव विश्वास अगर है,
मन पंछी, इस पंछी को
सही राह वही दिखलाते हैं।
वो राम राम कहलाते हैं।।

हार हुई, कभी जीत हुई
कभी धाराएँ विपरीत हुई,
जीवन नैया, राम खेवैया
भवसागर पार लगाते हैं।
वो राम राम कहलाते हैं।।

लौट आये पुरुषोत्तम राम

रेणु चन्द्रा माथुर
जयपुर, भारत

आनंदित माता कौशल्या
हर्षित हैं पिता दशरथ,
धन्य हुई नगरी अयोध्या
देखो जन्में हैं प्रभु राम।

मधुर मधुर वाणी बोलते
माता लेतीं बलैया धाम,
किलकारी स्वर हैं गूँजते
बाल क्रीड़ा करते श्री राम।

सुंदर सलोना रूप पाया
युवा हुए दशरथ सुत राम,
सीता ने स्वयंवर रचाया
पधारे लक्ष्मण संग श्री राम।

प्राण जाय वचन न जाय
लिया पिता वचन निभाय,
लक्ष्मण भी वन को चले
सीता संग चले श्री राम।

वनवास भी पूर्ण हुआ
रावण का वध करते राम,
देश दीपों से जगमगाया
लौट आये पुरुषोत्तम राम।

अकेला राम

प्रतिभा पुरोहित
अहमदाबाद, भारत

आज केवल
राम,
अकेला राम लड़ रहा है
खड़ा है मैदान में
हजारों मुँह वाले
रावण के साथ।

अत्याचारों, पापों के मुँह उठाए
रावण के चेहरे
नज़र आ रहे हैं
भ्रष्टाचार, हिंसा के अस्त्रों से
लैस।

जब कटता है
कोई एक सिर
तो उसकी जगह
दूसरा सिर, नागफनी के काँटे-सा
उग आता है।

राम के तीर
अत्याचारों के शरों को
बेध कैसे पाएँगे?
उसका नाभिकुण्ड जान कैसे पाएँगे?

आततायी जीवन का अन्त
श्री राम के तीरों से
जरूर होगा
कोई न कोई
विभीषण
जरूर पैदा होगा।

जो भेद जानता होगा,
उस प्रमादी रावण के
अन्त का रहस्य
राम को बता देगा
राम को अवश्य बता देगा।

राम तुम्हें हम नर मानेंगे

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

राम तुम्हें हम नर मानेंगे
भगवान यदि तुम्हें मान लिया है
अपने से दूर बिठा देंगे
माला-फूलोंके ढेर तले
तुम बस ईश्वर रह जाओगे
अर्घ्य चढाओ, शीश नवाओ
मंदिर में दर्शन कर आओ
आराध्य भले ही बन जाओ
आदर्श नहीं बन पाओगे।

भगवान बनाना सस्ता सौदा है
हम नर हैं वो नारायण है
इसमें तो सुविधा भारी है
नहीं कोई जिम्मेवारी है
क्या प्रश्न किया अपने से कभी?
वे नर बन धरती पर क्यों आये थे?
भगवान बने सब कर सकते थे,
दुष्कर जीवन फिर क्यों धारा था?
नहीं कभी कोशिश की हमने
क्यों कि, इस अंतर में तो धर्म समाया है।

राम तुम्हें हम नर मानेंगे
नर मानें तो सहज सुलभ हो
हर घट में दिख जाओगे
हर जन में राम समाया है।

अपने अन्दर के राम निकालो
अपने अन्दर के रावण को मारो
नर श्रेष्ठ बनो, नारायण नहीं
राम स्वयं मिल जायेंगे।

पूरे राम न संभव हैं
संभव नहीं, असंभव है!
एक रूप का एक अंश भी
यदि स्वयं में आ जाये
मानव श्रेष्ठ-सम्पूर्ण कहाओगे।

भक्त बनो तुलसी जैसे जिसमें रामत्व समाया है
आराध्य को आदर्श बनाया
रामबोला से तुलसी बन पाया।
राम तुम्हें हम नर मानेंगे
भगवान स्वयं मिल जायेंगे।

राम कथा

सुशील शर्मा
गाडरवारा (म.प्र.), भारत

चौपाई

राम नाम निर्मल शुभ मूला। जीवन तारण पावन झूला।।
भक्ति शक्ति मन के तुम स्वामी। कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी।।

कौशल्या सुत दशरथ नंदन। धर्म पुरंदर असुर निकंदन।।
चैत शुक्ल नवमी अति पावन। अवतारे प्रभु हिय मन भावन।।

भरत लखन शत्रुघ्न सुहावन। प्रिय भ्राता प्रगटे अति शोभन।।
अवधपुरी मुदमङ्गल गायन। वृष्टि सुमन सुर पुलकित तन मन।।

श्यामल गात रूप अभिरामा। नयन विशाल राम सुख धामा।।
मेघ समान श्याम तन धीरा। कोटि काम जनु धरे शरीरा।।

ठुमक ठुमक चलि तोतिल बोली। गिरत उठत सूरत अति भोली।।
गुरु वशिष्ठ गृह करी पढ़ाई। अल्पकाल सब विद्या पाई।।

विश्वामित्र यज्ञ के भूषण। हने ताड़का अरु खर दूषण।।

जनक यज्ञ शिव धनुष पुनीता। तोड़ सभा में जीती सीता।।
हर्षित सभा राम युवराजा। सुन हरसे सब अवध समाजा।।

कैकेई को पाठ पढ़ाया। दासी ने उसको भड़काया।।
राजा भरत राम वनवासा। वचन हार दशरथ मन त्रासा।।

लखन राम अरु कोमल सीता। छोड़ चले यह अवध पुनीता।।
सूपनखा रावण की बहना। चाहे रूप राम का गहना।।

लक्ष्मण ने तब नाक उतारी। भागी सूपनखा अधमारी।।
क्रोधित रावण मन भयभीता। धर मुनि रूप हरी तब सीता।।

विकल राम लछमन दुख भारी। खोई सीता सुभग सुनारी।।
राम सुजस गाते हनुमाना। ऋष्यमूक सुग्रीव विधाना।।

बाली मार अभय सुग्रीवा। राम अभय वर रूप सजीवा।।
सीय खोज अति कठिन कराला। आंजनेय बल विपुल विशाला।।

लाँघ सिंधु लंका सब जारी। सिय सुध पाय हरष सुख भारी।।
वानर कीश बरूथ सुनीला। बाँधा सेतु सिंधु नल नीला।।

भ्रात बंधु सह रावण मारा। लंका राज विभीषण धारा।।
हुआ अवधपुर अभय पुनीता। राम राज्य शुभ सत्य सुनीता।।

दोहा
राम सत्य संकल्प हैं, राम नाम गुण शील।
राम चरण हिय बस सदा, भजता राम सुशील।।

रामकथा

आशा अमित नशीने
राजनांदगाँव, भारत

तिथि अमावस माह कार्तिक, थी अयोध्या हर्ष में।
प्रज्ज्वलित थे अनगिनत तब दीप भारतवर्ष में।

जन्म हरि ने था लिया जग में असुर संहार को,
चल पड़े वनवास में तज राम जी परिवार को।
भाग्य ने बदली कभी क्या चाल मानव के कहे,
सिय लखन श्री राम की हिम्मत सदा बन के रहे।

रात दिन प्रभु रत रहे हैं राष्ट्र के उत्कर्ष में,
प्रज्ज्वलित थे अनगिनत तब दीप भारतवर्ष में।

अख्य में ऋषि मुनि मिले जो ज्ञान के भंडार भी,
दर्शनों से मात्र होता जीव भव के पार भी।
वध किए रावण दनुज का, जो धरा पर भार थे,
धर्म पर चलते रहे प्रभु, विष्णु के अवतार थे।

तेज अद्भुत नत हृदय है नाथ के आकर्ष में,
प्रज्ज्वलित थे अनगिनत तब दीप भारतवर्ष में।

रूप ले याचक दशानन सिय हरण कर ले गया,
काल की गति रुक गई, हरि नैन सावन दे गया।
नील नल सुग्रीव योद्धा साथ में हनुमान थे,
थे विभीषण भक्त राघव जो असुर संतान थे।

जो पराई चीज चाहे, कर्म वो अपकर्ष में,
प्रज्ज्वलित थे अनगिनत तब दीप भारतवर्ष में।

वो दिवस भी आ गया जब युद्ध में रावण मरा,
ज्ञान का सागर रहा पर दंभ से था वो भरा।
थे ऋणी प्रभु वानरों के, पूर्ण आयोजन हुआ,
देख कर सिय को वहाँ खुश राम जी का मन हुआ।

रीति रघुकुल की निभाए राम चौदह वर्ष में,
प्रज्ज्वलित तब अनगिनत थे दीप भारतवर्ष में।

क्रूरता की हद हुई जब लोग कालिख मल गए,
पतिव्रता सीता दुखी थी स्वप्न सारे जल गए।
सूर्य के वंशज न रूठें, आप त्यागा नाम को,
शील धीरज संग बस, सर्वस्व अर्पण राम को।

जानकी की प्रीति गर्वित त्याग चरमोत्कर्ष में,
प्रज्ज्वलित तब अनगिनत थे दीप भारतवर्ष में।

सिय रहीं गुरु की शरण में जन्म कुलदीपक लिए,
कुश व लव दोनों दुलारे धर्म का वंदन किए।
अश्व रोका यज्ञ का सारा अवध हैरान था,
वीर बालक कौन जो ये राम से अनजान था।

सिय जनक अभिमान, जीवन काटतीं संघर्ष में,
प्रज्ज्वलित तब अनगिनत थे दीप भारतवर्ष में।

राम के दरबार में लवकुश सुनाते हैं कथा,
मर्म था जो राम जी का और सीता की व्यथा।
सुन प्रजा लेगी परीक्षा, गोद धरती ध्यान की,
छोड़ कर प्रभु के भरोसे पुत्र दोनों जानकी।

धर्म का कर्तव्य का पर्याय था निष्कर्ष में,
प्रज्ज्वलित तब अनगिनत थे दीप भारतवर्ष में।

राम का अवतार न होता

विजयानन्द (बिजेन्द्र प्रताप तिवारी)
प्रयागराज, भारत

धरा पर पाप न होते, न अत्याचार ही होता।
सभी सुख से अगर होते, कोई संताप न होता।।
न रोती पृथ्वी, न देव, मानव ही दुखी होते।
तो सच में पृथ्वी पर, राम का अवतार न होता।।

अगर विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को साथ न लाते।
गुरु वशिष्ट से आगे की, शिक्षा दे नहीं पाते।।
ताड़का वध, सीता स्वयंवर, भी तो नहीं होता।
अयोध्या में ही रहकर, राम कुछ कर नहीं पाते।।

अगर अपयश कैकेयी, अपने सिर नहीं लेती।
दशरथ का मरण, विधवा स्वयं भी नहीं होती।।
भला कब राम-सीता, लक्ष्मण का वनगमन होता।
फिर राम की यह कथा, ऐसी भी नहीं होती।।

राम-सीता-लक्ष्मण, न जानते थे सच क्या?
सोने का हिरण, कभी कुलाचें भर नहीं सकता।।
मगर सब जान कर भी, अनजान बनना ही पड़ता है।
वरना राम-रावण युद्ध, ऐसे हो ही नहीं सकता।।

विभीषण, लंका छोड़, यदि रामदल में नहीं आते।
घननाद-रावण शक्तियों को, भला कौन बतलाता?
विभीषण के बिना क्या, राम लंका जीत भी पाते?
असंभव था, समंदर पार, भी वे कर नहीं पाते।।

लंका जीत कर भी, रामजी हारे हुए आते।
लक्ष्मण-सुग्रीव-हनुमान, हाथ पसारे हुए आते।।
अगर रावण, सीता को, सुरक्षित रख नही पाता,
तो लंका क्या अयोध्या तक, मन मारे हुए आते।।

धोबी तंज न कसता, तो सीता महल में होती।
परीक्षा कौन लेता राम की, कथा लवकुश नहीं होती।।
कवि कुटिया शरण में, राम के जाए नहीं होते।
फिर रामायण नहीं होता, ये रामलीलाएं नहीं होती।।

राम की पीड़ा

वेद व्यथित
फरीदाबाद, भारत

किस ने देखा राम हृदय की घनीभूत पीड़ा को।
कह भी जो न सके किसी से उस गहरी पीड़ा को।
क्या ये ही सेवा के बदले मिला राम के मन को;
आदर्शों पर चल कर ही तो पाया इस पीड़ा को।

राम तुम्हारा हृदय बज्रधातु से अधिक कठिन है।
पिघल सका न किसी अग्नि से ऐसी मणि कठिन है।
आई होगी बाढ़ हृदय में, आँसू ढुरके होंगे;
शायद आँख रुकी न होगी बेशक हृदय कठिन है।

मन करता है राम तुम्हारे दुःख का अंश चुरा लूँ।
पहले ही क्या कम दुःख झेले कैसे तुम्हे पुकारूँ।
फिर भी तुम करुणा निधान ही बने हुए हो अब भी;
पर उस करुणा में कैसे में अपने कष्ट मिला दूँ।

किस से कहते राम व्यथा मन में जो उन के उभरी।
जीवन लीला कैसे कैसे आदर्शों में उलझी।
इस से ही तो राम राम हैं राम नहीं कोई दूजा;
बाद उन के नहीं कोई आदर्श आत्मा उतरी।

दो साँसों के लिए जिन्दगी क्या-क्या झेल गई थी।
पर्वत से टकरा सीने पर सब कुछ झेल गई थी।
पर जब आँसू गिरेधरा बोझिल हो उन से डोली;
वरना सीता जैसी देवी क्या क्या झेल गई थी।

अवध में जन्मे रामलला

नीलू गुप्ता
फ्रीमोन्ट, यू.एस.ए.

चारों ओर धूम मची है, अवध में आए चारों ललना।
रामलला संग लखन भरत, शत्रुघ्न आए चारों ललना।।

कौसल्या दसरथ घर जन्मे, चारों सुन्दर ललना।
सोने के पलना रेशम की, डोरी झूलें चारों ललना।।

ताल बजें, मृंदग बजें, ढोल बजें शहनाइयाँ।
राजा दशरथ हुलसायें, और लुटायें अशर्फ़ियाँ।।

बलैयाँ लेती कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी रानियाँ।
काजल की डिबिया लेकर, दौड़ी आयीं सारी सखियाँ।।

डिठौना लगा, नज़र ना लगे, नाच रहीं सारी सखियाँ।
गली गली में सजती देखो, दीपों की अवलियाँ।।

राम नाम बड़ा सुखदाई, रामकृपा सब पर है छाई।
विश्वास राम में, राम हरेंगे, जग में विपदा है जो आई।।

अमर कहानी

चोवा राम वर्मा 'बादल'
बलौदाबाजार, भारत

जगतवंद्य श्री राम तुम्हारी अमर कहानी है।
पुरुषोत्तम रघुवीर तुम्हारा कहीं न सानी है।

राजतिलक होना था पर वनवास मिला तुमको,
कैकेई को तुमने कहा था माँ तू दानी है।

जूठे बेर शबरी के खाए अमृत फल माना,
गुह, केवट को गले लगाया कीर्ति सुहानी है।

सीता हरण हुआ था वन में नर जैसे रोया,
तेरी महिमा की महिमा भी किसने जानी है।

बंदर, भालू मित्र बने रावण को ललकारा,
रामसेतु अब भी सागर में अमर निशानी है।

निशचर कुल का नाश किया धर्म ध्वजा फहराया,
झूठ के सम्मुख सत्य ने कभी हार न मानी है।

श्री राम जीवन के सुर संधान

सुजाता प्रसाद
नई दिल्ली, भारत

श्री राम जीवन के सुर संधान
जन मानस के प्रतिष्ठा-प्राण,
सभ्यता संस्कृति के आधार
मर्यादा श्री पुरुषोत्तम राम।

जन जन हो जिनसे चेतन
अलौकिक चेतना हैं श्री राम
राम नाम है अमृत पियूष
जीवन दर्शन हैं श्री राम।

रोम रोम में बसे हैं राम
कण कण इनका ऋणि है,
नरोत्तम नारायण हैं श्री राम
श्री राम गौरव के हैं प्रतिमान।

रहते हैं परमेश्वर अवतार में
मानव मन में बसे हैं राम
सत्य और धर्म के साधक हैं
आस्था विश्वास के हैं प्रमाण।

नाम जिनका जीवन संजीवनी है
जीवन नैया के हैं जो पालनहार
त्याग समर्पण की प्रतिमूर्ति
हृदय दया का सागर सार।

लोकहित के रक्षक भगवान
मानस के राम भारत के सम्मान
श्रद्धा सुमन है अर्पित चरणों में
कोटि-कोटि प्रणाम जय श्री राम।

रामचंद्र जानते हैं

अभिनव शुक्ल
फोलसम, यू.एस.ए.

दुनिया चलाने वाले रामचंद्र जानते हैं,
कब कहाँ कौन सा चलन चलवाना है।

ठुमक ठुमक कब अवध में खेलना है,
कब तड़का की दुष्टताओं को मिटाना है।

राज पाट त्याग कब वन में भटकना है,
सागर को धनुष पे बाण दिखलाना है।

कब महावीर हनुमान जी को भेजना है,
धर्म को बचाने हेतु स्वयं कब आना है।

दुनिया चलाने वाले रामचंद्र जानते हैं,
कब कहाँ कौन सा चलन चलवाना है।

राम चरित्र

संतोष भाऊवाला
बैंगलोर, भारत

राम का चरित्र है, अगाध सागर,
डुबकी लगा कर, भर लो गागर।

गुण मोती-रत्नों का, अक्षय भण्डार,
लोक ध्वजा वाहक है, जीवन धार।

चैत्र शुक्ल नवमी को, चढ़ा सूर्य शिखर,
प्रकटे मानव देह धर, हुई धरा प्रखर।

गूंजे गीत राम जन्म के, अवध घर घर में,
हुए दीप प्रज्जवलित, सजे फूल नगर में।

ऋषियों के त्याग को किया प्रसार,
त्रेता युग में देव संस्कृति का विस्तार।

नारी के शील, अस्तित्व के रक्षक,
निशाचर मारे, जो थे नर भक्षक।

कौल, भील, किरात, निषाद के सखे,
प्रेमवश मात शबरी के जूठे बेर चखे।

सीता व्यष्टि है तो प्रजा समष्टि,
समष्टि हेतु परित्याग दी व्यष्टि।

प्रेम के प्रतिमान, पवित्रता के प्रवाहमान,
त्याग की प्रतिमूर्ति, अंतिम आसरा श्री राम!

दयालु राम

कमल किशोर सेठ
सीतापुर, भारत

पिता माना जटायु को, गले गुह को लगाया था,
प्रेम के वश में हो प्रभु ने, बेर शबरी के खाया था।
राम शुचिता की मूरत हैं, राम करुणा के हैं सागर,
सुमिर कर नाम जिनका, पार होता है भव सागर।
अवध का छोड़ सिंहासन, वनों को घर बनाया था,
पिता माना जटायु को.....

जब भी नाम लेता हूँ, नेह के अश्रु झरते हैं,
बिना माँगे कहे झोली, वो भक्तों की भरते हैं।
कि एक-एक रोम छिद्रों में, नाम उसका समाया है,
पिता माना जटायु को.....

शान्त हैं धीर हैं रघुबर, हृदय की जान लेते हैं,
किसके दिल में क्या है, श्री हरि पहचान लेते हैं।
तुलसी वाल्मिकी ने तभी, गुण उनके गाया है,
पिता माना जटायु को......

निश्छल भक्त को हनुमत, सरीखा प्यार मिलता है,
विभीषण को भी रत्नों, जड़ित संसार मिलता है।
डूबता राम सागर में जो, उनके पास आया है,
पिता माना जटायु को.....

सिया राम मय

शैल अग्रवाल
सटन कोल्डफील्ड, यू.के.

'सुंदर कांड पढ़ ले, डर नहीं लगेगा'
माँ समझाती थीं जब आधी रात में अचानक
नींद से पसीने-पसीने लथपथ मैं जाग जाती,
'रामायण पढ़कर तो देख, शांति मिलेगी'
हंसकर कहती कभी और कभी मनातीं रूठ जाने पर-
'हनुमान तो नहीं जो दिखा दूँ तुझे मैं सीना चीर। '

सिराहने आते ही कर जाती थी कितने राक्षस ढेर
यह किताब बचपन की उन मासूम डरावनी रातों से
बचपन था वो हमारा, जहाँ बात-बात में थी रामायण
शबरी खिलाती भगवान को जहाँ स्नेहवश झूठे बेर।

राम की करुणामयी सत्ता में जाने कितने हैं पात्र
राजा रानी महल संग वन का वो जटिल जीवन
पत्थर की अहिल्या, नदिया पार ले जाते खेवट निषाद
गरुण, जामवंत और जटायू के साथ सुग्रीव और हनुमान।

सभी राम के सहयोगी, सभी राम के साथ
सभी की मित्रता गर्व करने योग्य
एकोSहं और सर्वोSहँ का संदेश देते-
सबके थे राम और सबमें ही राम।

आज क्यों नहीं पढ़ी जाती पर घर-घर धूल खाती यह किताब
बड़े चाव से पढ़ी जाती थी जो कभी, कन्द में लिपटी पूजाघर में रहती
भावातुर माँ दादी नानी जिसे नित उठते ही माथे से लगातीं
मंगल भवन अमंगल हारी, हर खुशी, आपदा में
विह्वल हो-होकर गाती और दोहरातीं।

आज वो बड़े नहीं पर रामायण है
पर अब फुरसत नहीं
दौड़ती-भागती जिन्दगी को थमने और पलटने की
शब्दों में, मौन में, सुख-दुख और हार-जीत के
हर उद्वेलित कब और कौन में
पसरा रहता है बस एक सन्नाटा
प्रश्न पूछता, उत्तर तलाशता।

जय रामजी से लेकर हरे राम तक
और राम-राम से राम-नाम सत्य तक
जब साँस-साँस में ही रचे बसे पलपल रहते साथ
हे राम! क्यों फिर एक प्रथा एक उच्छवास ही
रह गया बस आज तुम्हारा यह पावन नाम।

कहाँ गई वो श्रद्धा, वो जादू, उठाओ फिरसे अपने धनुष बाण
क्या हम ही नहीं तुम्हारे या तुम ही नहीं रहे अब दीनानाथ।

सो गए क्या सुख शैय्या पर क्षीर-सागर में जाकर---
अपहरण, अराजकता, लूटपाट, हिंसा और भय का यह संक्रमण
भूले कर्म, कर्तव्य हम, तप-संकल्प, एक-एक त्याग तुम्हारा
किसी भ्रांति में मत रहना तुम
मंदिर भी जो बनवाए हमने तो
अपनी ही कीर्ति-ध्वजा फहराने को
आओ, याद दिलाओ वे सारे आदर्श और सपने
जिनके बलपर राक्षस ही नहीं, खुद को भी कभी तुमने जीता था
वचनों की वह प्रतिबद्धता, कितनी सहजता से जिन्हें निभाया था
राक्षसों को मारना तो आसान था पर गर्भवती सीता को छोड़ा था।

आज वो न्याय नहीं
आपसी सम्मान और समता का भाव नहीं
अपनों पर अपनों को ही अब विश्वास नहीं
रिश्तों का अर्थ रह गया बस गूढ़ आघात
क्या मार सकोगे फिरसे वे राक्षस
द्वारे-द्वारे करते जो अट्टाहास खड़े अदृश्य!

प्रसंग फिर से वही सोने की लंका और सोने के मृग का ही तो
सुरसा के फैलते मुख और सूपर्णखां की कटती नाक का ही तो
जा बसे अब दूर बेटे तजके घर-घर में बूढे माँ-बाप
महलों के सपनों में खोई सीता भी अनुगामिनी नहीं आज
सूनी आखें रोती नही अब श्रापित है अपना लोलुप समाज।

विश्वास में रही ना ताकत, ना ही प्रेम में वह साहस
समरथ को जग गोसाईं, ढोंगियों से भर चुका समाज
कहाँ वो पुत्र जो त्यागें पिता के वचनों पे राजपाट
कहाँ वो पिता जो पुत्र वियोग में तज दे प्राण
लखन-से भाई नहीं जो भाई के दुःख में देवें साथ।

प्रेम प्रतीत के बलपर ही तो कपि कीन्हो दुर्गम काज
पर्वत उठाए हाथ में, लियो समुन्दर लांघ
प्रेम प्रतीत के बल ही तो बन-बन भटकी थी जानकी
भरत ने राखी थी भक्तिभाव से कुल की साख।

कथा ये प्रेम और त्याग की, सेवामय विश्वास की
गौरव पाते जिससे मानव, बनती संस्कृति व संस्कार
कथा शौर्यभरे परमार्थ की, जोड़े रखे जो बिखरा समाज
'प्रबसि नगर कीजै सब काजा हृदय राखि कौशल पुर राजा'
समदर्शी थे गुरु गोस्वामी सांची शरण जो दीनि बखानी
'सिया राम मय सब जग जानी करहु प्रणाम जोरि जुग पानि। '

जीवन का मर्म

सरोजिनी नौटियाल
देहरादून, भारत

राम कुछ न कहेंगे
वैसे भी राम सुनते अधिक हैं
सुनते हैं, देखते हैं और
हमेशा मान जाते हैं
आहत राम नहीं, जग होता है
आखिर कभी तो पूरा हो-
राम का वनवास!

सदियों का वाद-विवाद
आंदोलनों के दौर
झगड़ों का उन्माद
न्याय की महीन चाल
प्रमाणों का इतिहास
इतिहास की विवेचना
विवेचना का छल
तर्कों की वितंडा
षड़यन्त्रों का अन्तर्जाल...

रामनवमी है, विजय दशमी है, दीपावली है
रामसेतु है, लंका भी है
पर, 'राम हैं? ' पता नहीं
सचमुच थे? या फिर कोई मिथक?
सुनते-सुनते पक गया था समय
कुतर्कों का मवाद बहता रहा...
बहुत कुछ सड़ता रहा...

आग थी कि सुलगती रही
समय के हर दौर में जलती रही
इतिहास बदलता नहीं
सत्य दबता नहीं
राम कथा कोई नशा नहीं है
न विश्राम किसी वातानुकूलित कक्ष का
न विलासिता की शहनाई
न किसी कल्पना की परछाई
यह एक संघर्ष कथा है
कौशल्या नंदन भगवान राम की
ऐश्वर्य में त्याग
शौर्य में क्षमा
बल में विनय
भ्रम में दृष्टि
धैर्य में शक्ति
बैर में धर्म
वैविध्य में समन्वय
प्रकृति में न्याय...

पीढ़ियाँ गुजर गईं
तब हुआ अवतरण
मान्धाता हुए, रघु हुए -
एक से बढ़कर एक
किन्तु वे राजा थे प्रतापी
भगवान नहीं
लोक चेतना, लोक निर्णय, लोक धर्म -
भगवान तो बस मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं!

राम कोई वाद नहीं
राम कोई संप्रदाय नहीं
राम कोई जाति नहीं
कोई उपासना पद्धति नहीं

राम केवल राम हैं
कबीर के राम
तुलसी के राम
बापू के राम
जगती के राम!
राम हैं - जीने का धर्म
राम हैं - जीवन का मर्म।

लोगों के कष्ट मिटाने को

आलोक मिश्रा
सिंगापुर

लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
धर्म का मान बढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

ज्ञान और ध्यान ग्रहण करने को,
गुरुकुल अंगीकार किया।
आदेश मिला जब-जब गुरु का,
वह कार्य शीघ्र संपन्न किया।
यज्ञ-विघ्न करते दानव का,
चुटकी में संहार किया।
ऋषियों का मान बढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

तिरस्कृत हुई अहिल्या को,
जन-मानस में सम्मान दिया।
पूर्ण स्वयंवर की शर्तें कर,
जनक सुता से ब्याह किया।
आदेश मिला माँ कैकेयी का,
दण्डक वन प्रस्थान किया।
नारी का मान बढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

पितृ वचन अक्षुण्ण रहे,
त्याग मुकुट, वनवास लिया।
महलों के राजकुमारों ने,
धारण सन्यासी वेश किया।
परिवार संजोये रखने को,
निज पर कष्टों का भार लिया।
त्याग का पाठ पढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

मुस्कान मधुर, मीठी बोली से,
सबके मन को जीत लिया।
दानव-राक्षस के चंगुल से,
जन-मानस को मुक्त किया।
गाँव-नगर के लोगों में,
जन-चेतन का विस्तार किया।
निर्भयता का मंत्र बताने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

हनुमान, सुग्रीव को संग लिवा,
वानर सेना का गठन किया।
वानर थे संख्या में कम पर,
उनमें उत्साह अपार भरा।
काम असाध्य लगा लेकिन,
युक्ति से सागर पार किया।
संयम का पाठ पढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

विस्तृत सेना थी रावण की,
लघु से दीर्घ परास्त किया।
युद्ध कठिन में रावण को,
मृत्यु के घाट उतार दिया।
वर्षों से बिछड़ी सीता को,
सम्मान सहित स्वीकार किया।
नीति का पाठ पढ़ाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर प्रभु श्री राम आये।।

असंख्य यहाँ अब रावण-बाली,
जनता को उत्पीड़ित करते।
लूट-पाट, चोरी के धन से,
अपनी-अपनी तिजोरी भरते।
नारी हुई असुरक्षित यहाँ अब,
चोर उचक्के निडर हैं फिरते।
धर्म का मान बढ़ाने को,
धरती पर फिर प्रभु राम आओ।।
लोगों के कष्ट मिटाने को,
धरती पर फिर प्रभु राम आओ।।

परिधि

सरोजिनी नौटियाल
देहरादून, भारत

हे राम!
तू अपनी परिधि से उठ प्राणिमात्र में व्याप्त हो गया
वन-वन भटका पर सबसे तेरा तादात्म्य हो गया
तू निषाद को बंधुत्व का सम्मान दे चला
केवट से याचना कर उसका दैन्य हर चला
शबरी के बैर चख तूने स्नेह के मापदंड को असीम कर दिया
खग-मृग को निज व्यथा सुना करुणा से वसुधा का अभिषेक कर दिया
सुग्रीव-जामवंत तुझमें एकात्म पा धन्य हो गए
देखते ही देखते मित्रता में वे तेरे तुल्य हो गए
रक्षा में जानकी की जटायु ने प्राण त्यागे
कृतज्ञता से भर तूने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए
भक्ति में तेरी महावीर तुम सम श्रद्धेय हो गए
स्नेह-सागर की लहर बन तुझ में ही लय हो गए
शत्रु-भ्राता को भी तुमने हृदय से लगा लिया
शरण दी, सम्मान दिया, लंकेश फिर बना दिया।

हे राम!
तूने एक विश्वव्यापी संवेदना को छुआ था
तेरे सद्भाव में धरती-आकाश एक हुआ था
तूने प्रेम और करुणा से जगती के सारे भेद मिटा दिए
किस-किस से, अहो, मित्रता के संबंध निभा दिए
फिर आज तेरे नाम पर यह हाहाकार क्यों
तेरी ही जन्मस्थली पे यह चित्कार क्यों
मानव अपनी परिधि में इतना सिमट क्यों गया
इतने सारे वर्गों में, हाय! बँट क्यों गया?

राम

वंदना मुकेश
वॉलसॉल, यू.के.

सैकड़ों रश्मियाँ निज रूप बन बिखेरता,
ज्ञान-पुंज स्रोत है यह या सूर्य ही चमक रहा।

समाज के विकास की मशाल ले चल रहा,
अक्षरों का ज्ञान हो, मनुष्य का सम्मान हो।

अभाव में भी भाव हो, परहित सहज स्वभाव हो
उस मार्ग पर जो चल रहा, प्रणम्य वह, प्रसन्न हो,
जो कर्म-काव्य लिख रहा।

हवा का रुख बदल के, जो कालिखें मिटा सके
श्रांत क्लांत वीर में जो, लालसा जगा सके।

बन के सहज कबीर-सा जो रूढ़ियों से भिड़ सके
राम बन जन-जन में जो, सत्य-प्रेम भर सके।

परदेस में अवदान दे, जो लौट आया गाँव अपने
जो दीप बनकर तम हरे, कर शंखनाद गाँव में।

जो मिला जग को दिया, समस्त ऋण चुका दिया
जीवन उसी का धन्य है, प्रणम्य है, प्रणम्य है,
वह युगपुरुष प्रणम्य है।

मर्यादा पुरुषोत्तम

मनजीत कौर "मीत"
गुरुग्राम, भारत

कण-कण में रमिया है जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

प्रिय दर्शन ज्यूँ चंद्र सुहावे
क्रोध कालाग्नि बन जावे
शील क्षमा धरा सम होवे
धीर गम्भीर हिमाचल वो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

शस्त्र धारे जब रघुनंदन
आर्त नहिं कोउ करुण क्रंदन
सुख समृद्धि सर्वत्र व्यापे
रोग संताप मिटावे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

तनिक अहम नहि हृदय साजा
सहज सरल सहृदय राजा
प्रेम सहित मिले पुरवासी
लागे आपनेहुँ सब जन को
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

दशा दिशा प्रजाजन लाखे
शासन काज गुप्तचर राखे
नियमित देत खबरिया सारी
पत्नीव्रत इक राखे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

राम राज न प्रजा दुखारी
क्षमाशील प्रभु आप मुरारी
अत्याचार करे आतताइ
ताड़का मारीच मारे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

औरन दुख प्रभु आप दुखारी
पीर हरे जन करे सुखारी
आपन दुख महि वज्र समाना
हृदय सुकोमल पर दुख जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

वापस अनुज सिया संग आए
चौदह बरस वन माहि बिताए
शीश गुरू आए प्रथम निवाए
कृपा गुरु की बतलावे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

उल्टा क्रम जीवन अपनाये
छाड राज प्रथम वन जाये
दीन हीन विपन्न दुख जाना
राज भोग सारे छाडे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

कोल किरात भील जन जाति
करे संगठित औ संस्कारित
वानर रीछ सब अंग लगाई
दशशीश समूल विनाशे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

जो जन शरण प्रभु महि आये
प्रेम सहित सभी अंग लगाये
वैरी मीत नाहीं विचारे
शरणागत वत्सल नित है जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

राजा रंक नहि भेद बखानो
निर्धन धनी सब एकहि जानो
निर्बल सबल भेद नहि राखे
सामाजिक विषम मिटावे जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

छाड भोग त्याग अपनाये
जीवन मूल्य प्रभु सिखलाये
नृप परिभाषा बदली जग महि
राजा नाहीं, जन सेवक जो
मर्यादा पुरुषोत्तम वो।

तो तुम राम बन जाओगे

संगीता अग्रवाल
अहमदाबाद, भारत

राम का अस्तित्व है राम के वंशजों में,
यदि उस रामतत्व पर अपना अधिकार जता लोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

पिता का वचन निभाने को,
महलों का सुख वैभव त्याग दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

घोर दुखों की निमित्त बनी माँ को,
निश्छल मन से माफ कर दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

किसी केवट की सामान्य मदद के बदले,
उसकी जीवन-नैया पार लगा दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

श्राप से पीड़ित, युगों से पथराई,
किसी नारी का उद्धार कर दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

घायल जटायु के समान,
हर जीव जन्तु पर करुणा दिखाओगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

झोंपड़ी की प्रेम-प्रतीक्षा और जूठे बेरों को,
अद्वितीय सम्मान दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

गिलहरी जैसे छोटे से जीव के,
ह्रदय के भावों को भी अहमियत दोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

राक्षस रूपी सामाजिक बुराईयों से,
जन-मानस को उबार लोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

लाखों वेदना, व्यथा और चुनौतीपूर्ण जीवन में भी,
निर्विकार अवस्था को प्राप्त कर लोगे,
तो तुम राम बन जाओगे।

राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि जानकर,
राम-राज्य स्थापित करने के लिए राम-पथ पर कदम बढ़ाओगे,
तो तुम राम बन जाओगे ॥

राम तुम जलधार

शार्दुला नोगजा
सिंगापुर

राम तुम जलधार जिसमें, सजे मोती बूँद बन-बन,
दिव्य सीता गुण सुशोभित, चाँदनी सी खिली वन-वन।
एक तृण उपकार का फल, जीव को तारण-तरण दे,
तुम सदय हो मुस्कुराए, प्रश्न हमने किए तन-तन!

देख सीता वाटिका में, तार मन के झनझनाए,
कौन ये, मन खींचती क्यों? प्रश्न मन में उभर आए।
पर नहीं माँगा उन्हें न खुद बढ़े धनु खींचने को,
कौन सा विश्वास, संयम? तुम उठे गुरु के उठाए!

लखन को जीवन-ऋतु का, ज्ञान किष्किन्धा सिखाया,
जब मिले हनुमन्त-राघव, बोध मैत्री गुण कराया।
हर ऋषि के चरण बैठे, हर उपेक्षित को संवारा,
युद्ध में चिंचित विभीषण, धर्म-रथ तुमने बताया।

एक दिन पीनाक यूँ ही, खेल में सीता उठाती,
हाथ में ले एक तिनका, हो दशानन ओट जाती।
किंतु इतने प्रश्न नारी अस्मिता पर छोड़ती क्यों?
भूमिजा प्रतिवाद बिन क्यों, भूमि में निस्तार पाती?

ले अधूरा ज्ञान करते प्रश्न अब इतिहास से हम,
सांस्कृतिक आलोचनाएँ, आज फैशन का पराक्रम।
राम संयम, शक्ति सीता, निरुत्तर उत्तर कथा है,
जान लें परिप्रेक्ष्य पूरा, मिल सके तब सत्य तत्सम!

इतना ही सरल था क्या?

मीनाक्षी मैनन
होशियारपुर, भारत

इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?
विष्णु लोक त्याग, भू-लोक में ले अवतार
दो अक्षर का एक नाम हो जाना।
इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?

क्षत्रिय वीर, धीर-गंभीर
सहज सरल, मुख पे मोहक मुस्कान धरे।
जन-जन से प्रीत, फिर भी मोह से परे
'प्राण जाय पर वचन न जाए ' कह के
पिता के मन का संताप हर के
हर्षित मन से, वन की राह हो जाना।
इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?

निषाद संग निभा के सखा प्रेम की रीत
शबरी के जूठे बेरों पर गए बार-बार रीझ
हर एक भेद मिटा के, अनोखी जग में रीत चला के
शरणागत पे अपरिमित उदार हो जाना।
इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?

विभीषण को दिया अभय दान
सागर से की विनती अपना कुलगुरु जान
मर्यादा में बँधे, ऐसे राम के नाम के उदघोष से
सिंधु पे सेतु का निर्माण हो जाना।
इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?

परलोक जाते हुए रावण को मान दिया
विभीषण को लंकापति का नाम दिया।
अयोध्या आ के
जननी से पहले कैकेई की गोद में समा के
उसका अपराध बोध धो जाना
इतना ही सरल था क्या
राम हो जाना?

प्रजा के उलाहने का मान रखते हुए,
देखते रहें प्राण प्यारी सिया को वन मे जाते हुए;
राजा की मर्यादा का नया इतिहास रच के,
"सिया वर राम" से वियोगी "राजा राम" हो जाना
इतना ही सरल था
क्या राम हो जाना?

मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर

शुचि 'भवि'
भिलाई, भारत

यूँ ही नहीं बसे हैं घर-घर,
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर।

बाल्यकाल से रहे विलक्षण
नीति धर्म में रमते हर क्षण।
अनुजों के हैं प्यारे भ्राता
क्रोध लोभ के दिखें न लक्षण।
जगपालक रघुपति जगदीश्वर
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर।

यूँ ही नहीं बसे हैं घर-घर,
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर।

मित्रों सा व्यवहार था जिनका
सेवक से भी प्यार था जिनका।
जामवंत कपिराज पवनसुत
सबका ही आभार था जिनका।

यूँ ही नहीं बसे हैं घर-घर,
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर।

रामराज्य की जग दे उपमा
धुन में जिनकी मन है जग का।
संयम और निष्ठा के स्वामी
पूंजी है बस जिनकी करुणा।
नीति न्याय है जिनका गहना
जग के पालक 'भवि' सीतावर।
यूँ ही नहीं बसे हैं घर-घर
मर्यादा पुरुषोत्तम रघुवर।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

रवीन्द्र कुमार दीक्षित
कानपुर, भारत

सिया ओर अंखियन की कोरों से लख कर,
घूँघट में अधरों की मुस्कान निरख कर,
गुरु चरणों में सादर भक्ति से शीश झुका कर,
श्री राम शिव धनुष तोड़ने को आतुर हैं।

पितृ-भक्त, आज्ञाकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम,
अयोध्या के राजकुंवर, हैं बनने वाले भावी सम्राट,
जनता के प्यारे, राजदुलारे, राज काज में चातुर हैं,
सिया-लखन संग, पितृ आज्ञा से वन जाने को आतुर हैं।

वानर सेना, हनुमान लखन संग, लंका पर चढ़ धाये हैं,
राक्षस कुल को धूल चटाकर साथ सीता को सादर लाये हैं,
अपने प्रभु के दर्शन पाने को अयोध्या वासी अति हर्षातुर हैं,
बाल वृद्ध नर नारी सब दीप-पर्व मनाने को आतुर हैं।

पवनपुत्र, बजरंगबली, हनुमंत महाप्रभु,
श्री राम के धीर, गंभीर, उपासक हैं,
भक्ति-रस में सर्वांग समाहित और समर्पित,
सियाराम की सेवा को, हर दिन हर पल आतुर हैं।

ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!

अशोक 'अंजुम'
अलीगढ़, भारत

जो स्वर्ग धाम के सुख छोड़े,
बन मानव धरती पर आये।
आदर्श नये स्थापित कर,
जग को उजले पथ दिखलाये।
बनकर सुत, पति, भ्राता, राजा,
निष्काम तुम्हीं हो सकते थे।
ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!
हाँ राम, तुम्हीं हो सकते थे!!

जो गुरु का यज्ञ पूर्ण करने,
ले धनुष-बाण चल पड़ता हो।
मर्यादा पालन करने को,
अंतस में वेग उमड़ता हो।
जो सिंहासन का अधिकारी,
काँटों के पथ को वरण करे।

वह धरा धन्य कैसे ना हो,
जिस जगह राम ने चरण धरे।
हों मूल्य मनुजता के वंदित,
वह धाम तुम्हीं हो सकते थे।
ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!
हाँ राम, तुम ही हो सकते थे!!

शबरी के झूठे बेरों को,
जी भर के मान दिया तुमने।
जो दलित, दुखी थे, पिछड़े थे,
उन पर भी ध्यान दिया तुमने।

बंदर, भालू थे शरणागत,
उनको सम्मान दिया तुमने।
जो हठी, घमंडी, पाखंडी,
उन पर शर तान दिया तुमने।
जिसमें रमता जन-जन का मन,
वह नाम तुम्हीं हो सकते थे।
ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!
हाँ राम, तुम ही हो सकते थे!!

हो बात त्याग की अगर कहीं,
तो नाम तुम्हारा ही आए।
हो अगर पराक्रम का चर्चा,
तो कौन राम को बिसराए।
हो जाय चरण-स्पर्श अगर,
पत्थर की अहिल्या तर जाए।
वह वाणी अमृत-तुल्य हुई,
जिसने भी तुम्हारे गुण गाए।
धरती के श्रेष्ठ चरित्रों का,
आयाम तुम्हीं हो सकते थे।
ऐ राम, तुम्हीं हो सकते थे!
हाँ राम, तुम्हीं हो सकते थे!!
ऐ राम तुम्ही हो सकते थे!!

राम एक चरित अनेक

मंगलेश मुजमेर 'मंगल'
भोपाल, भारत

'राम' एक तो, चरित अनेक हैं;
पर शिक्षाप्रद, ही प्रत्येक है!

शाश्वत सुख, शान्ति हेतु तो;
'राम-स्मरण', सच मे नेक है!

करना भव-सागर, है पार तो;
'राम-नाव' की, बडी टेक है!

परहित सरिस, धर्म नही भाई;
कहता 'राम' का, तो विवेक है!

'राम-चरित', गागर मे सागर;
जीवन-मूल्य, एक से एक है!

'राम-नाम' है, सत्य जगत में;
मरण-काल में, भजे हरेक है!

अति सबकी, बुरी है 'मंगल';
'राम-भक्ति' तो न, अतिरेक है!

राम कथा - श्री कर्म कथा

रविन्द्र कुमार धींग
कोलकाता, भारत

जो भी अवतारी हुए
कब कर्म पर भारी हुए,
राम कथा ही देख लो
सब कर्म से दण्डित हुए;
हम पढ़ेंगे इस कथा को
कर्म केंद्रित करते हुए,
और समझेंगे कि कैसे
श्री हरि भी शापित हुए।

स्वयंभू के तपोबल से
श्री राम रघुवंशी हुए,
अजा सुत के घर जनम के
राम जन जन के हुए;
एक शर के भटकने से
हा! नेमि भी शापित हुए,
आत्मज वियोग में तज के भूतल
दशरथ अहा! परलोकी हुए।

ब्रह्मा जी के कुल के दीपक
वेदज्ञ, महापंडित रावण हुए,
पुष्प सम शिव मस्तक चढ़ा कर
दशानन त्रिलोकी हुए;
सब सध गया पर काम ना साधा गया,
माया, नलकुबेर आदि से लंकेश भी शापित हुए;
दम्भ टूटा, कुटुंब छूटा
लंकापति अहा! रज-सम हुए।

गुरु वशिष्ठ से ज्ञान पाकर
जो अवध अधिकारी हुए,
एक क्षण में तज के सब कुछ,
श्री राम कानन प्रभारी हुए;
सुदर्शन के असर से जब काव्यमाता बेसुध हुई,
भृगु ऋषि से श्राप पा श्री हरि संसारी हुए;
कपिल मुख की चाह पर भी जब नारद कपि सम हुए,
तब चक्रवर्ती भरतवंशी भी वानर के आभारी हुए।

हर एक युग में जन्म ले कर,
कर्म सेवक श्रीहरि हुए;
द्वापर में गीता कही पर,
त्रेता में ही उदाहरण अति भारी हुए।

रावण रथी विरथ रघुवीरा

बशीर अहमद मयूख
कोटा, भारत

लड़खड़ाते सत्य के संकल्प के अंगद-चरण,
चढ़ गई है फिर कसौटी पर विभीषण की शरण,
आसुरी-उद्घोष करते हैं दशानन के दसों मुख,
युद्ध को ललकारते-हुँकारते सन्नद्ध सम्मुख,
चीखता है आज सरयू तीर, रावण हैं रथी।
हार मत जाना विरथ रघुवीर, रावण हैं रथी।।

धर्म-भाषा प्रान्त की ये भेदवादी घोषणाएँ,
ये स्वयं से ही स्वयं को तोड़ने की योजनाएँ,
कामना सिंहासनों की, सामने हैं स्वर्ण लंका,
संकटों से ग्रस्त है सम्मान रघुकुल के वचन का,
लिख रहे सब देश की तकदीर, रावण हैं रथी।
हार मत जाना विरथ रघुवीर, रावण हैं रथी।।

हो गए थे धन्य उस दिन राम जब आकर मिले,
कोल-भिल्लों के, किरातों के, निषादों के गले,
देखते हम देश की तरुणाइयों के शव जले,
राजपथ पर रथ अवर्णों के-सवर्णों के चले,
राम-सेना के पगों जंजीर, रावण हैं रथी।
हार मत जाना विरथ रघुवीर, रावण हैं रथी।।

मेघनादी अस्त्र से मूर्छित हुए भाई पड़े,
अट्टहासी भंगिमा लेकर दशानन हैं खड़े,
है हमें विश्वास, मन रामत्व से भर जाएगा,
फिर कोई हनुमान ले संजीवनी आ जायेगा,
हम पढेंगे मातृ-मन की पीर, रावण हैं रथी।
हार मत जाना विरथ रघुवीर, रावण हैं रथी।।

जड़ अहल्या सी शिला पाषाण से चेतन हुई,
सृजन का संकल्प लेकर राम जब तुमने छुई,
परम चेतन राम, तुम जड़ नहीं हो सकते कभी,
तुम किसी दीवार या मीनार के बंदी नहीं,
तुम कहाँ हो, प्रश्न है गंभीर, रावण हैं रथी।
हार मत जाना विरथ रघुवीर, रावण हैं रथी।।

संसृति सकल श्री राम की!

अमृत खरे
लखनऊ, भारत

संसृति सकल श्री राम की,
श्री राम संसृति सकल के!

श्री राम केवट के लिये,
श्री राम शबरी के हिये,
रमते जटायु की श्वास में,
सुग्रीव की हर आस में,
अन्तर सरल श्री राम का,
श्री राम अन्तर सरल के!

श्री राम भरत के त्याग हैं,
सौमित्र के अनुराग हैं,
हनुमन्त की संजीवनी,
श्री राम अवध, प्रयाग हैं,
प्रतिमा विमल श्री राम की,
श्री राम प्रतिमा विमल के!

श्री राम रघुकुल की प्रथा,
श्री राम सीता की कथा,
श्री राम के संकल्प में,
माता अहिल्या की व्यथा,
हैं प्रण अटल श्री राम के,
श्री राम हैं प्रण अटल के!

संसृति सकल श्री राम की,
श्री राम संसृति सकल के!

फर्क क्या है?

हरिहर झा
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

फर्क क्या है? शूल हों या फूल?
महल के सुख या वनों की धूल?

पिता का आदेश मंगल कामना
सौभाग्य के आगे बढ़े थे चरण।
राजतिलक छूटा तो क्या हुआ
अरण्य में होगा विचरण।

झूलना है जिन्दगी, आनन्द है,
सुख, विपत्ती, बीच में तू झूल।

अग्नि-परीक्षा मंच पर ज्यों स्वांग था,
भावना के मेघ छाये थे घने।
आज पत्नी-त्याग भी मेरे लिये
निराशा, कुंठा का कारण क्यों बने।

हर्ष और संताप में जो दूरियाँ,
ना दिखी, इस राम की क्या भूल

ज्ञान कम था कहाँ लंकाधीश में,
व्यर्थ के बस, दंभ का ही जोर है।
युद्ध रावण से किया जिसके लिये
त्याग सीता का, मिलन का छोर है।

विधाता की सृष्टि में दो अंग हैं,
आम मीठे, शूलयुक्त बबूल।

माँ सीता की आशंका

मधु शर्मा
बर्मिंघम, यू.के.

जब से मैंने उस रात यह स्वप्न देखा अनोखा सा,
स्वयं का दु:ख तब से लगने लगा कुछ ओछा सा।
वाल्मीकि-आश्रम में माँ सीता का वह वार्तालाप,
उनकी वह आशंका थी या वेदना भरा विलाप?

कह रही थीं:
मधु, यदि लव-कुश की जगह बेटी पैदा होती,
तो उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात रोती।

देवी-देवताओं द्वारा पूजे जाने वाले भगवान,
पति-रूप में मैंने पा लिये वही प्रभु श्री राम।
महलों का सुख छोड़ हँसी-खुशी वनों में गई,
अग्नि-परीक्षा देते हुए भी मैंने उफ़ तक न की।
परंतु बेटी के लिए ऐसे वर के सपने न संजोती,
उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात ही रोती।

मैं तो महान मिथिलादेश की राजकुमारी थी,
पिता जनक और माँ सुनयना की दुलारी थी।
अवध में मेरी ननद शांता को वह मान न मिला,
सोच में रहती बेटी को भी यदि सम्मान न मिला!
साँसों की माला के धागे में यूँ ही आँसू पिरोती,
उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात ही रोती।

उसे जनकपुरी सा ननिहाल कहीं और न मिलता,
रघुवंश जैसे राजघराने का कोई जोड़ न मिलता।
निस्संदेह वह सभी के नयनों की होती ज्योति,
उसके कदम कदम पर बिखरे होते हीरे व मोती,
परन्तु प्रजा की उँगली उठने के भय से न सोती,
और उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात रोती।

मैं चिंतित रहती कहीं बेटी को भी आराम न मिला,
पति होते हुए भी उनके चरणों में यदिस्थान न मिला।
अग्नि-परीक्षा दे-देकर आत्मविश्वास न खो बैठे,
निराधार लांछन सुन जीवन से निराश न हो बैठे।
क्या वह भी मेरी तरह यूँ ही दुखों का बोझ ढोती?
उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात ही रोती।

उसके भविष्य की चिंता में मैं दिन-रात ही रोती।

सोने का हिरन

प्रतिभा सक्सेना
फ़ोल्सम, यू.एस.ए.

काहे राम जी से माँग लिया सोने का हिरन,
सोनेवाली लंका में अब रह ले सिया!

अनहोनी ना विचारी जो था आँखों का भरम,
छोड़ आया महलों को, काहे ललचा रे मन!
कंद-मूल, फल-फूल तुझे काहे न रुचे,
धन वैभव की चाह कहाँ रखी थी छिपा,
सोने रत्नों की कौंध, आँख भर ले, सिया!

वनवास लिया तो भी मन उदासी ना भया,
कुछ माँगे बिना जीने का अभ्यासी ना भया,
मृगछाला सोने की तो मृगतिषणा रही,
तू भी जान दुखी हरिनी के मन की विथा,
ढल जाय तू ही मूरत न सोने की, सिया!

घर-द्वार का सपन काहे पाला मेरे मन,
जब लिखी थी कपाल में जनम की भटकन!
छोटे देवर को कठोर वचन बोले थे वहाँ,
अब लोगों में पराये दिन रात पहरा,
चुपचाप यहाँ सहेगी, पछतायेगा हिया!

काहे राम जी से माँग लिया सोने का हिरन,
सोनेवाली लंका में जा के रह ले सिया!

अशोक का उद्धार

सन्ध्या नायर
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

समीक्षक का प्रश्न:
हे अशोक के वृक्ष सघन,
कह दो मुझसे कुछ सजल नयन,
वैदेही जब तेरी छाँव रही,
कैसे बीते तुझ पर वो क्षण?

रावण सीता हर लाया था,
सारी सृष्टि थी उबल पड़ी,
हुआ प्रलय का नाच प्रचंड,
कैसे बीते तुझ पर वो क्षण?

रवि का क्रोध महान हुआ,
और चार पहर अंगार बहे,
झुलसे थे सारे जीवित जन,
कैसे बीते तुझ पर वो क्षण?

मेघ श्याम, जलधि गंभीर,
विद्युत ने खींची वक्र लकीर,
अश्व गति से सौ दूनी,
धरती की ओर क्रुद्ध गमन।
क्या तू काँपा था, साथ विपन्न?
हो जाता ठूँठ विफल जीवन।
कैसे बीते तुझ पर वो क्षण?

अशोक का उत्तर:
मैं जल जाता था निश्चय ही,
पर अद्भुत ऐसा खेल हुआ,
मुझ पुष्प विहीन तरु से ही,
सीता को इतना स्नेह हुआ,
पहली पल्लवी का आगमन,
सीता के कोमल अरुण चरण।
तन हरित हुआ और द्रवित था मन,
ऐसे बीते मुझ पर वो क्षण।
जो चंद्रप्रिया माधुर्य भरी,
सीता के निर्मल अंग पड़ी,
मेरे अहोभाग्य कितने,
मेरे पल्लव से छिटकी थी,
मैंने पायी रघुवीर शरण,
ऐसे बीते मुझ पर वो क्षण।
जब प्रेमाकुल हो वैदेही,
विरहगीत दुहराती थी,
उसके करुण काव्य से,
भीगी मेरी ही छाती थी,
प्रिया मिलन की धुन जब,
सीता सुध हर लेती थी,
मैं भी हो जाता प्रेम मगन,
ऐसे बीते मुझ पर वो क्षण।

जो मूक न होता तो कहता,
सीता मैं तेरा जाया हूँ।
हे मात! मैं निपट अभागा था
अब आँगन प्रिय कहलाया हूँ।
नाम अशोक तो था मेरा,
पर दुःख हरती थी तुम मेरे,
हर क्षण में मेरे तुम्हें नमन,
ऐसे बीते मेरे वो क्षण।
ऐसे बीते मेरे वो क्षण।

रामराज्य का आधार - सीता

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

रामराज्य की नींव को, तूने आधार दिया, हे सीता!
तुझ संग ही सियाराम हैं, वरना राम भी है रीता।

धन्य-धन्य श्री राम हुए, पाकर तुझ जैसी भार्या,
तेरे त्याग ने ही राम को, श्री राम बनाया, हे आर्या!

राम की परछाई तू, तू राम-राम रटती रही,
अपहृत होकर भी हे सीता! तेरी मर्यादा न लज्जित हुई।

तेरे पतिव्रत धर्म का, एक खंड भी न खंडित हुआ,
तेरी मर्यादा के आगे, मद रावण का खंड-खंड हुआ।

आर्यवंश की लाज को, तूने जीवन समर्पित कर दिया,
समा गई धरती के भीतर, कुल का नाम अमर कर दिया।

शीरोधार्य तूने हर व्रण किया, पर कर्तव्य च्युत न हुई कभी,
कष्टों की विभाबसु भी, तुझे कर्तव्य विमुख न कर सकी।

रामराज्य न सम्पूर्ण कभी, बिना तेरे त्याग के,
इसीलिए तो राम को, सियावर राम कहकर हैं पुकारते॥

सिया राम दर्शन

सरोज सिंह 'सूरज'
सतना, भारत

मिथिलेश लली जब बाग चली;
सखि साथहि गौरि मनावन को!

तबहीं रघुनायक आन पड़े;
चुन पुष्प रहे गुरु पूजन को!

प्रकटे जब पुष्पलता विकसीं,
प्रभु देख रहे विधु आनन को!

नयना-नयना मिलि गाँठ पड़ी;
इक डोर बँधी कसती मन को!

अति लाज भरी पलकें झुकतीं,
सिय छोड़ चलीं निज प्रानन को!

तब गौरि मनाय रहीं सिय जू,
अरु ध्यावत देव गजानन को!

रघुवीर वरें मम पाणि गहें,
प्रिय नाथ करो मनभावन को।

सुकुमारि सिया रघुवीर प्रिया,
बन साथ फिरी गिरि कानन को।

मातु जानकी

शैल अग्रवाल
सटन कोल्डफील्ड, यू.के.

उत्साहित था हर अयोध्यावासी
लेकर मंगल थाल दीप आरती
सजाए बन्दनवार नयनन् द्वार
लौटेंगे अब उसके सीता राम।

सीता राम, राम सीता दोनों अलग कब पर
एक दूसरे के पूरक समर्पित जीवन साथी
पर आते ही सीता फिर से निष्कासित वन को
क्यों विछुड़ जाती है नित नित यह सीता
क्यों संभाल नहीं पाते हम मातु जानकी को
सीता जिसके लिए राम दरदर भटके
रावण संग भीषण युद्ध लड़े?

क्या इतने कच्चे थे राजाराम कान के
या फिर झूठी-सच्ची हर अफवाह का
महत्व अधिक था प्रत्यक्ष प्रमाण से
अग्नि परीक्षा लेकर भी त्याग
वह भी गर्भवती पत्नी का!

बहुत उदास होता है मन जब जब सोचती हूँ
मर्यादा पुरुष राम, तुम्हारी पत्नी के बारे में
राजमहल से सीधे वन तक जो साथ चली
उसके साथ तुम राज महल में
चार कदम भी न चल सके?

दूसरे की पत्नी को तारने वाले राम
अपनी पत्नी के बचाव में क्यों
तुम्हारा दैवत्व सहायक नहीं हुआ
क्या दोष था उसके त्याग और विश्वास में
या फिर कुछ ऐसा है जो हम नहीं जानते।

पतिव्रता रूपवती गुणशीला
जिसके बिना तुम्हारा जीवन था रीता
खोने क्यों दी तुमने बारबार अपनी सीता
कभी वन से तो कभी मन से!

अग्नि से जो जीवित निकल आई
सामने तुम्हारे खड़ी धरती में जा समाई
और तुमने रोका तक नहीं,
कैसा दारुण विषाद रहा होगा उस पत्नी का
जिसके पति को उसकी परवाह नहीं!

दोष किसका था सोने के मृग का, राक्षसों का
जिनके संहार का माध्यम बनाया था तुमने इसे
या फिर विधि का जिसके आगे सब मजबूर।

या फिर कहानी यह मानस की
हमें कुछ और बताना चाहती है
सनातन आंतरिक द्वंद दर्शाती है,

राम-रावण को अंतस में संजोए
आदमी तो यह सदा से ही श्रापित
राजमहल तक में भी रहा भटका भूला
आत्मा का तेज संभाले न संभले इससे
छलते नित राक्षस लोभ मोह के
बर्गला जाते वचन ओछों के
हर लेते आत्मा को देह से छीन के।

सीता का जब जब होगा हरण
भटकेंगे राम तब तब वन वन
और सोने की लंका का दहन
पर बचता नहीं कुछ
न हार न जीत
रह जाती बस एक भटकन।
खुद की ही तलाश है शायद
यह मातु जानकी।

इसे भूल कर निष्काषित कर
खुद से ही हो जाते हम दूर
जीता सब कुछ हार जाते।

इस शक्ति को पाना
सहेजना-संभालना,
एक युद्ध निरंतर
बनवास और
तपस्या आज भी..

सीता की अपार शक्ति

निधि जैन
अहमदाबाद, भारत

श्री विष्णु जी की सहकार,
माँ लक्ष्मी की वे अवतार,
राजा जनक का कंठहार,
अयोध्या नगरी की पालनहार,
थी उनकी महिमा अपरंपार।

जिनकी जननी स्वयं भूमाता,
लक्ष्मण के अग्रज की ब्याहता,
विलक्षण लव कुश की माता,
श्री राम के हृदय में बसने वाली,
रानी वैदेही की छटा विख्याता।

प्रभु सान्निध्य की दरकार,
राजभोग को ठोकर मार,
कष्ट सहे अनगिनत प्रकार,
गृहिणी धर्म का दिया सार,
पूजता उन्हें सारा संसार।

मिथिला की राजकुमारी धीर,
वनवास की थीं वे राहगीर,
अद्भुत स्नेह वाणी का नीर,
मुखमुद्रा किंचित ही हो गंभीर,
ओज से जिनके मिट जाए पीर।

दंडकारण्य के हिंसक जीव,
जिनके समक्ष बन जाते दीव,
जिन्हें ढूँढने सेना भेजे सुग्रीव,
हनुमान के प्रभु की जो पीव,
रामायण की माँ ने रखी नींव।

दान धर्म करने को साकार,
कर बैठी लक्षमण रेखा पार,
सुमिरन करे जो शुद्ध विचार,
सिया मैया पर श्रद्धा अपार,
कर जाए वह भवसागर पार।

हर ले गया उन्हें रावण,
भेज के सोने का हिरण,
मारीच छल में था निपुण,
सीते!!! कराह ज्यों बिंध बाण,
जाना- नाथ संकट में प्राण।

मैथिली करे अनुज का आह्वान,
जग सारा ये प्रश्न करे नादान,
स्वर्ण हरिण का छल हुआ न ज्ञान,
बुद्धिविहीन! न जान इसे माँ का अज्ञान।

कुटिया सहित पुष्पक में बिठाया,
रावण अशोक वाटिका में लाया,
दनुजों असुरों का पहरा लगवाया,
प्रतिदिन प्रणय निवेदन लाया।

देख लंकेश, नैन फिराए,
तृण तत्क्षण राख हो जाये,
तोलुं अश्रुओं के खार से,
रत्नाकर भी मीठा कहलाए।

प्रजा मूर्ख पावन माता को,
अग्निपरीक्षा जब दिलवाए,
हाथ जोड़, क्षमा माँगने,
स्वयं अग्निदेव पधराये,
आत्मसम्मान की रक्षा हेतु,
मैया धरा में त्वरित समाए।

अंतिम पाती

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

मेरे प्रिय राम!
मैं जाने से पहले,
धरती में समाने से पहले,
देना चाहती हूँ,
तुमको संदेश,
तुम नहीं रखना मन में क्लेश।

तुम व्यथित नहीं होना कि
तुम दे न सके मुझे राजसी सुख,
वन में सहगमन तो
सौभाग्य था मेरा,
मुझे तो तुम्हारी संगति प्यारी थी।

प्रिय, तुम न करना ग्लानि कि
लंकापति ने किया मेरा हरण,
मैंने ही तो भेजा था,
तुम्हें लाने को मृग,
उसे पाने की आकांक्षा हमारी थी।

यह तो विधान था
असुर वध का
सच तो यह है कि
मेरी वाणी,
सृष्टि की पुकार थी।

प्रिय तुम न करना पश्चाताप कि
तुमने मेरी अग्नि परीक्षा ली,
मुझ पर न उठे उंगलियाँ,
इसीलिये लोक धर्म निभाना,
ही दुनियादारी थी।

प्रिय तुम न करना दुख कि
मुझे तुमने त्याग दिया,
आदर्श तुम जन मानस के,
राजधर्म निभाने की,
विवशता तुम्हारी थी।

तुम तोड़ धनुष मेरे हुए,
रावध वध कर छुड़ाया मुझे,
फिर भी मिला विरह तो,
यह नियति हमारी थी।

प्रिय मत होना व्यथित विछोह से,
इस लोक में हमारी,
इतनी ही भागीदारी थी।

मैं सौंपती हूँ,
पुत्र तुम्हारे, तुमको,
यह अंतिम देयता हमारी थी।

प्रिय मेरी बस एक ही आकांक्षा है,
रहूँ सदा तुम्हारी,
जैसे अब तक मैं तुम्हारी थी।

तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हो,
सहे तुमने बहुत कष्ट,
मैं तुम्हारी अर्द्धांगिनी,
तो मुझे आग में तपना ही था।

काँटो पर चलना ही था,
नहीं चाहती थी कोई कहे,
यह तो अबला नारी थी।

इसीलिये तो
मेरे प्रिय राम,
मैं जाने से पहले,
धरती में समाने से पहले,
देना चाहती हूँ,
तुमको संदेश,
तुम नहीं रखना मन में क्लेश।

एक तिनके का सम्बल

सौरभ

कटरा, भारत

एक तिनके का सम्बल ले कर के,
सीता ने ललकारा रावण को,
दसशीश का ज्ञान, महाबल भी,
सनय छिन्न हुआ, उस क्षण त्यों।

क्या महिमा थी, एक दूब तनी,
दूब में क्या सिया का बल था?
या अधीर घने सीय मन भीतर,
तिनके पर विश्वास, अटल था?

कस कर के धरती ने पकड़ा,
या दूब ने जकड़ा धरती को,
एक दूजे के पूरक बन बैठे,
सबल एक दूजे में दिखते वो।

माता ने, नन्ही सी जड़ को ही,
हाथों में ले कर के, प्रण साधा,
दस शीषों के, महाकाल के,
विनाश काल को रण साधा।

हो-हो हा-हा कर हुंकार हुई,
गरजा बादल प्रतिवाद हुआ,
अंतःआत्म से चित्कार उठी,
कण-कण से आहद नाद उठा।

लहरा करके दूब ने सिर ताना,
स्वाभिमान का ये भी स्वर जाना,
तर्जनी अँगूठे के, स्पर्श मात्र ने,
रावण के भीतर का डर जाना।

यह दूब ही थी, या संहारिणी?
ये क्षणिक काल तलवार हुई,
वह ओस छिटक कर माथे से,
सरपत सांघातिक तैयार हुई।

नस-नस से सूखा जाता था,
था ज्ञान हृदय से दूर बड़ा,
अभिमानी अतर्क से सींचा था,
जड़ पर, जड़ हो, रहा खड़ा।

रुधिर वाहिनियाँ संकुचाईं,
शिराओं में कम्पन सार हुई,
श्यामल तन पर नीली धारा,
रक्त सोख कर उभार गयी।

हृदय धमनियाँ धमक उठीं,
यह चीर ना दे, कटारी सी,
दूब धधक कर जला ना दे,
नस काटे ना यह आरी सी।

विवश दशा में दशाशीष,
त्रिविध त्रिताप में तपा हुआ,
अशोक वाटिका मुदित मन,
हर पर्ण सिया की सुता हुआ।

सुषुप्त था, हर एक जीव जगा,
जो जीव न था, वह भी जागा,
सीता के दूब का यह बल था,
कि सबल रावण का भी भागा।

वह सियामयी हो गया वहीं,
सौगन्ध राम की, खिल आया,
दूब का 'सौरभ' था सीमित,
प्रभु शरण, युगों का मिल पाया।।

शोक में डूबा अशोक

हरिहर झा
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

शोक में डूबा, मुझे
श्राप क्यों बजरंग जाने!
पल कटे, ज्यों युग गये,
राम का संदेश आने।

दशानन का आचरण,
हठीली जड़ की जकड़ में
छाँव माँ की मैं बना,
माँ के आँचल को पकड़ मैं।

फिर क्यों मुझे भक्षक समझ,
यूँ कुचला अंजनिपुत्र ने!
उर चीरती सी करवटें,
वसूला सूद हर अति ने।

मनुज अब तक सताते,
घायल सदियाँ ना माने।
साक्षी बना शील का,
हक मिला, सम्मान पाने।

जड़-प्रकृति का फूल हूँ,
शोभा बना था केश में।
जननी चेतन जगत की,
क्यों बंदिनी के वेश में!

फूल मेरे सुहाते,
पायल जिनके पाँव में।
समर्पण भाव, मेरा,
डूबे नयन आँसुओं में।

दुर्गत मिली, साथ
दुर्जन, का किया सद्भाव में।
लंकेश साधू छद्म,
सीधा सरल स्वभाव मैं।

संगत बुरी, वह आग ही,
झुलसा गई लपटें मुझे।
खुद घाव ही मलहम बने,
प्रतीत होता अब मुझे।

दर्शन मिले, हूँ धन्य मैं,
जगतजननी के बहाने।
प्राणरव यदि शेष रहे, मिले
राम दर्शन, राम जाने!

लाल देह लाल रंग, रंग लियो बजरंग

आराधना झा श्रीवास्तव
सिंगापुर

बानर मैं मूढ़मति, दोसर न मोर गति।
दया करो सीतापति, नयन तरसते।। १।।

राम नाम रहे जपि, मगन मगन कपि।
मुदित हृदयँ हरि, भाव हैं बरसते।। २।।

कृपा करो रघुबीर, हनुमत हैं अधीर।
कर जोरि राह देखि, दुख हैं पसरते।। ३।।

एक पल जुग भया, मिलिहिं न प्रभु दया।
भगत को अपने क्यों, प्रभु हैं बिसरते।। ४।।

राम हियँ सिय बसी, चमके ज्यों नभ ससि।
प्रभु बिनु हनुमत, सिसु से कलपते।। ५।।

चकित भए कपीस, सिय से माँगै आसिष।
केहि विधि भगवन, हृदयँ पिघलते।। ६।।

सुनु सुत बजरंग, सेंदुर के लाल रंग।
लाल लाल सेंदुर से, प्रभु मो से बँधते।। ७।।

व्यथित हृदय भए, सेंदुर से रंग गए।
राम राम राम मय, मनि से दमकते।। ८।।

जेहि विधि राम मिलिं, तेहि विधि मोहि भलि।
सोचि-सोचि हनुमत, हृदयँ हरषते।। ९।।

अरुधरि लाल रंग, रंग लियो बजरंग।
अंग अंग रंग डारि, प्रेम से छलकते।। १०।।

रुप देखि बोली सिय, होउ तुम राम प्रिय।
लाल रंग में हे सुत, रुप हौं निखरते।। ११।।

लाल देह लाल रंग, भगति को न्यारो ढंग।
भोले-भाले बजरंग, प्रेम भाव रंगते।। १२।।

राम प्रिय हनुमंत, जपि रहि साधु-संत।
मिलिहिं कृपा जे, राम नाम जपते।। १३।।

कलिजुग में महान, राम भक्त हनुमान।
संकटमोचन प्रभु, भगति में रमते।। १४।।

नाम ले जे हुनकर, प्रेम भाव बुनकर।
मन मोती चुनकर, सब पाप कटते।। १५।।

मंगल का दिन भाए, तेल सेंदुर लगाए।
शनि कोप से बचाए, संकट उबरते।। १६।।

जहँ जहँ रघुवीर, तहँ तहँ महावीर।
रोम रोम राम बसैं, राम नाम भजते।। १७।।

मन भक्ति भावना सो, करहिं जौं साधना तौ।
कहत 'आराधना' वो, पार हैं उतरते।। १८।।

राम नाम सुमिरन करत, अंजनिसुत हनुमान।
राम नामहि पार लगैं, राम हैं कृपानिधान।।

भरते हुए उड़ान

गजेन्द्र प्रसाद पण्ड्या
बाँसवाड़ा, भारत

अचरज में थे देव सभी
हनुमत सीता की खोज में,
कैसे होंगे पार समन्दर
इसी भयंकर सोच में;
बनी परीक्षक वह देखो,
सुरसा माता आई,
चकित हुई बजरंगबली की
देख बुद्धि बल चतुराई।

आशीष पाकर सुरसा माँ से
विदा हुए हनुमान।

तैर रहे हों सागर पर ज्यों
खोजें सीता माई
एक निशिचरी मारग में
आंजनेय को खाने आई
वध कर डारा पल में
जय हो, बली हनुमान।

लंका द्वार पे एक राक्षसी
राह के बीच और खड़ी थी
मूरख बड़ी, राह रोक कर
हनुमत से अकड़ी बड़ी थी
मुष्टि प्रहार से मुर्छित हो गई
जय हो, बलिष्ठ हनुमान।

रावण का महल, सोने की लंका
अंजनीपुत्र जब आये
विभीषण पूछे अचरज से
अंदर कैसे तुम आए
बोले राम का दूत हूँ मैं,
मैं कहलाता हनुमान।

पाई सिया सुध विभीषण से
और अशोक वन में आए
मात सिया के दर्शन करके
मुद्रिका वे दिखलाए
बोले राम का सेवक हूँ मैं,
है नाम मेरा हनुमान।

भरी सभा में
रावण ने हनुमान की पूँछ जलाई
तुरत उछलकर हनुमत ने
लंका में आग लगाई
अकड़ो मत रावण से बोले,
छोड़ दो यह अभिमान।

लछमन की मूर्छा को देख
भये व्याकुल रघुराई
द्रोण गिरि से लाओ संजीवनी,
वैद्य ने राय बताई।

मैं लाऊँगा, हनुमत बोले
भरते हुए उड़ान।

वीर हनुमान

सरस्वती मल्लिक
मैकिन्नी, यू.एस.ए.

तेरा पवनपुत्र है नाम, हृदय में बसे हैं सीताराम।
बोलो जय हनुमान हनुमान।।

सियाराम की जपे तू माला, बस में रहते राम कृपाला।
कण कण में बसे हैं राम, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

रामकाज का प्रण तूने ठाना, आशीष देते राम सुजाना।
हर घड़ी भजे निष्काम, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

दुर्गम काज सुगम कर डाला, सीता माता का दुख टाला।
दिये माता ने वरदान, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

रिद्धि सिद्धि के बन गये दाता, बने भक्तों के भाग्य विधाता।
तुम हो महावीर बलवान, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

बूटी संजीवनी ले आये, लक्ष्मण जी के प्राण बचाये।
तुम्हें हृदय लगाये राम, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

राम-रस का पी गये प्याला, छाती चीर के दिखला डाला।
तन मन में बसे श्री राम, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

राम मंत्र का पाठ पढ़ाया, विभीषण को राम मिलाया।
गुरुवर तुम बने महान, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

राम की महिमा तुम ने गाया, रावण मूढ़ समझ न पाया।
बनी सोने की लंका मसान, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

जो भी तेरा ध्यान लगाये, उसकी पीड़ा क्षण में जाये।
संकटमोचन है तुझ नाम, बोलो जय हनुमान हनुमान।।

पवनसुत मेरे तुम आधार

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

पवनसुत मेरे तुम आधार,
करो तुम मेरी नैया पार।

रोली अक्षत का तिलक लगाया,
शीश झुका तुम्हें करूँ प्रणाम।

मुझ पत्थर को पारस कर दो,
बहती नयनों से अश्रुधार।
कतिपय भाव मेरे हनुमंता,
करो प्रेमवत अब स्वीकार।

चौखट पे तेरी विनती करती,
सुन लो मेरी करुण पुकार।
तुम में शक्ति प्रभु श्री राम की,
दुःख भंजन मुझे दो तुम तार।

क्षुधा पूर्ति में निगला सूर्य,
कर दिया राहू को हैरान।
कभी भक्त कभी सखा रूप में,
करूँ जयकार करूँ मनुहार।

मातृ-तनय सम्बन्ध

रुचि श्रीवास्तव
लखनऊ, भारत

सीता माता, सुत हनुमान!
मातृ-तनय सम्बन्ध महान,
सीता माता, सुत हनुमान!

रामायण में दृश्य विलक्षण,
कष्ट जानकी का था भीषण,
दैत्य निकट करते थे विचरण।
लंका की अशोक वाटिका में
विधि ने यह रचा विधान।
सीता माता, सुत हनुमान!

वैदेही थीं विरहित, व्याकुल।
हनुमत बोले, तरु पर हिल डुल।
भय के तंतु तुरंत गये खुल।
सुत ने कंपित मातृ हृदय को
किया राम बल से बलवान।
सीता माता, सुत हनुमान!

फल खाने की आज्ञा मांगी।
परखे बुधि-बल, ममता जागी।
वर दे, मां ने शंका त्यागी।
मां सन्तुष्ट, किया तब सुत ने
लंका नगरी का संधान।
सीता माता, सुत हनुमान!

मातृ-तनय सम्बन्ध महान
सीता माता, सुत हनुमान!

सब भक्तन की नैया पार

प्रियंका पारो मोहन
सिंगापुर

लंका की धरती तो
कपि दहाड़ से हिल गई
हनुमान जी की गर्जना से
आते विनाश को भाँप गई।
चारों तरफ अफरा तफरी देख
चारों तरफ त्राहि त्राहि देख
रावण की लंका दहल गई ।
पहुँची खबर जो सिया माता तक
त्रिजटा की अँखियन से अश्रु धार बही।
लगे नाचने वृक्ष और पक्षी
अशोक वाटिका की पार मझधार हुई।
सिया माता जो राह निहारें
और प्रभु दर्शन की आस बढ़ी
देख सिया माता को दुख में
हनुमान दशा बेहाल हुई ।
राम राम कह लगे गरजने
राम कृपा तब लगी बरसने
भक्ति रूप चलत जीवन में
श्रद्धा की ही आस जीवन में
हनुमान संकट हरें सबहिं के
हनुमान कृपा, आशीष हो प्रभु की
भक्तन की नैया पार हुई॥

मांडवी की व्यथा

रेखा राजवंशी
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

मैं तुम्हारी सहचरी थी, प्रेमिका थी, संगिनी थी,
एक सुर में बंधी थी एक ही तो रागिनी थी।
दोष क्या था मेरा मुझे यह तो बताते नाथ?
मैं तो प्रेम रस में पगी, तुम्हारी कामिनी थी।

पूछने का नहीं अधिकार पर पूछती हूँ,
सीता भी तो राम संग हुई वनवासिनी थी।
तज मुझको, किस हेतु गए सोचती हूँ,
न थी अनुरागी वीतरागी, अर्धांगिनी थी।

माँ ने ममता के वश मांग राज-काज लिया,
तात के आदेश ने तुम्हें न वनवास दिया।
सच मानो रानी बनने की नहीं कामना थी,
सुख-दुःख साथ बांटे मांडवी की भावना थी।

सीता भाग्यशालिनी थीं पति साथ वन गईं,
त्याग मूर्ति उर्मिला भी पूजनीय बन गई।
दोष क्या था मेरा मुझे इतना बताते नाथ,
किस अपराध हेतु तजनीय मैं बन गई।

जानती हूँ मैं भी मर्यादा, धर्म, कर्म सब,
भोली हूँ, भली हूँ, अनभिज्ञ न रही अब।
स्वार्थ हेतु पति को करूँ न धर्म से विरत,
पथ भ्रष्ट करने का माँगा अधिकार कब?

दोष क्या था मेरा मुझे इतना बताते नाथ,
अपने हिय की व्यथा मुझे भी तो बताते नाथ।
मैं तुम्हारी सहचरी थी, प्रेमिका थी, संगिनी थी,
प्रेम रस से पगी हूँ तेरी ही तो कामिनी थी।

राम अनुज- भरत

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

विष्णु के पंचायुध में,
तुम तो सुदर्शन चक्र थे।
संग उनका भला,
कैसे धरा पर छोड़ते।
साथ ले अवतार,
धरती पर तुम्हें आना ही था।
बन अनुज दायित्व में,
हाथ बँटाना ही था।
मर्यादा पुरषोत्तम बने,
जब स्वयं ही प्रभु राम,
आदर्श भाई की भूमिका,
तुमको निभाना ही था।
मर्यादा पितृ आज्ञा की,
सहर्ष निभाई राम ने।
तुम कहाँ पीछे हटे,
आगे बढ़े सब त्यागने।
संकट समक्ष तुम्हारे,
उस क्षण में रहा बड़ा होगा।
एक ओर माँ की आकांक्षा,
एक ओर भाई खड़ा होगा।
हो विवश सुतमोह में,
सिर कलंक माँ ने लिया।
तुमने कर पश्चात्ताप,
पुत्र धर्म निर्वाह किया।
बँधे पितृ आदेश से,
वन राम को जाना ही था।
पर स्वेच्छा से त्याग का,
निर्णय तुम्हारा ही था।
रावण वध कर राम ने,
जग पर जो उपकार किया।
संभव हो पाया जब,
तुमने दायित्व निर्वाह किया।
राम कहाँ होते निश्चिंत,
जो तुम सा कुशल प्रशासक न होता।
अयोध्या के पोषण हेतु,
सक्षम कोई भरत न होता।
जग पूजे राम लखन को,
पर उनकी तुम शक्ति थे।
निर्विकार प्राप्य के प्रति,
तुम साकार भक्ति थे।
वन में तो संन्यासी,
अपना धर्म निभाते हैं।
पर महलों को पा कर भी,
कितने त्याग कर पाते हैं।
तप कर नंदीग्राम में,
रची संन्यासी की परिभाषा।
निर्वाह किया राजधर्म का,
रख भ्रात की चरण पादुका।
चले राम जब महाप्रयाण को,
विवश तुम तो थे नहीं।
तक्ष, पुश्कल रत्नों से धनी,
एकाकी तुम तो थे नहीं।
पर धरा पर आने का,
बस एक ही प्रण तुम्हारा था।
राम नाम स्थापित करना,
वह तुमने कर डाला था।
जब राम ही धरती छोड़ चले,
न कोई लक्ष्य तुम्हारा था।
ले जल समाधि तुम भी चले,
तुमको कुछ और न प्यारा था।।

कौन हो तुम माण्डवी

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

महल अट्टालिका पर विचरती,
विकल भाव हिये में है भरती।
मुख पर तेज लिए साध्वी-सा,
साधना किस उद्देश्य माण्डवी?

प्रदीप्त-दीप का थाल करों में,
विरह के गीत सजा अधरों में,
प्रीत-माधुर्य सजल नयनों में,
प्रतीक्षारत उद्विग्न माण्डवी!

सोलह शृंगार संकेत अनुराग,
विह्वल उद्वेलित प्रिय-विराग।
द्रुत पवन छेड़ती राग-बिहाग,
क्या हो तुम परिणीता माण्डवी?

कंगन की क्षीण ध्वनि सहचरी,
झाँझर की रुणझुण ठहरी-ठहरी।
निशा बनी कुटिया की प्रहरी,
निस्तब्ध दिशा परिणति माण्डवी!

दशरथ की होकर पुत्रवधू,
आभा ज्यों कांतिहीन विधु।
स्नेह-शुष्क विचलित दृगु,
श्वसुर-गृह की मर्यादा माण्डवी!

वैरागी से बाँध प्रेम की आशा,
महीन डोर से टँकी निराशा।
द्वन्द्व-अंतस विवशता की भाषा,
यशोधरा-सी परित्यक्ता माण्डवी!

भ्रातृभक्त की मात्र संयोगिनी,
एकनिष्ठ अद्वितीय वियोगिनी।
अपूर्व मार्ग तपस्विनी योगिनी
श्रद्धा-धैर्य-बलि मूर्त माण्डवी!

परिणय-बंधित मधुमास नहीं,
प्रियतम प्रणय-विलास नहीं।
निर्जीव निष्प्राण, श्वास नहीं,
नियति कटु विकास माण्डवी!

कर्त्तव्यपरायणता बही अकम्पन,
अर्धांगिनी संवेदना का स्पन्दन,
शोभित प्रशस्ति पावक कुन्दन,
समर्पित स्वामी वंदन माण्डवी!

उपजाने जग-अर्थ अमर दृष्टांत,
व्यथित स्वप्न सुशांत विश्रांत।
संयत कर निज तन-मन क्लांत,
धर्महित संबल आद्यांत माण्डवी!

द्वापर युग हो या हो त्रेता,
राम-लक्ष्मण, पुरुष विजेता।
स्मरण सुयश भरत प्रणेता,
उस योगी निवेदित प्रभा माण्डवी!

शाश्वत मूल्य वृद्धि, न ह्रास,
पात्र न भव-कालिक परिहास।
नारी गरिमा की परख उजास,
स्वर्णिम रच इतिहास माण्डवी!

राम-भरत सा भाई

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

भाई में छिपी छवि पिता की, सीख यही देती थी माई,
भाई-भाई का प्यार निराला, गूँज यही दी थी सुनाई।
अब राम-सा भाई कहाँ है, कहाँ भरत-सा अनुयायी,
किस दिशि अब बलराम हैं, किस रूप में हैं कन्हाई।

सुख-दुख साथ चखे पले थे, एक चदरिया, एक मलाई,
वही युगल अब झेल रहे हैं, सदियों की-सी कलुषाई।
युग बदला मन बदल गया, बदली संबंधों की गहराई,
अब उर्मिला-सा त्याग कहाँ, और सीता-जैसी भौजाई।

त्यागमूर्ति छोड़ यहाँ अब, अधिकार भाई का मारे भाई,
सहनशक्ति का छोड़ आश्रय, न्यायालय होती सुनवाई।
लोभ-प्रलोभ, छल-बल कपट, कुटिल मस्तिष्क है समाई,
आरोप-निरूप घृणित चालों से, जीत पाई कर जग-हँसाई।

ईश्वर! तेरे निर्मल जगत में, अंध रीत स्वार्थ ने चलाई,
भुला बचपन की मीठी यादें, ईर्ष्या-द्वेष बस रही दिखाई।
लहू का रंग क्या मिट जाता है, कष्टों की अग्नि भस्माई,
उपचार हेतु फिर शरीर बहेगी, दूजे के रक्त की अरुणाई।

ন্যায় -অবতার শ্রীরাম

কাজরী গুহ
কলকাতা, ভারত

অঙ্গীকার দশরথের কৈকেয়ীর সাথে
রাজত্ব দিবেন তুলি ভরতের হাতে
"আর রামের বনবাস?ভুলে গেলেন রাজন্?" শুধালেন রাণী
বিহ্বল রাজার কম্পিত স্বরে
উচ্চারিত হল বাণী।
"দিলাম বনবাস চৌদ্দবৎসর লাগি
হে রাম আমি তোমাকে
ক্ষমা করো মোরে,মোর অঙ্গীকার
লাগি,ক্ষম এ বৃদ্ধ পিতাকে।"
পিতার অঙ্গীকারে বদ্ধ রামের হইল জীবন সমর্পণ
রাম রাবণের লীলা,চলিতে থাকিল খেলা,হইল সীতা হরণ।
থামিল খেলা,হইল অনেক বেলা,সীতা করিলেন পাতাল প্রবেশ
রামের জীবনে রইলো না আর
কিছু, যন্ত্রণা শুধু নির্বিশেষ।
আজি ও মোদের মানব জীবনে
শুভ অশুভ দ্বন্দ
একে অপরের সনে সংঘাত
আর জীবন একটি ধন্ধ
তবু শ্রীরাম ন্যায়ের অবতার
ইহা সনাতন সত্য
তাইতো আমরা মানব প্রজাতি
এখনো তাঁহারই ভক্ত।

Dasharath's Oath

Kajari Guha
Kolkata, India

King Dasharath had taken an oath (to please his queen Kaikayee)
Bharat would be the heir to the throne
"And what about the exile of Rama? Did you forget that? O my Lord?" enquired the queen.
The bewildered king uttered in a trembling voice
"Hey Rama! You would be in exile for fourteen years.
Please forgive me! Forgive your old father for taking the oath (to please my wife)
Rama sacrificed his whole life to keep his father's promise
The show of Rama and Ravana with Sita Harana went on.
When the show stopped, it was high time.
Sita entered inside the Mother Earth.
Rama lost everything and
lived only to suffer the tortures of life.
Today also human life is infested with the turmoils of good and evil
We tussle with one another
Life is only a puzzle
Still it's the eternal truth that Sri Rama is
the incarnation of justice
That's why the humanbeings' regard
for Him is still in practice!

(This is the English translation of the poem on page number 139).

वीरवर लक्ष्मण

अमिता दुबे
लखनऊ, भारत

लक्ष्मणपुरी,
लखनावती,
और अब लखनऊ,
को
बसाने वाले
वीरवर लक्ष्मण!
तुम्हें प्रणाम।
यह प्रणाम इसलिए
क्योंकि
केवल तुम ही थे
राम के ऐसे अनुज
जिसे सौभाग्य मिला
श्री राम के सभी कृत्यों में सहयोग का।

तुम सम्मिलित थे
राम के प्रत्येक निर्णय में
फिर चाहे
रावण के सर्वनाश का हो
या सीता के निष्कासन का।
तुमने क्रोध किया जहाँ आवश्यक था
किन्तु नहीं किया विरोध
कभी श्री राम के निर्णय का
तुमने तो कभी नहीं किया विरोध
पिता के निर्णय का भी
राम तो पितृ-आज्ञा पालन हेतु विवश थे।
किन्तु, तुम तो स्वतंत्र थे
वाद-प्रतिवाद करने को।
तुम कर सकते थे संवाद,
उसी प्रकार जैसे तुमने
धनुष यज्ञ के समय किया था
साक्षात् रुद्र के अवतार परशुराम जी से।
जिनके क्रोध से महापराक्रमी भी डरे हुए थे।
और, तुम बिना भयभीत हुए
उनसे तर्क-वितर्क कर रहे थे।
तुम!

जानते थे
श्री राम के जीवन का उद्देश्य
इसलिए अनुज का दायित्व
पूर्ण निष्ठा से निभाया
इसीलिए
राम के साथ सीता है सदा तो
लक्ष्मण भी संयुक्त हैं हर जगह!
हम भाग्यशाली हैं
जो ऐसे नगर में रहते हैं
जिसका नाम तुमसे जुड़ा है
वीरवर लक्ष्मण
लक्ष्मणपुरी, लखनावती और लखनऊ!

कैकई

सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'
गुना, भारत

धन्यवाद माँ कैकई! दिया इन्हें बनवास।
निकल महल से आ गए, राम हमारे पास।।

नहीं छोड़ते राम यदि, अपना घर-परिवार।
कैसे होते लोकप्रिय, करते सिंधु न पार।।

बनवासी कर राम को, सिद्ध संत के काम।
सही पीर वैधव्य और ली अपकीर्ति नाम।।

चौदह के बनवास ने, बना दिया भगवान।
सिर्फ अवध के वास से, क्या मिलता सम्मान!!

दिखे राम के काम भी, तेरे कारण मात!
फिर भी जन समझे नहीं, यह अचरज की बात।।

घर में रहने को नहीं, होते हैं अवतार।
देश न समझा आज तक, कैकई वर का सार।।

कवियों ने भी कैकई, के संग किया न न्याय।
वह कलंक सह बन गई, देश उद्धार-उपाय।।

राम-प्रेम-सर की रही, कैकई भी इक मीन।
उसका वह सुख ले गईं, माँ शारदा छीन।।

कैकई के वरदान वे, यदि हो जाते त्याज्य।
तो फिर होता देश पर, रावण का साम्राज्य।।

कैकई के वरदान से, हुआ देश सुखधाम।
गृह में रह बनते नहीं, राम प्रभु श्री राम।।

रक्षक थे वे राष्ट्र के, कैकई के वरदान।
दैत्यों के कारण बहे, अश्रुसिंधु जलयान।।

समझा क्यों कोई नहीं, कैकई माँ की पीर।
उसके वर ने कर दिए, सिद्ध राम 'रघुवीर'।।

उन वरदानों में छिपा, हम सबका सौभाग्य।
फिर भी सहती दुर्वचन, कैकई का दुर्भाग्य।।

नहीं माँगती कैकई, यदि वे दो वरदान।
सहता रहता आज तक, यह भारत अपमान।।

कैकेयी माँ

आशा मोर
पोर्टऑफ स्पेन, त्रिनिदाद और टोबेगो

वक़्त इंसान को बहुत कुछ सिखा देता है
वक़्त इंसान से बहुत कुछ करा देता है!

कभी उसे देवता, तो कभी हैवान बना देता है
कभी उसे यश, तो कभी अपयश दिला देता है!

वक़्त ही था जिसने, राम को वनवास दिया
और कैकई को माता से, कुमाता बना दिया!

देवताओं की खातिर, थे राम गए बन को
पर कलंक का टीका लगा, माता कैकेयी को!

राम को भी अपार स्नेह करती थीं, माता कैकेयी
फिर क्यों बहकावे में मन्थरा के, वह आ गई!

बेचारी मन्थरा की भी नहीं थी गलती वहाँ पर
सरस्वती माँ आकर बैठी थीं, उसकी जिह्वा पर!

हुआ था राम का जन्म, रावण वध की ख़ातिर
न जाते वह वन, तो होता कैसे उद्देश्य हासिल!

श्रवण कुमार की हत्या से, थे दशरथ जी श्रापित
पुत्र विछोह से मरने के लिए थे, वे अभिशापित!

भरत राजा बने, कैकेयी ने था अपना वर मॉंगा
कौन सा जुर्म था, कि उसने पाया अपयश इतना!

कौन सी माँ नहीं चाहती, भलाई अपने बेटे की
यह तो माँ की ममता है, व सुलभ चेतना नारी की!

पर रखता नहीं कोई, अपनी बेटी का नाम कैकेयी!
वे शायद नहीं समझ पाये, जो उस पर गुज़र गई!

वह सौंदर्य से भरपूर, विदुषी थी, योद्धा थी
अपने पति की प्यारी, सहयोगी, अर्धांगिनी थी!

समझाये कोई मुझे, होता है फिर ऐसा क्यों
दुनिया में कैकेयी नाम, अब भी श्रापित क्यों?

मंथरा की पुकार

मनीषा कंठालिया
नैरोबी, केन्या

खड़ी सोचती आज मंथरा ये क्या मन में समाई,
घाव हृदय में कैसा आया कैसी बात बनाई।
निमित्त मुझे बना सृष्टा ने अपनी ही थी मनाई,
फिर बताओ क्यूँकर मैं इस कारागृह में आई?

मेरे जीवन में प्रकाश की किरण कहीं भी ना थी,
ना रूप लावण्य मिला और अथाह संपत्ति भी ना थी।
एक आस कैकयी थी जिस से मिलता था सम्बल,
उसमें भी दुत्कार लाड़ के सम्मिश्रण का था बल।

अपना कहकर भी रानी की दृष्टि में रही पराई,
फिर बताओ क्यूँकर मैं इस कारागृह में आई?

वागेश्वरी ने वाणी पर ऐसा अधिकार जमाया,
प्रज्ञा पर मानो अमस का अंधकार था छाया।
विरंचि ने वृहद कारज था मुझसे करवाया,
अवतारित मधुरिपु को उनके गंतव्य तक पहुंचाया।

जग हितकारिणी होकर विष का प्याला ही मैं पाई,
फिर बताओ क्यूँकर मैं इस कारागृह में आई?

कथा राम की लिखने वाले तुलसी जरा बता दो,
पश्चात्ताप करने की मुझको कोई वजह सुझा दो।
मेरे वचन कैकयी न सुनती राम क्या वन को जाते,
दशानन की मृत्यु का कहो कैसे वृतान्त सुनाते।

घृणा नहीं मीठे बोलों की अभिलाषा में लाई,
फिर बताओ क्यूँकर मैं इस कारागृह में आई?

माता-सुत का स्नेह

शशि जैन
लखनऊ, भारत

माँ कैकेयी और राम की,
प्रीति बड़ी ही अद्भुत थी।
फिर वनवास दिया क्यों माँ ने,
सारी नगरी विस्मित थी।।

ऐसा दुष्कर वर क्यों माँगा,
रानी ने नृप दशरथ से।
क्या भरत मोह के कारण माँ,
विमुख हुयी धर्म-सुपथ से?

गूढ़ मंत्रणा विधिना की थी,
असुरों के विध्वंस हेतु।
रघुनन्दन को वन में भेजा,
कैकेयी को बना सेतु।।

गुप्त योजना में सृष्टा की,
कैकेयी ने साथ दिया।
शिव की भाँति हलाहल पीकर,
अपयश अपने माथ लिया।।

राम अगर वनवास न जाते,
पूरा अभियान न होता।
देव-दनुज, सुर-सन्त किसी का,
किंचित कल्याण न होता।।

बलिदान अमर माता-सुत का,
जग में मिलना दुर्लभ है।
ऋणी रहेगी आर्य संस्कृति,
जब तक धरती है, नभ है।।

कैकेयी चरित

शिखा सक्सेना
लखनऊ, भारत

पाषाण हृदया, क्रूर, कुमाता कहा गया,
युगों से सदा जिसका, तिरस्कार किया गया।

जो चाहा होता पुत्र के लिए मान, राज सम्मान,
तो माँग ना लेती, सदा के लिए राम का प्रस्थान।

ये ना जाना किस अवस्था में वो वचन लिया,
धर्मयज्ञ की अग्नि में, अपने चरित्र का हविष्य दिया।

जिसने पुत्र रूप में सदा, राम को ही बसाया,
कैसे उसे ही, चौदह वर्षों का वनवास दिलाया।

सहभागी बनी वो, जो विधाता ने खेल रचाया,
अयोध्या के राम को, जगत का राम बनाया।

राम के जीवन ध्येय को जिसने पूर्ण किया,
उसके बैरागी मन को भी तो तृप्त किया।

जिसने खुद को युगों के लिए कलंकित किया,
राम के उत्कर्ष के लिए, अपना उत्सर्ग दिया।

जिसने ममता को नहीं, मातृत्व को आधार बनाया,
विमाता होकर राम को, मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनाया।

अभिलाषा

रश्मिशील
लखनऊ, भारत

उर्मिला निज कक्ष में
कुछ शूल उसके वक्ष में
वह चाहती है आज कुछ
वह मांगती है आज कुछ
हैं दृग सजल और मन विकल
प्रिय दर्शनम प्रिय दर्शनम।

मन की व्यथा दुख की कथा
कहती रही खुद आपसे
अपने विरह की आग में
जलती रही खुद आपसे
थी कामना केवल यही
शुभ मंगलम शुभ मंगलम।

वनवास उसको भी मिला
संत्रास उसको भी मिला
वह राज वैभव में रही
पर एक सुख देखा नहीं
वह भोगती ही रह गयी
दुख दारुणम दुख दारुणम।

देवत्व पाया राम ने
भ्रातृत्व लक्ष्मण नाम ने
सौभाग्य होता यदि कोई
एक बार कह देता यही
जो त्याग तुमने है किया
अति सुंदरम अति सुंदरम।

तेरी याद आती उर्मिले!

अनिता सिंह
मुज़फ़्फ़रपुर, भारत

क्या बताऊँ
कब कहाँ
तेरी याद आती उर्मिले!

शयन में प्रभु राम हैं, मैं दबाता हूँ चरण
आप भी तो अवध में, दायित्व करती निर्वहन
तुम कुलीना प्रेरणा बन, कर गई चिंता हरण
है मेरा सौभाग्य जो, तुमने किया मेरा वरण।

सोचता हूँ
जब यहाँ
तेरी याद आती उर्मिले!

यहाँ पर्ण कुटीर में, माँ जानकी भोजन पकाती
वनज कोल किरात वानर, स्नेह से सबको जिमाती
आप अपने सद्गुणों से महल को होंगी रिझाती
संस्कारित पुत्रियाँ रखती सहेजे कुल की थाती।

देखता हूँ
जब यहाँ
तेरी याद आती उर्मिले!

थी बहुत मुश्किल घड़ी, प्रभु राम का था वनगमन
जहाँ स्वामी वहाँ सेवक, इधर शोकाकुल भवन
मैं संभालूँगी इन्हें, देखे थे तेरे दृढ नयन
भाई दोनों भी नही थे फिर भी था आश्वस्त मन।

बाँह तेरा
है गहा
तेरी याद आती उर्मिले!

विरह उर्मियाँ

शशि पाधा
रेस्टन, यू.एस.ए

हाय! यह जग कितना अनजाना,
हिय नारी का न पहचाना,
पढ़ न पाए मन की भाषा,
मौन को स्वीकृति ही माना।

विदा की वेला आन खड़ी थी,
कैसी निर्मम करुण घड़ी थी,
न रोका, न अनुनय कोई,
झुके नयन दो बूँद झरी थी।

अन्तर्मन की विरह वेदना
पलकों से वह ढाँप रही थी,
देहरी पर निश्चेष्ट खड़ी सी,
देह वल्लरी काँप रही थी।

हुए नयन से ओझल प्रियतम,
पिघली अँखियाँ, सिहर उठा मन,
मौन हुई उस पल की भाषा,
अंग-अंग में मौन क्रन्दन।

रोक लिया था रुदन कंठ में,
अधरों पे आ रुकी थी सिसकी,
दूर गये प्रियतम के पथ पर,
बार-बार आ दृष्टि ठिठकी।

गुमसुम कटते वेदन के पल,
घिरे सदा नयनों में घन दल,
बार-बार पलकों को मूँदे,
ढूँढ रही प्रिय मूरत चंचल।

सावन के बादल से पूछे,
कभी कहीं क्या प्रिय को देखा?
सूर्य किरण अंजुलि में भर-भर
चित्रित करती प्रियमुख रेखा।

चौबारे उड़काग जो आये,
देख उसे मन को समझाती,
लौट आयेंगे प्रियतम मेरे,
जैसे मधुऋतु लौट के आती।

गहरे घाव हुए अँगुलि पर,
पल-पल घड़ियाँ गिनते-गिनते,
मौन वेदना ताप मिटाने,
अम्बर में आ मेघा घिरते।

पंखुड़ियों से लिख-लिख अक्षर
आँगन में प्रिय नाम सजाती,
बार-बार पाँखों को छूती
बीते कल को पास बुलाती।

तरू से टूटी बेला जैसे
बिन सम्बल मुरझाई सी,
विरह अग्न से तपती काया,
झुलसी और कुम्हलाई सी।

बीते कल की सुरभित सुधियाँ,
आँचल में वह बाँध के रखती,
विस्मृत न हो कोई प्रिय क्षण,
मन ही मन में बातें करती।

पुनर्मिलन की साध के दीपक,
तुलसी की देहरी पर जलते,
अभिनन्दन की मधुवेला की,
बाट जोहते नयन न थकते।

दिवस मास और बरस बिताये,
कितने मौसम बीते गिन-गिन,
काटे न कटते थे फिर भी
विरह की अवधि के दिन।

थी वचन बद्ध वह स्वामी की,
कोरों में अश्रु बाँध लिए थे,
सेवा, त्याग, समर्पण के बल,
विरह पर्वत लाँघ लिए थे।

जन्म-जन्म मैं पाऊँ तुमको,
हाथ जोड़ प्रिय वन्दन करती,
पर न झेलूँ विरह-वेदना,
परम ईश से विनती करती।

उस विरहन की करूण वेदना,
बदली बन नित झरी–झरी,
झर न पाई विरह उर्मियाँ,
कोरों की नदियाँ भरी-भरी।।

उर्मिला उच्छवास

सुषमा 'सौम्या'
लखनऊ, भारत

सँग ज्योत्स्ना
एकान्त घना
उर्मि उदास
पर अश्रु मना।

पाषाण हुईं,
आँखें अपलक
यह राह तकें
जानें कब तक
यह बैर नियति के साथ ठना।

उनका जाना
मेरा रुकना
नारी को यों
पड़ता झुकना
छाया विषाद ही रहा घना।
वर्षों विछोह,
दी रात मुझे
है प्रात दूर
यह ज्ञात मुझे
कैसा पीड़ा का मित्र बना।

तुम चलते,
भारी कदमों से
भारी मन से
नम नयनों से
यह विदा भरा, संवाद तना।

बलकल वसनों
को धारण कर
तुम साधु वेश
गति को तत्पर
आँखें क्या चाह रहीं कहना।

उर्मिला की व्यथा

आशा बर्मन
स्कारबोरो, कनाडा

मन में ही रही मन की बात
कभी न ओठों तक ला पायी
हृदय लगा जो आघात।

जब आयी थी मैं विवाह कर
हँसते-गाते सभी परस्पर
नहीं जान पायी कब कैसे
बीते वे सुखमय दिन सत्वर
अनमोल पलों से सजे सजे
वे अपने दिन और रात,
मन में ही रही मन की बात।

सहसा कैसे दुर्दिन घिर आये
केकैयी माँ ने दुर्वचन सुनाये
राजा से पाकर दो वर
रामचंद्र वनवास पठाए
आनंद भरे मेरे जीवन पर
हुआ कुठाराघात,
मन में ही रही मन की बात।

जब भरत गए तुम्हें लौटाने
क्षीण आशा थी जागी मन में
आशा वह भी हुई विफल
व्यथा भरी मेरे कण कण में
कितना शेष रहा प्रियतम
कहना-सुनना तुमसे तात,
मन में ही रही मन की बात।

पति हैं पर जीवन पति-विहीन
विरह में हो रही हूँ मैं क्षीण
सबके बीच भी रही एकाकी
जीवन मेरा हुआ सारहीन
सूने सूने हो गए सब
मेरे ये दिन और रात,
मन में ही रही मन की बात।

न जाने प्रिय अब कब आयेंगे
मुझको क्या वे जीवित पायेंगे
बरसों पर यदि मिल भी पायी
मुझको क्या वैसा ही पायेंगे
जीवन की बाजी में मैंने
केवल पायी है मात,
मन में ही रही मन की बात।।

मैं उपासिका

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

मैं उपासिका,
तुम राम!

मैं मीरा,
तुम श्याम!

मैं कामना,
तुम निष्काम।

मैं बिंदु,
तुम विराम।

मैं श्रमिक,
तुम विश्राम।

मैं भ्रमित,
तुम अभिराम।

मैं पथ,
तुम ग्राम।

मैं प्राण,
तुम आयाम।

मैं तीर,
तुम कमान।

मैं विभीषिका,
तुम निदान।

मैं तप,
तुम वरदान।

मैं जीव,
तुम भगवान।

मैं जिज्ञासा,
तुम समाधान।

मैं आराधन,
तुम ध्यान।

मैं निर्बल,
तुम बलवान।

मैं अकिंचन,
तुम महान।

मैं कतरा,
तुम जहान।

मैं मन,
तुम अंतर्धान।

अहिल्या

स्वरांगी साने

पुणे, भारत

या तो उसे पतिव्रता होना है
या पत्थर।

आपकी ठोकर लगी थी उसे
अनजाने में।
और
वो ही बदल गई स्त्री में।

पहले उससे कहा गया
तुम नहीं हो पतिव्रता
फिर कहा गया
तुम नहीं हो महज शिला।
अब जो कि फिर जाग रही हैं
उसकी इच्छाएँ
होने लगी है वो उम्मीद से
तो उसमें आपका क्या दोष प्रभुवर!

कहा गया
उस पर हुआ उपकार
वो नहीं रही पाषाण।
प्रभु बढ़ चले अपने मार्ग पर
वो छूट गई पीछे
जैसे
छूटते जाते हैं
रास्ते के अनगिनत कंकड़।

राम - शबरी

अभिनव शुक्ल
फोलसम, यू.एस.ए.

राम की चरण रज पा के फूल फूल उठे,
माता शबरी के फूल अग्रगण्य हो गए।

ऐसे अधिकार से दुलार सत्कार किया,
राम चन्द्र बाल सुत ही अनन्य हो गए।

बेर बेर चखे हुए मीठे मीठे बेर सभी,
प्रेम के प्रभाव से प्रभावजन्य हो गए।

राम के दरस पाके धन्य हुईं शबरी तो,
शबरी के खा के बेर राम धन्य हो गए।

भेदिया और विभीषण

मोती प्रसाद साहू
अल्मोड़ा, भारत

देवता हमारे जन्मजात शत्रु हैं
और आदमी
औकात में हमसे छोटा...

दशानन ही सर्व-शक्तिमान हैं
अबोध बच्चों की किताबों में यही लिखा
होता था
उस समय...

रावण भी भाइयों को
पुत्रों को, कुटुम्बिजनों को
यही रटाता रहता...

सुग्गा नहीं था विभीषण
सुग्गा तो नकलची होता है
बुद्धिमान नहीं...

थोड़ा समझदार होने पर
समझ आ गया सब कुछ
बड़े भाई का कृत्य
असुरों का चरित्र...

राज्य में मुनादी होती कि
दशानन ही त्रिलोकीश हैं
जनता इसे मान ले
लोग भयवश मान लेते...

ऋषि मुनि वैष्णव आदि इसे नकारते
सर्वाधिक रक्तपात उन्हीं का हुआ
उनकी स्त्रियों को हर ले जाते आतताई
आदमी जिसे थूकता उसको चाट लेते थे
असुर...

विभीषण ने रावण को सुनना बंद कर दिया
अंधकार और दानवता से
मुक्ति का प्रयास
राष्ट्रद्रोह नहीं होता...

दशानन या मेघनाद जब भी प्रहार करते
मानवता कवच बन जाती
विभीषण के लिए और उसे बचा लेती थी
मानवता का साथ देना
भेदिया नहीं होता...

शबरी के राम

राजेन्द्र सूरज
सिंगापुर

मैं सदियों से बाट जोहती, राम न जाने कब आओगे,
मेरे मन के अवसादों को जाने कब तुम पिघलाओगे।

साँस-साँस में तुम मेरे हो, रोम-रोम में तुम्हीं बसे हो,
क्षण-क्षण मेरा रमता तुममें, हर इक दृश्य में तुम्हीं सजे हो।
आँखों से बहते आँसू भी, राम-राम कह करके झरते,
मेरी वाणी के हर अक्षर, राम-नाम की महिमा कहते।
वेद-सार से न मैं परिचित, भक्ति मार्ग से मैं अनजानी,
योग-ध्यान से वंचित हूँ मैं, पूजा-विधि से मैं अज्ञानी।
जीवन के सारे द्वन्दों से, मुक्त हुई जप नाम तुम्हारा,
एक मात्र तृष्णा सिंचित है, निरख सकूँ मैं चरण तुम्हारा।
पुण्य धरा का मैला आँचल निज पद से कब महकाओगे,
मैं सदियों से बाट जोहती, राम न जाने कब आओगे,
मेरे मन के अवसादों को, जाने कब तुम महकाओगे।

रही बिलखती रही तड़पती, राम तुम्हारी अभिलाषा में,
जन्म-जन्म मैं रही भटकती, तुम से मिलने की आशा में।
आज तुम्हारा देख आगमन, वाणी मेरी मौन हो गयी,
मन मृग-शावक भरे कुलाँचे, काया की सुधि गौण हो गयी।
आत्म-दीप जल गए आज, श्रद्धा ने फिर जयकार लगायी,
भक्ति ने आराधन साधा, सरयू लिए आरती आयी।
बना एक क्षण युग-परिवर्तक, जन-जन की मर्यादा जागी,
राम तुम्हारे दर्शन पाकर, धन्य हुई मैं आज अभागी।

मुझे यकीं था इस अबला के तारण को निश्चित आओगे,
मैं सदियों से बाट जोहती, राम न जाने कब आओगे,
मेरे मन के अवसादों को, जाने कब तुम पिघलाओगे।

Last Heartbeat

Anviksha Srivastava
Los Angeles, USA

A slow steady heartbeat starts my day.
My simple face and feathers.
The gray edges outlining my purpose.
My home is a mix of brown and empty.
The blue sky is a mix of clear and mirror.
I see myself in its depths.
My flight follows a pattern.
I lived a happy box life.
Each task matched a quiet heartbeat.
A slow steady heartbeat and a gray life.

Until that day.
I was painted on a branch
Scratching my name in its skin.
I heard pleas for help.
The sky split from mirror clear to a shining spotlight.
The glare of the sun highlighted
My weakness, insecurities, and age in its heat
Melting my feathers, it laughed like Ravan.
While the bright yellow glitter light of the sun
Gave me strength and courage like the color of Sita's maternal sari.
I followed the voices inside me.
I believed that my simple feathers could hold back darkness.
My heartbeat sang the song of a warrior.

I broke through my box life
With the shield of my friendship with Dashrath.
I reached out for the blue.
For a moment

My air was coated with hope.
I pulled with my beak and shadowed with my feathers.
In a battle of sweat and balance I was on the edge.
My talons grasped at slippery cloth.
My feathers beat against the strong smooth side of the chariot.
Screams and pleas mixed in with the sound of struggle.
I circled evil and won
My heartbeat matched the stuttered movements of the chariot.
My arms created a curtain.
Until silver lightning struck.
My feathers stained red.
I remember colored rain.
I tasted brown again as I fell.
Ravan left like a storm taking the sun.
I was left counting my heartbeats.
Each one slower than the last.
My heartbeat thundered against my broken ribs.

First Heartbeat
I fought Ravan and served Sita.
Second Heartbeat
I almost stopped him and I was struck down.
Third Heartbeat
Ravan laughed as Sita blessed me with her tears.
Fourth Heartbeat
My pain held on a little tighter as my blood covered me like a blanket.
Fifth Heartbeat
I was blessed by Sri Ram.

Last Heartbeat
This old Jataiyu served Ram.
This ordinary bird turned unique with his
Last Heartbeat...

शबरी के राम

सुरेश शर्मा 'कांत'
जयपुर, भारत

मीठे मीठे बेर मेरे हाथों से राम खायेंगे,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है राम मेरे आयेंगे,
कुटिया के आंगन में दो घड़ी तो बितायेंगे,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है राम मेरे आयेंगे।

राह के कांटे कंकर रात दिन हटाती हूं,
बिछा कर के फूल प्रभु की डगरिया बुहारती हूं,
कोमल है चरण प्रभु के कांटे लग जायेंगे,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है के राम मेरे आयेंगे।

जब हो कर अहिल्या पत्थर राह में खड़ी है,
चरणों की रज पाने को व्याकुल बड़ी है,
भरोसा रघुवर उसका तोड़ नहीं पायेंगे,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है के राम मेरे आयेंगे।

कृपामय मेरे राम है बड़े दयालु जी,
पाते है प्रीत उनकी बन्दर भालू जी,
दया की नजर मेरी और भी घुमायेंगे,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है के राम मेरे आयेंगे।

कमल नयनों वाले राम मेरे ख्यालों के राम,
विशाल भुजा वाले सिर पर जटाओं का मुकुट राम,
हृदय पर वनमाला धारण किये हुए राम,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है के राम मेरे आयेंगे।

हुई कृपा जब दीनबंधु की घर आए राम,
दूर से आते देखें दोऊ भाई नैनों को भरोसा हुआ,
जोई राम साँवले सलोने लखन गौरवर्ण,
बूढ़ी शबरी को भरोसा है के राम मेरे आयेंगे।

दोऊ भाइयों के चरणों में शबरी लिपट पड़ीं,
वह प्रेम में मग्न हो गईं मुख से कछु निकसत नाही,
बार-बार चरण-कमलों में सिर नवाती रही,
कठोती जल लेकर सजल नयनों से चरण कमल धोये,
चरण पखार सुन्दर आसनों पर बैठाया,
शबरी की आशा के राम,
भीलणी के भरोसे वाले राम ने
प्रेम विह्वल झूठे बेर खाये।

शबरी

सरोज अग्रवाल
डेटन, यू.एस.ए.

इक भोली भाली, प्रेम दीवानी,
संकल्प विकल्पों से अनजान,
लड़खड़ाती, किसी का बाट सा जोहती,
अपनी इच्छाओं से अनजान, ऊँच-नीच का न था कुछ ज्ञान।
भोली थी हृदय की सरला, ऐसी थी वो वन की ललना,
नहीं जीवन में कोई आशा, नहीं किसी से कोई प्रत्याशा,
करती थी सेवा सत्कार, प्रतिदान का न रखती विचार,
बनी रही सदा निर्विकार, निष्ठा की मूरत साकार।
संतों का संग पाती पूरा, फिर भी जीवन लगता अधूरा,
चुन-चुन करती पत्र पुष्प अर्पित, पूजा के प्रति सदा समर्पित।
आश्रम में नित शीश झुकाती, फल फूलों की भेंट चढ़ाती,
तिन सेवा सौभाग्य था पाया, निज जीवन सार्थक बनाया,
नहीं जानती जप तप जोग, और रहा मन पूर्ण वियोग,
करुणा मयी वह भोली-भाली, पशु पक्षी की करती रखवाली।
मार्ग बुहारती, निष्कंटक करती, गीत सदा थी गाती,
बाट जोहती, विकल पुकारती, कब आओगे मेरे राम,
शुभ कर्मों ने रंग दिखाया, मातंग ऋषि था गुरु बन आया,
शीश गुरु की आज्ञा धारिणी, बनी गुरु की कृपा पात्रिणी,
निपट निरक्षर विशुद्ध वनवासिनी, फिर भी थी वह प्रेम दीवानी।
गुरु नेतिन दिया परम ज्ञान, बोले तुझको अपनायेंगे राम,
हृदय में सदा बसी इक धुन थी, राम नाम की लौ धधकी थी,
शबरी घर आये लक्ष्मण राम, आतिथ्य ग्रहण किया अविराम।
नवधा भक्ति का दिया ज्ञान, समा लिया निज भीतर राम,
धन्य-धन्य तू शबरी माई, जग देता तेरी भक्ति की दुहाई,
छोड़ कपट-छल जो प्रभु ध्यावे, सो जीवन अभीष्ट फल पावे।

सुमिरन तेरा मेरा दाम

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

इन भावों का क्या दूँ नाम।
मेरे भीतर, बाहर राम॥

एक आचरण तेरा पाऊँ,
दीन जनों को गले लगाऊँ।
तब भी खुद को दीन बुलाऊँ,
कर्म मेरा हो हर निष्काम॥

केवट बन मैं पार लगाऊँ,
शबरी बन मैं बेर खिलाऊँ।
बना जटायु, प्राण को साधूँ,
राह को तकता तेरी राम॥

माथे पर पद धूल चढ़ाऊँ,
भरत भाँति मैं शीश झुकाऊँ।
मोल भक्ति का कुछ न चाहूँ,
सुमिरन तेरा, मेरा दाम॥

चाहे विप्र रूप कोई धारे,
या केवट बन चरण पखारे।
कोई मद न मोह मुझे हो,
माँगू मैं भक्ति अविराम॥

इन भावों का क्या दूँ नाम।
मेरे भीतर, बाहर राम॥

रामलला विराजमान

अमित अवस्थी
लखनऊ, भारत

चौपाई:

नौमि नवम्बर नवम पुनीता। प्रभु पायो निज धाम सुभीता।।
सब कहँ सुखद बचन सुनि आवा। अमिय बरसि जिय जरनि जुड़ावा।।
पंच पुरुष परमेस्वर जानी। बोलैं बचन सुधा रस सानी।।
जैसे श्रवन सुने प्रिय बैना। भरि आये बरबस जुग नैना।।
भा रोमांच न कछु कहि आवा। जनम सुफल जनु नभ बरसावा।।
आजु परम प्रिय लागे लोचन। दरसन भे सब सोच बिमोचन।।
राम हमार न तंबू रहिहैं। अब न कबौं घम बरखा सहिहैं।।

छंद:

रहिहैं न तंबू तानि राघव अब न और जड़ाइहैं।
निज धाम सीतानाथ बसिहैं हम सुमंगल गाइहैं।।
होइहि गगनचुम्बी सिखरजुत भब्य मंदिर एक तहाँ।
आनंद अमित मनाइहैं सुख सहित प्रभु रहिहैं जहाँ।।

दोहा:

दुख सहिके दुख दूरि भा, उर उपजा बिस्वास।
अमित सत्य जीतै सदा, ब्यर्थ असत्य प्रयास।।
राम सत्य संकल्प प्रभु, करुणामय भगवान।
निज इच्छा सहते रहे, इतने दिन अपमान।।

श्री राम! शुभागमन!!

प्रभुदयाल मिश्र
भोपाल, भारत

असंख्येय गुण-गण निलय
सगुण-साकार,
करुणानिधान!

तुम्हारा कैसे हो गुणगान?
'निरुपम न उपमा आन
राम, राम समान'
आगम-निगम-पुराण
जिनका कर न सके बखान,
मैं अज्ञान!
कैसे करूं पहचान?
हे भगवान!

'निखिल हेय प्रत्यनीक'
निर्गुण-निराकार,
माया-प्रकृति के पार,
परात्पर,
अपरम्पार,
चौदह भुवन,
अनन्त ब्रह्मांडों के आधार,
अनादि, अप्रमेय,
असांत,
प्रशांत, परमेश्वर,
देहात्म,
जीवात्म,
विश्वात्म,
विभ्रांत मैं!

कैसे करूं साक्षात्कार?
निर्विकार!
अस्तु!
अयोध्या लौट आए अब,
सदियों से विस्थापित,
भास्कर-भूषण,
लीला बिहारी,
स्व-सदन,
श्री राम!!
शुभागमन!
शुभागमन!!

मंदिर भव्य बनेगा

नरेश शांडिल्य
नई दिल्ली, भारत

सबके राम का मंदिर भव्य बनेगा,
सबके द्वार पर वंदनवार सजेगा...

जय सियाराम जय जय सियाराम,
जय सियाराम जय जय सियाराम।

ठुमक ठुमक कर राम चले थे
जिस आँगन जिस द्वारे
उनकी पैंजनियाँ गूँजी थी
जिस घर साँझ सकारे
उनके धाम पर स्वर्णिम-कलश चढ़ेगा।

"सियाराममय सब जग जानी"
तुलसी ने जब गाया
एक ही चौपाई में जैसे
सारा विश्व समाया
ऐसे गान का घर-घर अलख जगेगा।

राम रहेंगे तभी देश की
मर्यादा है भाई
राम रहेंगे तभी राष्ट्र की
परिभाषा है भाई
राम रहेंगे तो भारत एक रहेगा।

राम प्रतीक हैं समरसता के
सबको गले लगाते
शबरी के झूठे बेरों को
भी हँस-हँस कर खाते
ऐसे राम का ऊँचा ध्वज फहरेगा।

होती आई विजय सत्य की
जीता है, जीतेगा
अन्धकार कैसा हो भाई
बीता है, बीतेगा
राम-विधान का डंका सदा बजेगा।

रामजन्म भूमि पर प्रश्नचिन्ह क्यों?

जूही वैष्णव
सिंगापुर

कोई जमीन का टुकड़ा नहीं, श्री राम का जन्मस्थान है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी, अभिमान है ये।

सुख में अभिवादन 'राम राम', दुख की आहों में 'हाय राम! '
ढाढ़स में 'भली करेंगे राम! ' मिलन-बिछोह में 'जय सियाराम! '
रग-रग में राम हैं भारत की, भारत की जो हैं परिभाषा,
अहिल्या, शबरी की प्रतीक्षा, केवट की जो हैं अभिलाषा,
सेतुबन्ध के हर कण पर नल-नील का लिखा नाम है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी, अभिमान है ये!

दशरथ का आँगन ये पावन, चलना सीखे राम जहाँ,
कौशल्या की सुघड़ रसोई ये, सिय ने किया गृहप्रवेश यहाँ,
क्रीड़ास्थली लखन-शत्रुघन की, भरत से भाई की ये भूमि,
उर्मि सी सती की अयोध्या, सम्राट रघु की रजधानी,
हृदय में सीता राम लिए, साक्षात स्वयं हनुमान है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी अभिमान है ये!

हर मजहब के पैगम्बर, जहाँ चरण धरते हैं,
उस पावन भू पर भक्तों के, युग-युग मेले भरते हैं,
रहती धरती वो धरा नहीं, स्वर्ग सी पावन हो जाती,
धूलि भी उसकी भक्तों को, रत्नों सम है हो जाती,
मक्का में ही होती है हज, जेरुसलम में यात्रा यीशु की,
फिर राम की अपनी जन्म-भू पर, झड़ी लग जाती क्यों प्रश्नों की?

मेरे मुस्लिम क्रिश्चयन भाई, हैं तारीफ के अधिकारी,
एकजुट होकर हमेशा, अपनी पावन भू सँवारी,
इनकी तरह नहीं रह पाए हम तत्पर सुरक्षा में,
अपने प्यारे-प्यारे प्रभु की, जन्म भूमि की रक्षा में,
तोड़े गए सारे भवन कि वो, राम, कृष्ण जहाँ जन्मे थे,
दो-चार दिन नहीं, सदियों से घाव भक्तों के मन में थे।

कि तुम्हें नहीं यदि मोह तनिक जन्म-भूमि से राम की,
तो बने रहो तुम निर्मोही, ये बातें ना अपने काम की,
अपने घर पर बनवाओ, बनवाने जितने उद्यान हैं,
ये सार्वजनिक कोई जगह नहीं, मेरे राम का निज धाम है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी अभिमान है ये!

मन से भी साथ न देना हो उनका जो शीश कटाए हैं,
बाबर के काल से जो नित-नित राम पे मिटते आए हैं,
तो ना दो, तुम में नहीं क्वचित भावनाओं का वो तीव्र प्रवाह,
कम से कम राम-प्रेमियों को पर मत करो तुम हत-उत्साह,
तुलसीदास थे मूर्ख नहीं, अखाड़ों के प्रथम प्रवर्तक जो,
खून-खराबा प्रिय न था, थे शांति-प्रिय धर्म के रक्षक वो,
यूं ही नहीं समर्थ रामगुरु ने, छत्रपति उपजाए थे,
भारत के धर्म की रक्षा में, सिखों ने प्राण गंवाए थे।

इतिहास उठाकर देख लियो, अहिंसा फली-फूली है वहाँ,
लेकर तलवारें सीमा पर करते रक्षा क्षत्रिय जहाँ,
गांधार था खुशहाल देश कुरु साम्राज्य में आता था,
बौद्ध बना पूरा जब वो शस्त्रों से मुँह चुराता था,
जैसे ही आए आततायी पहले हारा गांधार स्थान,
बन गया वो फिर अफगानिस्तान, मिट गया शांति का नामोनिशान!

वन-ज्वाला वहीं ये रुकी नहीं, तक्षशिला को लील गई,
बन गया वहाँ अब पाकिस्तान, आतंक की खेती जनी नई,
अहिंसा की ज्योत बचाने को हाथों को लाना पड़ता है,
रक्तपात से बचने को खुद रक्त बहाना पड़ता है,
गुरु गोविंद सिंह, वीर शिवा, राणा-प्रताप, झांसी रानी,
कश्मीर के ललितादित्य प्रबल, असम के लाचित बलिदानी।
राम का घर से निष्कासन, सब वीरों का अपमान है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी अभिमान है ये!

ब्रह्माण्ड सकल रचने वाले श्री हरि जहाँ पर खेले हैं,
खुद नारायण की पग-रज से पावन जो मिट्टी-ढेले हैं,
उस आंगन पर जाते ही सप्तर्षि दण्डवत हो जाते,
वेद-वेदांग थके बिना महिमा जिस भूमि की गाते,
जूते-चप्पल पहन के तुम कैसे वहाँ चल पाओगे,
उद्यान-पुस्तकालय बनवा, इतिहास को धुलि मिलाओगे?

भूपाल चक्रवर्ती थे जो, धरा जिन पर नतमस्तक थी,
राजा होकर संन्यासी थे, ऐसी मेरे राम की फितरत थी,
बाली थाइलेण्ड से देशों तक गाथा अब भी ज़िन्दा है,
कम्बोडिया के अंगकोर की, हर दीवार शर्मिन्दा है,
कि रामकथा कहने वाली प्राचीन प्रंबनन की दिवारें,
रोती हैं सुनकर अब सारी अयोध्या की ये चित्कारें,
छीना गया था जब मेरा इबादत का अधिकार यहाँ,
पर तब भी दिल पर चली नहीं, इतनी गहरी कटार यहाँ।

कलेजा मुँह को आ जाता, मैं व्याकुल हो आती हूँ,
जब हिन्दू को रामजन्म-भू पर, प्रश्न उठाता पाती हूँ,
वनवास राम को देती उस कैकयी का पुनरुत्थान है ये,
छेड़ो ना कि दुखती ये रग मेरी, भक्ति मेरी अभिमान है ये!

अभिनन्दन!

शकुन्तला बहादुर
साराटोगा, यू.एस.ए.

नव-प्रभात की नयी किरण अब, नवल ज्योति ले आयी है।
अभिनन्दन है रामलला का, घड़ी परम सुखदायी है।।

फूल खिले कलियाँ मुस्काई, मलय पवन गुनगुन करता।
भक्ति-भाव में मगन हुआ जग, प्रभु-महिमा वन्दन करता।।

मंगल-साज सजे नगरी में, आज अयोध्या शोभित है।
तन पुलकित है, मन प्रमुदित है, जन जन भी तो गर्वित है।।

सदियों से जो रही लालसा, पूर्ण आज हो पायी है।
हर्ष-सिन्धु में डूबा है जग, रामलला छवि भायी है।।

भारत की संस्कृति के गौरव, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।
दशरथनन्दन, सीतापति हैं, हरते भक्तों का तम हैं।।

शबरी औ' केवट को भी जो, गले लगाते बड़े प्रेम से।
भाई लक्ष्मण, भरत, रिपुदमन, जिन्हें पूजते थे आदर से।।

राजतिलक की वेला में, वनवास का जब आदेश मिला।
सुख-दु:ख में समभाव रहे जो, शान्त भाव मुख पर खिला।।

ऋषियों के यज्ञादि कर्म में, रहते सदा विघ्नकारी जो।
उन असुरों का संहार किया, अभिमान न मन में लाए वो।।

हनूमान, सुग्रीव, विभीषण, जिनके निश्छल भक्त रहे।
स्वर्णमयी लंका को त्यागा, जन्म-भूमि रस सिक्त रहे।।

जिनकी गाथा गाकर तुलसी, सारे जग में हुए प्रसिद्ध।
भक्त-शिरोमणि कहलाए जो, संत साधकों में हैं सिद्ध।।

राम-चरित आदर्श हमारा, कष्ट सभी का दूर करेगा।
जब तक नभ में सूर्य रहेगा, राम का गौरव अमर रहेगा।।

मन-मंदिर में भक्तों द्वारा, उनका नित ही पूजन होगा।
"जयतु जयतु श्री राम" मंत्र का, भारत में गुंजन होगा।।

राम बसेंगे

मृणाल शर्मा
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

तिरपालों के मेघ हटेंगे,
शुभ तोरण से द्वार सजेंगे,
कण-कण रज के स्वर्ण लगेंगे,
ध्वजा क्षितिज का आलिंगन कर,
गीत गाएगी जय घोषों में,
कर अंत प्रतीक्षा की घड़ियों का,
अपने घर में राम बसेंगे!
तिरपालों के मेघ हटेंगे!!

कोटि-कोटि की आशाओं का,
साधु-संतों की अभिलाषा का,
पीड़ सह रहे हर उस मन का,
गरल पिये जो मर्यादा का,
अब स्वयं सियावर मान रखेंगे,
कर अंत प्रतीक्षा की घड़ियों का,
अपने घर में राम बसेंगे!
तिरपालों के मेघ हटेंगे!!

नहीं एक-दो लक्ष-कोटि में,
निर्गुण-सगुण, दृश्य-अदृश्य में,
केवट, गुह और शबरी वाले,
वनवासी, नृप शोभा घाले,
तेरे मेरे राम रचेंगे,
कर अंत प्रतीक्षा की घड़ियों का,
अपने घर में राम बसेंगे!
तिरपालों के मेघ हटेंगे!!

वाल्मीकि और तुलसी के पद,
होंगे जन-जन कंठ सुसज्जित,
करतल कीर्तन राम चरितमय,
सुर-सरिता, लय-ताल से उर्जित,
ढोल, पखावज राम भजेंगे,
कर अंत प्रतीक्षा की घड़ियों का,
अपने घर में राम बसेंगे,
तिरपालों के मेघ हटेंगे!
शुभ तोरण से द्वार सजेंगे!!

आ गए हैं राम वापस

राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ, भारत

मिट गई है भूख सारी
मिट गई है प्यास।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

सज गई सारी अयोध्या
सज गए घर द्वार,
जल रहे हैं दीप लाखों
ले हृदय में प्यार,
नाचती है हर गली अब
रोशनी है खास।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

झूमते हैं पेड़ पल्लव
झूमते हैं फूल,
झूमती सारी दिशाएं
पा समय अनुकूल,
चल रही वायु बसंती
छा रहा मधुमास।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

कट गई हैं बेड़ियां सब
हो गए आजाद,
लोग उजड़े जो कभी थे
फिर हुए आबाद,
चल रही अठखेलियां फिर
मिट गया है त्रास।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

संत पुलकित हो उठे पा
भक्ति का मकरंद,
अंत पीड़ाका हुआ तो
छा गया आनंद,
नव सृजन को संग लेकर
आ गया उल्लास।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

भाग्य में जो कुछ लिखा था
कर लिया स्वीकार,
अश्क को अमृत समझ कर
पी लिया हर बार,
मिल गई धरती वही फिर
मिल गया आकाश।
आ गए हैं राम वापस
काटकर वनवास।।

मेरे राम

विश्वास दुबे
एम्स्टर्डम, नीदरलैण्ड

मैं राम का राम मेरे हैं, बाकी सब है माया,
बड़ी बाट जोही है रघुवर, तब यह दिन है आया।

जो रहते हनुमान के सीने, और तुलसी के छंदों में,
हमारी नासमझी ने जकड़ा, ईश को अनुबंधों में।

सर्वव्यापी हो यद्यपि राघव, था जरूरी यह ठौर,
मर्यादा के मंदिर की ओर, बढ़ा एक कदम और।

सिखाया आपने त्याग, सत्य, गौरव, दया, मर्यादा,
पर प्रण पूरा करने में हमने, समय लगाया ज्यादा।

अनेक सालों की तपस्या, कई पीढ़ियों के त्याग,
इस जन्म में यह दिन आया, हैं धन्य हमारे सुभाग।

हर चौखट बंदनवार सजे, सब पुलकित मेरे परेश,
प्रेम और सौहार्द्र के रस में, डूबा सम्पूर्ण स्वदेश।

चहुँ ओर खुशी है, और है सर्व मंगल की आस,
करबद्ध खड़ा यह आपसे, विनती करे 'विश्वास'।

पावन राम मंदिर

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ, भारत

शुभ दिन पाँच अगस्त का, सन दो हजार बीस।
जन्मभूमि मंदिर शुरू, जय जय अवध अधीश।

राष्ट्र देवता रूप में, संज्ञा हैं प्रभु राम।
बसे विशेषण भाँति उर, शुभ आदर्श ललाम।

पावन मंदिर राम का, पाएगा आकार।
रामराज्य का स्वप्न भी, होगा अब साकार।

भव्य राम मंदिर बने, जन-मन उठी उमंग।
पुरुषोत्तम रघुराज का, चढ़ा राष्ट्र पर रंग।

दुःख भंजन हैं दाशरथि, भारत के आदर्श।
घृणित विधर्मी काल के, खंडित हों प्रतिदर्श।

मंदिर आंदोलन चला, सतत पाँच सौ साल।
रामभक्त बलिदान का, पूर्ण हुआ तप काल।

राष्ट्रवाद के भाव से, करें राष्ट्र निर्माण।
रघुवर जैसे आचरण, दें संकट से त्राण।

राष्ट्र पुरुष रघुनाथ का, रुचिर अयोध्या धाम।
जन्मभूमि पर बन रहा, मंदिर दिव्य ललाम।

मानव, राज, समाज की, रक्षा जिनका धर्म।
मर्यादा, तप, त्याग ही, रघुनन्दन का मर्म।

दमन किया अन्याय का, दिया प्रजा का साथ।
पतितों के रक्षक बने, विश्ववंद्य रघुनाथ।

रामराज्य संकल्पना, कोई दुःखी, न त्रस्त।
छायी मंगल शांति हो, प्रजा न हो भयग्रस्त।

सत्य धर्म कल्याण से, मर्यादित हों कर्म।
समरसता में राममय, जीवन का शुभ मर्म।

घर घर में दीपक जलें, गूँजें मंगल गान।
दशरथसुत का अवध में, नव मंदिर निर्माण।

दिव्य अयोध्या ने रचा, नव स्वर्णिम अध्याय।
चिर अभिलाषा पूर्ति का मंदिर सृजन उपाय।

हैलो, हाय, बॉय का, करिए काम तमाम।
अभिवादन में बोलिए, राम राम, जय राम!

राम की जन्मभूमि

अनुपमा गुप्ता
चित्रकूट, भारत

जन्मभूमि है सबसे प्यारी,
अपने प्यारे राम को।
इसीलिए हम सजा रहे हैं,
आज अयोध्या धाम को।

कलियुग में वनवास अधिक था,
भक्तों ने झेली पीड़ा।
लेकिन मंदिर में आओगे,
हमने ठाना था बीड़ा।
घर-घर, जन-जन राम रमे,
हम रटते सीता राम को।

सिय के संग में अपने स्वामी,
जब आभा राजित होंगे।
चारों भाई, मातु कौशल्या,
संग दशरथ दर्शन होंगे।
अपने भवनों को भूलेंगे,
पाएँगे हरि नाम को।

राम तुम्हारी पुण्य भूमि में,
हम दर्शन को आएँगे।
सकल विश्व के हर कोने से,
अपनी श्रद्धा लाएँगे।
कर देंगे अपना सब अर्पित,
रघुवर पूरन काम को।

हे सर्वज्ञ सुजान राम,
इस धरती का कल्याण करो।
खग-मृग-वन संग हम भी फूलें,
ऐसा कोई विधान करो।
राम नाम संग अपनी सुबहें,
राम मगन धुन शाम को।
इसीलिए हम सजा रहे हैं,
आज अयोध्या धाम को।

राम मंदिर

कृष्णा जैमिनी
गुरुग्राम, भारत

धन्य अवधपुरी पावन धाम
प्रकट भये जहाँ पर श्री राम
वहाँ पर सरयु बहे अविराम
संत जन जपते राघव नाम।

कथा करते नित तुलसीदास
राम कण-कण में करते वास
पवन में भी उनका आभास
अंतस में भरता जो उजास।

गाओ सब जन मंगलाचार
अवध में छाई अजब बहार
मनावे खुशियाँ सब नर-नारी
जला रहे दीपों की कतार।

भक्तों ने निज जान लुटाई
सदियों बाद घड़ी शुभ आई
आएंगे घर अब रघुराई
आज सभी को बहुत बधाई।

ठाठ से कर मंदिर निर्माण
करें सब धन और श्रम दान
राम हैं संस्कृति की पहचान
पूरी हुई सदियों की आन।

गाती सरयु लहरें गुणगान
पाता प्रयाग जहाँ सम्मान
नित हो प्रभाती और अजान
मिल कर रहते राम-रहमान।

बराबर यहाँ गीता-कुरान
यही है मेरा हिन्दुस्तान
गावें मिल सभी राष्ट्रगान
तन मन धन इस पर कुर्बान।

श्री राम

उषा अवस्थी
लखनऊ, भारत

युग पुरुष, सुन्दर, सुशोभित
सरिस चन्द्र, लुभावनी।
बस गई हृद-कमल, कोमल
श्याम छवि मनभावनी।।

जगमगाती कीर्ति चहुँ दिशि
विश्व में श्री राम की।
बिखरती हैं रश्मियाँ
अद्भुत, दिव्य प्रकाश की।।

त्रोण, शर, काँधे धनुष
संग भूसुता प्रिय जानकी।
शौर्य भूषित, सुखद, प्रिय
मोहक छटा, भयनाशिनी।।

न कभी कम हो उजाला
सत्य और सौहार्द का।
सदा ही अनुपम, मनोहर
दृश्य हो विश्वास का।।

हो समाज, सुखी, समृद्ध
कोई न पीड़ित जन रहे।
रामराज्य प्रभास की
निर्मल सतत गंगा बहे।।

राम हमारा संविधान हैं

लक्ष्मी नारायण गुप्त
ग्वालियर, भारत

राम हमारा संविधान है,
सेवक रक्षक हैं हनुमान।
सत्य, न्याय का रूप विभीषण,
लंका माया की पहिचान।

पंचों के मुख से परमेश्वर,
कहता मर्म का आह्वान।
हो निरपेक्ष कर्म शबरी सा,
सापेक्ष राम धर्म प्रतिमान।

करे दूध, पानी का पानी,
विक्रम सा हो न्याय विधान।
राज्यधर्म पर पद प्रहार का,
रावण-हश्र होगा उपमान।

राम विरोधी तथ्य तोड़ते,
बुनते कुटिल जटिल परिधान।
ईर्ष्या, दंभ, तुष्टि संवाहन,
राजनीति के बने निशान।

शांति, संपदा, सुख लाने का
रामराज्य ही इक है निदान।
रामायण का रघुवंशी ही
राम हमारा है संविधान।

राम राज्य की कामना है

नीलम त्रिवेदी
कानपुर, भारत

भारत के हर जन के मन में राम राज्य की आशा है।
क्या संभव है राम राज्य जो सबके मन अभिलाषा है।

यदि कामना है राम राज्य,
राष्ट्रीय एकता एव अखंडता,
तो धारण करने होंगे श्री राम समान ये षोडश गुण-
राम राज्य जो सत्य, प्रेम, करुणा, शुचिता, वाकपटुता का राज्य,
राम राज्य त्याग, तेजस्विता, दक्षता, स्मृति, ज्ञान, कला का राज्य,
राम राज्य जो दृढ़ता, मान, शूरता, स्थिरता, युवा का राज्य।

दिव्यादिव्य नायक की महिमा को जानो,
षोडश गुणों की मर्यादा को पहचानो,
जन जन के आराध्य राम की न्यायप्रियता को मानो।

राम राज्य यदि लाना है तो,
तममय पथ पर दीप जलाना होगा,
दीनों के कष्ट मिटाना होगा,
अन्त्योदय का भाव जगाना होगा।

राम राज्य भारत के सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना है|
विश्वगुरु बन कर पुन: छा जाने की उत्कृष्ट कामना है।

फिर आज तुम्हारा अभिनंदन

सरोज सिंह 'सूरज'
सतना, भारत

हे सूर्यवंश के प्रखर सूर्य! कौशलाधीश हे रघुनंदन!
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

तुम नारायण धर मनुज रूप त्रेता युग में अवतार लिया।
तब भी निज माता ने तुमको दशरथनंदन वनवास दिया।
जीवन भर कष्ट सहे झेला चौदह वर्षों का निर्वासन।
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

वन-वन भटके ऋषि-मुनियों के हित असुरों का संहार किया।
निशिचर विहीन कर के महि को, इस धरती का उद्धार किया।
जब रामराज्य आया जग में जग भूल गया करुणा-क्रंदन।
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

सिय का वियोग झेला तुमने जीवन भर कितने कष्ट सहे।
विधि का विधान या दैवयोग हे राम कभी सुख से न रहे।
थे अवधपुरी के राजकुँवर पाया वनवासी का जीवन।
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

है धन्य अयोध्या नगरी तुमने जिस धरती पर जन्म लिया।
दुर्भाग्य किंतु इस युग में भी फिर निर्वासन का गरल पिया।
हे जन-जन के नायक! पुकारता है तुमको फिर राजभवन।
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

हे कण-कण में बसने वाले! सिय-राम हृदय में वास करो।
कौशलाधीश निज मंदिर में फिर सीता सहित निवास करो।
फिर रामजानकी के पग से हो अवधपुरी की रज चंदन।
फिर आज तुम्हारा स्वागत है, फिर आज तुम्हारा अभिनंदन।

राम तो राम ही है

मो. अम्जद अली
जेद्दा. सऊदी अरबिया

राम तो राम ही है
राम के क्या कहने!
जीवन की राह में, आदर्श हो चले
दिल-दुनिया सब साथ ले चले।

वन में चरन, पत्थर पे जब लगे
अहिल्या स्त्री बन, जीवित हो उठे।
इस युग के स्त्री पर बरसे जब पत्थर
दर-दर ठोकर खाए और भटके।

राम ही जाने! राम कब आये
बिगड़ी डोर देश की संभाले!
फिर से रावण जले गली गली के
फिर से घर-घर दीप जले।

पीछे पीछे राम के हम चले
हमारे पीछे बस सियासत न चले।
रामराज्य न आए तो क्या
बस, दुनिया में हमारा ही नाम चले!

मानस महिमा

सुशील शर्मा
गाडरवारा(म.प्र.), भारत

पंद्रह सौ चौवन रहे, ब्राह्मण कुल आत्मज्ञ।
श्रावण सप्तम शुक्ल को, जन्मा ये मर्मज्ञ।

रामचरित मानस बसे, धर्म आचरण छोर।
नहीं जीवनी राम की, है आत्मा की डोर।

आचारों की संहिता, मानव मन का प्रेम।
मानस में मिलता हमें, ज्ञान भक्ति दृढ़ नेम।

संबंधों का पालना, कर्तव्यों की आन।
उन्नत मानवता रहे, मानस यज्ञ बखान।

भक्ति ज्ञान वैराग्य में, नैतिक धर्मादेश।
पातिव्रत्य आदर्श का, शुभ मंगल सन्देश।

नीति रीति व्यवहार का, मानस में उपदेश।
राजधर्म अरु त्याग का, शिव सुंदर सन्देश।

सभी धर्म सब वर्ग का, मानस में सम्मान।
रामचरित मानस सदा, शिव सत्यम आख्यान।

रामचरित मानस

चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'
जबलपुर, भारत

रामचरित मानस कथा आकर्षक वृत्तांत,
जिसके पावन पाठ से होता है मन शांत।

शब्द भाव अभिव्यक्ति पर रख पूरा अधिकार,
तुलसी ने जिसमें भरा है जीवन का सार।

श्रव्यचरित श्री राम का मर्यादित व्यवहार,
पढ़े और समझे मनुज तो सुखमय संसार।

कहीं न ऐसा कोई भी जिसे नहीं प्रिय राम,
निशाचरों ने भी उन्हें मन में किया प्रणाम।

दिया राम ने विश्व को वह जीवन आदर्श,
करके जिसका अनुकरण मन पाता अति हर्ष।

देता निश्छल नेह ही हर मन को मुस्कान,
धरती पर प्रचलित यही शाश्वत सहज विधान।

लोभ द्वेष छल नीचता काम क्रोध तकरार,
शत्रु वे, जिनसे मिटे जग में कई परिवार।

सदाचार संजीवनी है समाज का प्राण,
सत्य त्याग तप प्रेम से मिलते हैं भगवान।

भक्ति सदा भगवान की देती है आनंद,
निर्मल मन जो रहो तो बसें सच्चिदानंद।

युग का विराम

भद्रेश झा ‘भद्र’
बाँसवाड़ा, भारत

तरकशों में अब वह बाण ही कहाँ है,
इस कलि में राम और परशुराम कहाँ है,
खो रही संस्कृति दिन-दिन मद में अपने,
समझ नहीं इस युग का विराम कहाँ है।

रामायण का पाठ अध्ययन होना चाहिए,
संस्कारों के बीज बालक में बोना चाहिए,
रामराज्य की पुनः कल्पना कर सकते,
मनका हर माला में ऐसा पिरोना चाहिए।

माँ का वात्सल्य, पिता प्रेम रामायण है,
भाई-भाई का, त्याग देखो रामायण है,
अनमोल ज्ञान है मर्यादा पुरुषोत्तम का,
घोर कलियुग में, आदर्श ग्रन्थ रामायण है।

तुलसी तुमको नमन

महेश चंद्र द्विवेदी
लखनऊ, भारत

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन;
तुमने हमारे राम पर था महान उपकार किया,
उन्हें भारतभूमि से चिर वनवास से बचा लिया।

संस्कृत विस्मृत थी, संस्कृति विस्मृत थी,
पराजित व पराश्रित हो चुका था भारत,
मनोबल पस्त था, आक्रामक आश्वस्त था,
पददलित राष्ट्र का जन-जन था आरत।

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन;
छिन्न-भिन्न राष्ट्र में राम-नाम का शंखनाद किया,
राम को इस देश से अनंत वनवास से बचा लिया।

जन-जीवन त्रस्त था, ज्ञानसूर्य अस्त था,
रौंदी, कुचली जा रही थी आर्यावर्त की सभ्यता,
बहेलिये के तीर से घायल स्वयं कृष्ण हों,
ऐसे मे भला द्रौपदी का चीरहरण कौन रोकता?

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन;
संस्कृति का चीरहरण कृष्ण बन बचा लिया,
राम को इस देश से आप्रवास से बचा लिया।

प्रलयंकारी शंकर का सोमनाथ धूल-धूसरित था,
उनके काशी-निवास में अरबी ईश्वर थे स्थापित,
अयोध्या के राम पुनः कंदरा-गुफा में भटकते थे,
आयातित ईश्वर ने उन्हें कर दिया था निर्वासित।

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन;
रामचरितमानस रचकर राम को घर-घर बिठा दिया,
सीता व राम को आजीवन वनवास से बचा लिया।

दिग्विहीन, भ्रमितबुद्धि, विक्षिप्त था राष्ट्र महान,
जब जीना दुष्कर था, कैसे रहता आदर्शों का भान?
धर्मनिष्ठा, एकता, प्रेम, त्याग और राष्ट्राभिमान,
जन-मन से बिसार, धर्मच्युत हो रहा था हिंदुस्तान।

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन;
तुमने राम के चरित को मनमानस में बसा दिया,
हमें उनके वनवास के अभिशाप से बचा लिया।

तुलसी तुमको नमन,
अर्पित श्रद्धा सुमन।

मानस सम जीवन

करुणा पांडे

लखनऊ, भारत

रस छंद अलंकार से भासित, काव्य अंग से भूषित होकर।
राम चरित मानस सा जीवन, चाहा था छोटा तृप्ति भर।।
जिह्वा हो जाए नव रस सी, पौर-पौर चौपाई सी।
राम नाम का ध्यान करूँ मैं, प्रेम मगन बौराई सी।।

हों चरित्र ज्यों सीता रानी, सार-सार दोहे सी वाणी।
सोरठे जैसी हो रवानी, छंद युक्त अंतस कहानी।।
काया मेरी छंदों से सुरभित, जैसे महाकाव्य लिखा हो।
हृदय भाव श्लोक जैसा हो, मानो ज्ञान का कोष भरा हो।।

पावों में पायल की छम-छम, देवालय में नृत्य किया हो।
मेंहदी भरे हाथ यूँ शोभित, तुलसी दल को थाम लिया हो।।
शांत स्निग्ध मूल्यों का पानी, राज-काज पोषित कहानी।
सम समाज इसकी जिंदगानी, विश्व ग्रन्थ की महिमा मानी।।

सीता ने मर्यादा तोड़कर, लक्ष्मण ने अनुबन्ध छोड़कर।
रावण ने जब धर्म ओढ़कर, थाम लिया कर द्वन्द मोड़कर।।
रचा गया तब युद्ध भयानक, राम बने उस युद्ध के नायक।
मेघनाथ, रावण, मारीच, बने सभी रण में खलनायक।।

मंदोदरी आँसू की गागर, करुणा का था उसमें सागर।
उसके अश्रु से सिंचित था, मन भावों का आखर-आखर।।
माँ सीता की विरह वेदना, रावण अगर समझ लेता।
मंदोदरी की हृदय व्यथा, को वह अनुभव कर लेता।।

सीता माता सौंप राम को, कृत्य महान वह कर लेता।
जब-जब महिमा राम की होती, रावण को जग आदर देता।।
गर पापी का अहँकार, थोड़ा सा भी झुक जाता।
एक नज़ीर बन जाता रावण, राम रावण युद्ध टल जाता।।

पर होनी को क्या रोक सके हैं, ईश हृदय को भेद सके हैं।
ज्ञान, ध्यान तप त्याग भाव से, क्या भवितव्यता मोड़ सके हैं।।
होनी तो होकर रहती है, हर क्षण का लेखा रखती है।
पर सत्कर्मों की नैया से, कलुष पापों को धोती है।।

मानस जीना हमें सिखाती, प्रेम भाव मन में उपजाती।
आदर्शों की है यह धाती, राम ज्ञान मर्यादा साथी।।
ऐसी मानस अपना कर तुम, जीवन धन्य बना लेना।
राम नाम है पतित पावन, जीवन में अपना लेना।।

तुलसी महिमा

श्याम सुन्दर पंचोली
वड़ोदरा, भारत

लोक भाषा में रामायण गाई तुलसी ने जब, जन-जन के मानस तक राम-गाथा पहुँचायी है।
मधुर सरल अति दोहा छंद सोरठा, भक्ति भाव पूर्ण मन मोहक चौपाई है।
वेद संस्कृति का ह्रास होने लगा जहाँ-तहाँ, जनेऊ छोड़ चोटि जब सबने मुड़ायी है।
सोलहवीं सदी में कठिन जतन कर, अविरल सरित राम रस की बहायी है।
मलेच्छों की तूती जब बोलती थी देश में, बाबा तुलसी ने ध्वजा धर्म की फहरायी है।
राणा की तलवार ने ललकारा था अकबर को, तब लेखनी से अपनी राम अलख जगायीहै।
गरुड़ को काकभुशुण्डि जो बताने लगे, पारवती को वही कथा शिव ने सुनायी है।

दशरथ के नौनिहाल बन नाचे है ठुमक जो, कौशल्या को लाल सारे जग को गोसाईं है।
चारिहु भाई संग आश्रम में गुरु के, नीति, शास्त्र, वेद, की गूढ़ शिक्षा पायी है।
कौशिक लिये चले राम को सौमित्र संग, राक्षसों से मख की रक्षा करायी है।
अहिल्या का ताप हर, शिव धनु भंग कर, जनक-लली संग ब्याह रचायी है।
पितृ वचन काजे छोड़े सब राज-काज, चौदह बरस पूरे वन में बितायी हैं।
केवट से प्रेम-भाव, निषाद को मित्रता, ऋषिगण तप-फल दर्शन लाभ पायी है।

सूपनखा के दम्भ और मारीच के छल-बल, रावण ने साधु बन सीता चुरायी है।
जटायु को तार प्रभु, शबरीको नवधा दीन्हि, बालि-वध कर, सुग्रीव राजा बनायी हैं।
सिया खोजी लंक-दहन करि मारुती, रामजी को चूड़ामणि आन दिखायी है।
रावण-दल संहार विभीषण को राज दीन्हों, माता सीता लखन संग अवध लौटआयी हैं।
भरत जी राह देखत रघुनाथ की, आते ही स्वागत कर पुनि राजपाट सम्भलायी है।
"श्याम" को सुमति दीन्ह गुरु हनुमत, सो दास ने तुलसी-बाबा की महिमा गायी है।

My Search of Divinity

Rajesh Kumar Mishra
Mumbai, India

I listened a lot about divinity,
How beautiful life it makes,
Its power to bring world unity,
Love & kindness what it takes.

I kept searching it from childhood,
To see it, to feel it, to establish in it,
I was shown many paths in adulthood,
Guiding differently to merge with it.

My search continued with faith & courage,
Till I found holy Sri "Ram Charit Manas",
Describing life of Lord Ram & Mata Sita,
Depicting divinity is every step & stage.

Miraculously, at once, my struggle ended,
When in 'Divine abode of Ramlila' I landed,
Flowering divinity in Ram Katha, at each stage,
Seeing it, feeling it, establishing in it page by page.

May Sri "Ram CharitManas"'s holy messages,
Mercifully spread across world and bring unity,
May Lord Ram & Mata Sita's life and sacrifices,
inspires & bless each life to blossom with divinity.

तुलसी मानस महिमा

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

होते नहीं तुलसी यदि, कैसे राम को मैं जानता।
सम्मुख प्रकट होते प्रभु, फिर भी नहीं पहचानता।।

मंथन वेदों का किया, मानस मणि जग को दिया।
तुलसी कृपा से प्रभु मिले, अर्धांगिनी जिनकी सिया।।

मानस नहीं पुस्तक कोई, मंत्र शक्ति हर शब्द है।
पढ़ता इसे है वह गुणी, जिसके लिखा प्रारब्ध है।।

'ओम' चरणों में पड़ा, प्रभु भक्ति मुझको दीजिए।
तुलसी-पथ पर चल पड़ूँ, कृपा मुझ पर कीजिए।।

कवि सूची

अंजू अग्रवाल 'लखनवी'	67
अनिता सिंह	150
अनिल शर्मा 'जोशी'	56
अनुपमा गुप्ता	178
अन्विक्षा श्रीवास्तव	160
अभिनव शुक्ल	86, 157
अमित अवस्थी	14, 166
अमिता दुबे	141
अमृत खरे	112
अलका धनपत	50
अलका प्रमोद	36, 124, 136
अशोक अंजुम	106
आरती 'लोकेश'	2, 137, 138
आराधना झा श्रीवास्तव	71, 128
आलोक मिश्रा	94
आशा अमित नशीने	78
आशा बर्मन	154
आशा मोर	144
इंदल सिंह भदौरिया	35
उषा अवस्थी	180
ओमप्रकाश गुप्ता	54, 194
कंचन पाठक	40
कमल किशोर सेठ	88
करुणा पांडे	48, 190
काजरी गुहा	139
कृष्णा जैमिनी	179
कौशल किशोर श्रीवास्तव	20
गजेन्द्र प्रसाद पण्ड्या	130
गिरीश्वर मिश्र	30
गौरीशंकर वैश्य विनम्र	176
चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'	186
चित्रा गुप्ता	132
चोवा राम वर्मा 'बादल'	84
जूही वैष्णव	169
ताराचन्द 'नादान'	21
दिव्या माथुर	58
दीपा रस्तोगी 'दीप'	8
नरेंद्र शर्मा 'कुसुम'	45
नरेश शांडिल्य	18, 168
निधि जैन	122
नीलम तोलानी	43
नीलम त्रिवेदी	182
नीलू गुप्ता	83
नूपुर अशोक	38
प्रतिभा पुरोहित	73
प्रतिभा सक्सेना	34, 116
प्रभुदयाल मिश्र	167
प्रियंका पारो मोहन	134
बशीर अहमद मयूख	110
ब्रजेश कुमार सिंह 'विशाल'	27
भद्रेश झा "भद्र"	187
मंगलेश मुजमेर 'मंगल'	107
मधु शर्मा	114
मधु चतुर्वेदी	68, 74
मनजीत कौर 'मीत'	98
मनीषा कंठालिया	146
महेश चंद्र द्विवेदी	188
मीनाक्षी मैनन	103
मीरा रामनिवास वर्मा	61
मीरा सिंह	22

मृणाल शर्मा 173
मृदुला सिन्हा 37
मो. अम्जद अली 184
मोती प्रसाद साहू 158
यूरी बोत्वींकिन 60
रविन्द्र कुमार धींग 108
रवीन्द्र कुमार दीक्षित 105
रश्मिशील 149
राकेश कुमार चौबे 62
राकेश खंडेलवाल 10, 15
राजेन्द्र सूरज 159
राजेश कुमार मिश्रा 193
राम नरेश 'उज्ज्वल' 174
रुचि श्रीवास्तव 26, 133
रेखा मैत्र 70
रेखा राजवंशी 46, 135
रेणु चन्द्रा माथुर 72
लक्ष्मी नारायण गुप्त 181
वंदना मुकेश 97
विजयानन्द (बिजेन्द्र प्रताप तिवारी) 80
विनीता मिश्रा 13, 155, 165
विश्वास दुबे 66, 175
वीणा अग्रवाल 23
वेद व्यथित 82
शकुन्तला बहादुर 172
शशि जैन 147
शशि पाधा 151
शार्दुला नोगजा 102
शिखा सक्सेना 63, 148
शिवप्रभाकर ओझा 25
शील रानी निगम 6
शीला पांडे 44
शुचि 'भवि' 104
शैल अग्रवाल 89, 120
शैलजा सक्सेना 4
श्याम सुन्दर पंचोली 19, 192
संगीता अग्रवाल 100
संतोष कुमार सिंह 16
सतीश चतुर्वेदी ‘शाकुन्तल’ 142
सन्तोष भाऊवाला 87
सन्ध्या नायर 117
सरस्वती मल्लिक 24, 131
सरोज अग्रवाल 164
सरोज सिंह 'सूरज' 119, 183
सरोजिनी अग्रवाल 42
सरोजिनी नौटियाल 92, 96
सी. कामेश्वरी 17
सुजाता प्रसाद 85
सुधा चौहान 'राज' 11
सुप्रभा गुप्ता 32
सुभाष शर्मा 53
सुरेश राय 12
सुरेश शर्मा "कांत" 162
सुशील कुमार ‘लखनवी’ 47
सुशील शर्मा 76, 185
सुषमा "सौम्या " 153
सुषमा नैय्यर 118
सोमनाथ डनायक 59
सौरभ 65, 126
स्वरांगी साने 156
हरिहर झा 33, 113, 127
हरीबाबू बिंदल 64
हर्षवर्धन आर्य 52

राम काव्य पीयूष

प्रभु श्री राम, रामायण के अन्य पात्रों व विविध प्रसंगों पर आधारित 151 कविताओं का संग्रह है – राम काव्य पीयूष। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो रामायण के नाम से विश्व का आदिकाव्य बना। रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत कवियों ने अपनी-अपनी मति अनुसार राम कथा का वर्णन किया है। राम काव्य पीयूष विश्व के 13 देशों (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, केन्या, भारत, मारीशस, नीदरलैंड, साऊदी अरेबिया, सिंगापुर, ट्रीनिदाद, यू.के., यू.ए.ई., यूक्रेन और यू.एस.ए.) में बसे 123 कवियों द्वारा राम कथा के वर्णन का एक छोटा-सा प्रयास है। इस संग्रह की 54 कविताएँ भारत से बाहर, विदेशों में बसे रामायण प्रेमियों द्वारा लिखी गईं हैं। इससे यह तो अवश्य सिद्ध होता है कि राम और रामायण भारत के ही नहीं अपितु विश्वव्यापी हैं।

इन कविताओं के चयन और संकलन की प्रक्रिया में जिस श्रद्धा, भक्ति तथा आनंद के भाव से हम गुजरे हैं, आशा है कि वही भाव पुस्तक पढ़ने के बाद पाठकों में भी स्पंदित होंगे। राम काव्य पीयूष को आपके हाथ में सौंपते हुए अपार हर्ष की अनुभूति के साथ हम आशा करते हैं कि सुधीगण अपने विचारों से हमें अवगत कराएँगे।

US $10.00

ISBN 978-1-7362088-0-9

9 781736 208809